# प्रस्तावना

श्री पं० बचानप्रसाद जी त्रिपाठी रमलाचार्य का शुभ जन्म सम्बत १९४४ फाल्गुन शुक्ल १२ कोमहोतेपुर ग्राम तहसील सिधौली प्रान्त सीतापूर में हुआ। अध्ययन समाप्त करके आप डिस्ट्रिक्टबोर्ड में अध्यापक हो गये, और पुनः आपका अधिकांश समय पेन्शन पर्यन्त कसमंडा में ही व्यतीत हुआ। पेन्शन के उपरान्त जनता ने इनको कसमंडा में ही रहने को विवश किया, ऐसे भक्त श्रेष्ठ को कौन खोना चाहेगा :

रमल शास्त्र तथा अन्य चमत्कार युक्त मन्त्र-तन्त्र पंडित जी के वंश में परम्परा से चले आ रहे हैं, परन्तु इन बातों को हमारे पंडित जी ने वैज्ञानिक रूप देकर समयानुकूल कर दिया तथा जन साधारण की सेवा में तत्पर हो गये। पंडितजी को बाल्यकाल से ही इन बातों में बड़ी लगन थी और फलतः आज यह दिन देखने को मिला। विश्वविख्यात "चिंता हरण यंत्री" आप ही की कृति है—कसमंडा नरेश की आपके प्रति सदैव अनन्य प्रेम व विशेष कृपा रही है और चिंता हरण यंत्री उन्हीं की संरक्षकता में प्रकाशित होती रही। यंत्री की उपयोगिता पाठकों से छिपी नहीं है। प्रस्तुत पुस्तक अपने ढंग की अनूठी रचना है। पंडितजी ने इस पुस्तक को लिख कर इस विज्ञान का पुनरुद्धार किया है। प्रथम तो ऐसे गहन विषयों पर पुस्तकों का सर्वथा अभाव है ही और यदि कोई पुस्तक प्राप्त हुई भी तो उसका समझना और उससे लाभ उठाना जन साधारण के लिये अति कठिन था। पंडितजी का कहना है कि किसी विद्या या विज्ञान को गुप्त रखना पाप है। इसी ध्येय को समक्ष रखकर पंडित जी ने प्रस्तुत पुस्तक की रचना की है।

मुझे स्वयं कभी भी भविष्य वक्तृता पर विश्वास न था, किन्तु पंडितजी ने मुझे विश्वास करने पर विवश कर दिया—मैंने स्वयं अपने अधिकांश प्रश्नों के उत्तर सत्य पाया-मेरे बहुत से मित्रों ने भी जो कि बहुत बड़े बड़े राजकीय पदों पर नियुक्त हैं पंडितजी से समय-समय पर प्रश्न किये और उनको सत्य पाकर आश्चर्य चकित हो गये। मेरा अपना विचार है कि पंडितजी की असीम ईश्वर भक्ति, सच्चरित्रता. सत्यनिष्ठा तथा उनका प्राकृतिक भोलापन ही इनकी सिद्धि का कारण है—मेरा बहुत दिनों से अनुरोध था कि पंडितजी रमल शास्त्र पर साधारण भाषा में कोई पुस्तक लिखें, अतः आप अपने अनुरोध की पूर्ति देख कर मुझे असीम आनन्द है, आशा है कि यह पुस्तक जन साधारण के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी और यंत्री चिंताहरण की भाँति विश्वप्रिय होगी-मेरी शुभ कामनाएं सदैव पंडितजी के साथ हैं।

मंत्र भवन पैलेस
कमलापूर
दिनांक २५–५–५०

सूर्य्यनारायण सक्सेना बी. ए.
मैनेजर कसमण्डा राज्य (अवध)

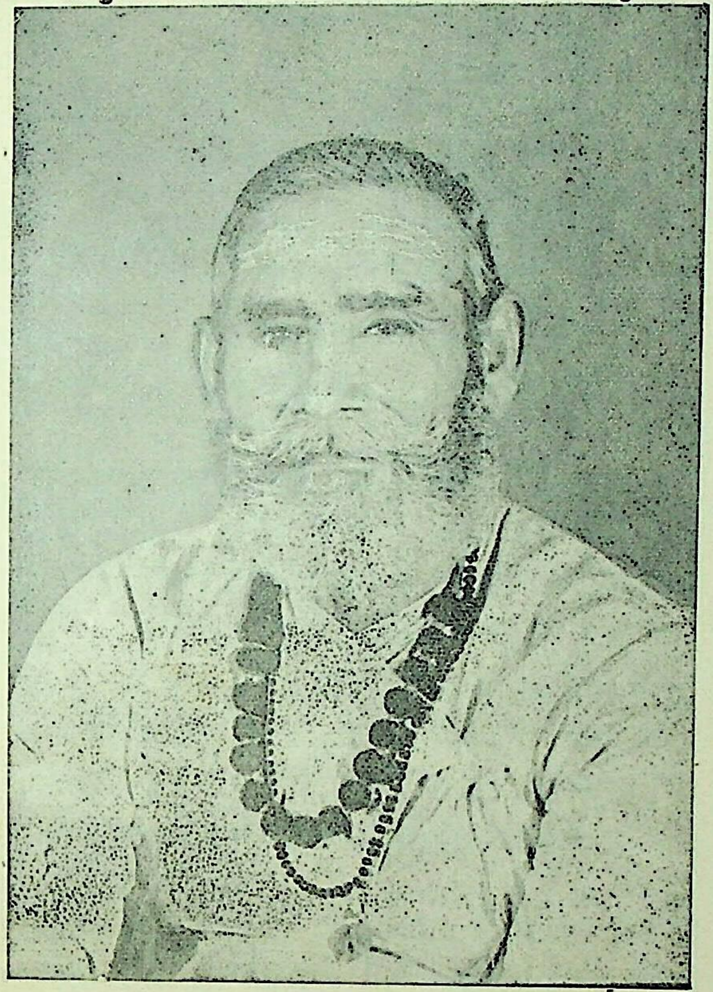

रमल सम्राट् पं० वचानप्रसाद त्रिपाठी ।

# समर्पण

सेवा में—

गुरुदेव भगवान् श्री श्री १०८ स्वामी

**श्री नारदानन्द जी**

सरस्वती महाराज के कर कमलों में

मेरे मन के अन्धकार में तुमने ज्ञान प्रदीप जलाया ।
नवल चेतना से पुलकित है मेरा अन्तर मेरी काया ।।
सुधा सिक्त रखती है जीवन को प्रभु, तव करुणा की धारा ।
मुक्त प्राण कर दिये खोलकर दृढ़तर यह जड़ता की कारा ।।
देव आपकी पुण्य प्रेरणा ही यह कृति बनकर है आई ।
क्षमा करें है वस्तु आपकी ही, जो मैंने भेंट चढ़ाई ।।
रमलशास्त्र के वर्ण वर्ण में खुली आपकी ही वाणी ।
रमल दीपिका में दीपित है ज्योति आपकी ही कल्याणी ।।

विनीत—

रमलाचार्य्य ।

# सूचना

सज्जनों !

रमल शास्त्र का प्रथम भाग छपकर आपके सामने प्रस्तुत है। इस पुस्तक के सुधार में हमको काफी समय लग गया—सहस्रों आडर पुस्तक छपने के पूर्व ही रिजर्व हो गये--कारण यही हुआ। नवीन ढंग से आदि से अन्त तक प्रत्येक भाँति से सुधार का ध्यान रक्खा गया—इसी कारण हमारे ग्राहकों को काफी प्रतीक्षा करनी पड़ी।

इस शास्त्र के विद्धज्जन महानुभावों से प्रार्थना है कि यदि इस पुस्तक में किसी स्थान पर त्रुटि पायें-तो कृपया हमको सूचित अवश्य करें। हम धन्यवाद पूर्वक आपकी इस कृपा के आभारी होंगे तथा दूसरे संस्करण में उसका सुधार कर देंगे।

यह अपूर्व अनोखा ग्रन्थ सचमुच हमारे भारतवर्ष में एक प्रकार से लुप्त सा हो गया था, मगर काशी विश्वनाथजी की कृपा से पं० कैलाशनाथजी भार्गव 'अमर' भार्गवपुस्तकालय, गायघाट, काशी की विशेष कृपा से आज इस अपूर्व विद्या का पुनः नवीन जीर्णोद्धार हुआ है। आज भारतवर्ष में पुनः इस गुप्त विद्या की खोज होकर नवीन शैली रूप में सुचारु रूप से छपकर आप लोगों के सन्मुख प्रस्तुत है।

भवदीय—

**बचानप्रसाद त्रिपाठी**

तांत्रिक रमलाचार्य

कसमण्डा राज्य सीतापुर।

# रमलशास्त्र अर्थात् रमल प्रदीपिका

की

# विषयानुक्रमणिका

| विषय | पृष्ठ | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| मंगलाचरण | १ | तत्व विभाम संज्ञस शक्लें | २४ |
| संक्षिप्त परिचय | ३ | राशि संज्ञक शक्लें | २५-२६ |
| रमल नियम | ४ | शक्लानां गुणवर्णादि | २६-२९ |
| पाँसा फेकने का समय | ५ | प्रश्न कथन प्रकार | २९-३१ |
| रमलज्ञ को शिक्षा | ७ | प्रस्तार परिवर्तन की नीति | ३२ |
| पाँसा क्या है | ७ | प्रस्तार में स्थानों की संज्ञा | ३३ |
| पाँसा वनाने का समय | ८ | चारों तत्वों की संज्ञा | ३३ |
| प्रस्तार बनाने की विधि | ९-१२ | जायचा में शुभ-अशुभ घरों का विवरण | ३४ |
| प्रस्तार बनाने को दूसरी विधि | १२-१४ | साक्षी करण | ३४ |
| प्रस्तार वनाने की तीसरी विधि | १४-१६ | साक्षी कर्म देखने की रीति | ३४ |
| शकुन तथा अवदह पंक्ति | १६-२० | सप्तपंक्तिके स्थापनके प्रकार | ३५ |
| विजदह चक्र | २०-२३ | प्रश्नोत्तर निकालने की रीति | ३५-३९ |
| शक्लों की संज्ञा | २४ | सिद्धा-असिद्धि के उदाहरण | ३९-४० |

## प्रथम घर के प्रश्नों का विवरण

विषय पृष्ठ

यदि कोई पूँछे मेरी उम्र कितनी बाकी है और जीवन दुःख से बीतेगा या सुख से ४०

यदि कोई पूँछे कि मेरा भाग्य आजकल कैसा है ”

यदि कोई पूँछे कार्य्य आरम्भ कर रहे हैं परिणाम क्या होगा ४२

यदि कोई पूँछे आजकल हमारे ऊपर कौन ग्रह खराब चल रहा है ४३

यदि कोई पूँछे मेरा भाग्योदय कब होगा ४४

## दूसरे घर के प्रश्नों का विवरण

यदि कोई पूँछे मुझे माल मिलेगा या जीविका प्राप्त होगी या नहीं ४४

मुझको व्यापार करने से लाभ होगा या नहीं ४६

मैं अमुक व्यक्ति से कर्जा लेना चाहता हूँ मिलेगा या नहीं ४६

व्यापार या तिजारत करने का परिणाम क्या होगा ४७

खरीदने तथा बेचने माल के प्रति किस प्रकार देखना चाहिये ४७

यदि कोई पूँछे अमुक व्यक्ति धनवान है या निर्धन ४८

मेरा नौकर ईमानदारी से काम करेगा कि नहीं ४८

यदि कोई पूँछे अमुक व्यक्ति के साथ मिलकर व्यापारमें लाभ होगा कि नहीं ४९

यदि कोई पूँछे अमुक व्यक्ति बाहर गया है कब आवेगा ४९

यदि कोई पूँछे आज बादल हो रहा है वर्षा होगी या नहीं ५०

यदि कोई पूँछे कि मैं भोजन करके आया हूँ या भूखे पेट आया हूँ ५१

यदि कोई पूँछे कि मेरे पास धन रुकेगा या नहीं ५२

यदि कोई पूँछे रोगी को किस प्रकार की दवा दी जाय जिससे लाभ हो ५३

यदि कोई पूँछे मेरा पशु खो गया है मिलेगा या नहीं ५३

यदि कोई पूँछे कि अमुक व्यक्ति के पास कुछ धरोहर रक्खा है बेईमानी तो न करेगा ५४

विषय पृष्ठ

मेरी अमुक वस्तु चोर ले गया है या मैं स्वयं कहीं भूल गया हूँ ५४
खोया हुआ माल मिलेगा या नहीं ,,

## तीसरे घर से प्रश्नोत्तर निकालने की रीति

यदि कोई पूछे मेरे घर बहनें अधिक हैं या भाई अधिक हैं ५५
मेरे कितने भाई अथवा बहनें हैं ५५
यदि कोई पूँछे यात्रा करना चाहता हूँ होगी या नहीं ५६
निकट यात्रा से लाभ होगा या नहीं ५७
अमुक व्यक्ति से शास्त्रार्थ करना चाहता हूँ कौन विजयी होगा ५७
मुझे विद्या प्राप्त होगी या नहीं ५७
अमुक बालक को पाठशाला भेजना चाहता हूँ पढ़ेगा या नहीं ५७
मैं अमुक स्थान से आ रहा हूँ मार्ग में मेरी दशा क्या गुज़री ५८
मेरा भाई मुझसे प्रेम करता है या नहीं ५८
मैं अपने मित्र के साथ आदमी भेजता हूँ वह घर में है या नहीं ५९
वादी व प्रतिवादी में किसकी जीत होगी ५९
अमुक व्यक्ति विद्वान है या खाली ढकोसला बनाये हैं ६०
मेरे स्वप्न का फल कैसा है ६१

## चौथे घर के प्रश्नोत्तर

यदि कोई पूँछे मेरे मकान की दशा कैसी है ६१
अमुक व्यक्ति घर में है या नहीं ६२
मुझको इसी स्थान पर लाभ होगा या अन्य स्थान पर जाने से लाभ होगा ६२
क्या पिताजी मुझ पर प्रसन्न रहेंगे उनसे लाभ होगा ६३
मुझको खेती करने से लाभ होगा या नहीं ६४
मैं एक मकान अथवा ज़मीन खरीदना चाहता हूँ लाभ रहेगा या नहीं ६४

| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| यदि कोई पूँछे मैं अपनी ज़मीन किसी पट्टा पर दे रहा हूँ परिणाम क्या होगा | ६५ |
| अमुक स्थान पर धन गड़ा है मिलेगा या नहीं | ६६ |

## खाना पाँच के प्रश्नोत्तर

| | |
|---|---|
| मेरे भाग्य में पुत्र होना लिखा है कि नहीं | ७१ |
| यदि कोई पूँछे मेरे पुत्र की आयु कितनी है | ७२ |
| सन्तान न होने में दोष पुरुष में है या स्त्री में | ७४ |
| इस पुत्र अथवा कन्या को माता का दूध पिलाने में हितकर होगा या नहीं | ७४ |
| यह पुत्र भाग्यशाली होगा या अभागा होगा | ७४ |
| इस पुत्र से माता पिता को सुख होगा या नहीं | ७५ |
| अमुक स्त्री के गर्भ है या नहीं, है तो कितने मास का, गर्भ में पुत्र होगा या कन्या | ७६ |
| यदि कोई पूँछे प्रसव सरलता पूर्वक होगा कष्ट पूर्वक | ७७ |
| प्रसव दिन में होगा या रात को, किस समय अथवा किस काल में बच्चा पैदा होगा | ७७ |
| यदि कोई पूँछे आज हमारे यहाँ मेहमान आवेगा या नहीं | ७८ |
| मैं शिकार खेलने जाता हूँ शिकार मिलेगा या नहीं | ७६ |
| लाटरी, सट्टा आदि में जीत होगी या हार | ८० |
| मैं परीक्षा में पास हूँगा या नहीं | ८१ |
| अमुक व्यक्ति से इनाम मिलेगा या नहीं | ८१ |
| अमुक स्थान से पत्रादि आवेगा या नहीं | ८२ |
| यह खबर सच्ची है या झूठ | ८२ |
| यह लिफाफा ( पत्र ) जो डाक द्वारा आया है इसमें खबर कैसी है | ८३ |
| मेरा प्रेमी मुझसे मित्र रूप मानता है अथवा शत्रु रूप | ८३ |
| मेरा प्रेमी इच्छानुसार प्राप्त होगा या नहीं | ८४ |
| अमुक पुरुष ने अमुक स्त्री के साथ दुर्व्यवहार किया हैं या नहीं | ८५ |

| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| यदि कोई पूँछे आज हमने विषय भोग किया है या नहीं | ८५ |
| यदि कोई पूँछे आज विषय भोग की नौबत होगी या नहीं | ८६ |
| मेरे शरीर में ज़ख्म या तिल किस किस स्थान पर है | ८६ |
| अमुक आदमी को चेला बनाता हूँ कैसा है | ८६ |

## खाना ६ के प्रश्नोत्तर

| | |
|---|---|
| यदि कोई पूँछे अमुक व्यक्ति रोग से मुक्त होगा या नहीं | ८७ |
| यदि कोई पूँछे रोगी को शारीरिक रोग है बाधा | ८८ |
| यदि कोई पूँछे मेरा यह भेद छिपा रहेगा या खुल जावेगा | ८९ |
| यदि कोई पूँछे अमुक व्यक्ति चला गया है आवेगा या नहीं | ९० |
| खोई हुई वस्तु पाने की रीति | ९० |
| एक व्यक्ति भाग गया है किस तरफ गया है | ९१ |
| चोर किस तरफ गया है | ९१ |
| अमुक व्यक्ति जो चला गया है कब आवेगा | ९१ |
| भागे हुए व्यक्ति के तलाश में आदमी भेजा है वह मिलेगा या नहीं | ९३ |
| अमुक व्यक्ति खुद चला गया है या कोई फुसला कर भगा ले गया है | ९३ |
| अमुक माल चोरी गया या खो गया है | ९३ |
| अमुक जानवर खो गया है या चोरी गया | ९३ |

## खाना ७ के प्रश्नोत्तर का विवरण

| | |
|---|---|
| यदि कोई पूँछे मेरा व्याह होगा या नहीं | ९४ |
| यह विवाह शुभ होगा या कष्टदायक होगा | ९४ |
| अमुक स्त्री पतिव्रता या भ्रष्टाचरण हो गई | ९५ |
| इस स्त्री के गर्भ से सन्तान योग है या नहीं | ९५ |
| यदि कोई स्त्री अपने पति के बाबत प्रश्न करे इसका आचरण कैसा है | ९६ |
| क्या मेरा पति दूसरा विवाह करेगा या नहीं | ९६ |

| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| यदि कोई पूँछे कि मेरी स्त्री किसी अन्य व्यक्ति से सम्बन्ध रखती या नहीं | ९६ |
| पति और पत्नी में प्रेम रहेगा या नहीं | ९६ |
| अमुक व्यक्ति जीवित है या मर गया | ९७ |
| विदेशी अथवा गायब का इरादा क्या है आयेगा या नहीं | ९८ |
| यदि कोई पूँछे गायब किधर है। | ९९ |
| गायब उसी जगह पर है या अन्य स्थान पर चला गया | ९९ |
| यदि कोई भागा हुआ अथवा गायब व्यक्ति कितनी दूर पर है | १०० |
| यदि कोई पूँछे अमुक व्यक्ति अकेला है या कोई साथी भी है | १०१ |
| अमुक व्यक्ति आनेवाला है आवेगा या नहीं | १०१ |
| यदि कोई पूँछे गायब या विदेशी कितने दिनों में आवेगा | १०१ |
| अमुक व्यक्ति के साथ साझे में व्यापार करता हूँ लाभ होगा या नहीं | १०२ |
| मैं किसी पर दावा करना चाहता हूँ जीतूँगा या नहीं | १०२ |
| अमुक व्यक्ति को अपने मुकदमें में वकील करता हूँ कैसा काम करेगा | १०३ |
| मैं कुश्ती लड़ने जाता हूँ जीतूँगा या नहीं | १०३ |

## खाना ८ के प्रश्नोत्तर का विवरण

| | |
|---|---|
| मुझको किसी की तरफ से भय तो न होगा | १०४ |
| अमुक स्थान को एक वी. पी. पारसल भेजा है लेगा या नहीं | १०४ |
| खोया हुआ माल मिलेगा या नहीं | १०५ |
| यदि कोई पूँछे मृत्यु कब होगी | १०५ |
| क्या मुझको ऋण मिलेगा या नहीं | १०६ |
| अमुक व्यक्ति से कर्जा का रुपिया वसूल होगा या नहीं | १०७ |
| मुझको अमुक व्यक्ति की जायदाद मिलेगीं या नहीं | १०७ |
| अमुक मुकदमा में अमुक व्यक्ति को सजा होगी या नहीं | १०८ |

## खाना ९ के प्रश्नोत्तर के विवरण

| | |
|---|---|
| परीक्षा दिया है परिणाम क्या होगा | १०८ |

विषय पृष्ठ
मुझको सफर या यात्रा होगी या नहीं १०६
व्यापार के लिए सफर करने का विचार है लाभ होगा या नहीं १०६
किस दिशा का सफर लाभदायक होगा ११०
सफर को जाते हैं कितने दिनों में वापिस आवेंगे ११०
रात्रि को जो स्वप्न देखा है उसका फल कैसा होगा १११

## खाना १० के प्रश्नोत्तर का विवरण

यदि कोई पूँछे यह हाकिम जो आया है कब तक रहेगा इससे जनता लाभ उठावेगी या नहीं ११२
अमुक हाकिम मुझपर कृपालु होगा या नहीं ११३
यदि कोई पूँछे मेरी नौकरी लगेगी अथवा कोई व्यापार हाथ आवेगा या नहीं ११३
यदि कोई पूँछे अमुक व्यापार करेंगे लाभ होगा या नहीं ११४
मैं एक प्रार्थना पत्र दूँ या नहीं हाकिम मानेगा या नहीं ११४
मैं हाकिम से ज़ुबानी मिलना चाहता हूँ मेरी बात मानेगा या नहीं ११४
यदि कोई पूँछे माता से लाभ होगा या नहीं ११५
पानी बरसेगा या नहीं ११५

## खाना ११ के प्रश्नोत्तरों का विवरण

क्या मेरी अमुक कामना पूरी होगी या नहीं ११५
अमुक मित्र से मित्रता स्थायी रूपसे रहेगी या बीच में छूट जावेगी ११६
अमुक व्यक्ति मुझसे मित्रता रखता है या नहीं ११७
अमुक मित्र से प्रथम हमारी तरफ से झगड़ा होगा या उसकी तरफ से ११७
अमुक व्यक्ति से झगड़ा तो न होगा ११८
अमुक व्यक्ति के पास जाता हूँ काम बनेगा या नहीं ११८

विषय पृष्ठ
अमुक व्यक्ति से मेरी आशा पूरी होगी या नहीं ११९
क्या मेरी तरक्की इस वर्ष होगी १२०

## खाना १२ के प्रश्नों का विवरण

यदि कोई पूँछे मेरे कितने शत्रु हैं १२०
मेरा शत्रु मेरे प्रति हानि पहुँचावेगा या नहीं १२०
मेरा शत्रु बलवान है या निर्बल १२१
मेरे शत्रुको किसीने बहकाया है या नहीं १२१
अमुक व्यक्ति गिरफ्तार होगा या नहीं सजा होगी या छूट जावेगा १२२
अमुक व्यक्ति जो कैद हुआ है छूटेगा या नहीं १२३
यह पशु खरीदा है शुभदायक होगा कि नहीं १२३
अमुक पशु खरीदना चाहते हैं लाभदायक होगा कि नहीं १२३
यह जानवर खरीदा है इसमें कोई ऐब तो नहीं है १२४
मैं अपनी अमुक वस्तु बेचना चाहता हूँ बिक जावेगी या नहीं १२४

## चोरी के बाबत प्रश्नोत्तर

कौन चोर है १२५
जिस आदमी पर मेरा शक है वह चोर है कि नहीं ११८
इतने प्रस्तुत आदमियों ने चोर है कि नहीं १२९
कितने आदमियों ने मिलकर चोरी की है १२९
मेरी मुट्ठी में क्या है १२९
अब शक्लों की आकृति लिखते हैं १३१

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ ॐ हनुमते नमः ॥

श्रीरमलाचार्य्यकृत—

# रमल-शास्त्र
अर्थात्
# रमल प्रदीपिका

## ग्रन्थारम्भः

श्री गणेशजी महाराज को नमस्कार करते हैं जिनकी प्रसन्नता से सम्पूर्ण देवता सदैव अपने स्थानों में स्थित हो रहे हैं। लम्बोदर विघ्नविनाशी, हाथी के सदृश मुखवाले पार्वती के पुत्र को नमस्कार है—फिर रमलविद्या के आचार्य्यों को प्रणाम करके रमल-प्रदीपिका पुस्तक लिखने का साहस करते हैं। जगत जनक शंकर जी एवं परमपूज्य जगद् जननी अन्नपूर्णा माता, तथा सरस्वती देवी जी की नत मस्तक से प्रार्थना करते हैं और भिक्षा रूप में यह याचना करते हैं कि आप मेरे पवित्र हृदय मन्दिर में विराजमान होकर मेरी लेखनी में वह शक्ति प्रदान करैं कि इस गुप्त विद्या के प्रकाश करने में समर्थ हो सकूँ।

फिर हम अपने परम हितैषी श्रीपण्डित कैलाशनाथ भार्गव "अमर" जयहिन्द सम्वत् के प्रवर्तक एवं अध्यक्ष भार्गव पुस्तकालय

गायघाट काशी को बधाई देते हैं जिनकी अनुपम कृपा से यह ग्रन्थ लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

पुनः हम श्रीमान् पं० रूपनारायण जी चतुर्वेदी डिप्टी कलेक्टर साहेब सीतापुर को बधाई देते हैं। आप ही के आदेशानुसार यह अपूर्व ग्रन्थ लिखने का साहस करते हैं, आपने आग्रह पूर्वक सम्मति दिया कि शरीर क्षण भंगुर है अपने जीवन में रमल-शास्त्र की एक ऐसी पुस्तक छोड़े जाइये जिससे जनता का परम लाभ हो सके। क्योंकि यह अपूर्व विद्या लुप्त हो चुकी है, इसके ज्ञाता भारतवर्ष में इने गिने हैं। आज तक हिन्दीभाषा में ऐसी कोई पुस्तक नहीं छपी है कि जिसके द्वारा जनता अपने भूत, भविष्य, वर्तमान का हाल सुगमता पूर्वक मालूम कर सके। अस्तु.

इसके बाद हम काशी निवासी समस्त ब्रह्ममण्डली को सादर प्रणाम करके इस ग्रन्थ की रचना का श्रीगणेश करते हैं।

जनताजनार्दन के परमसेवक

**बचानप्रसाद त्रिपाठी तान्त्रिकरमलाचार्य्य,**

कसमण्डाराज्य, पो. कसमण्डा वाया

कमलापुर ( O. T. RY. )

प्रान्त सीतापुर।

# "संक्षिप्त परिचय"

मेरी जन्मभूमि ग्राम "मह्वोते पुर" तहसील सिधौली प्रान्त जिला सीतापुर है। करीब ३० वर्ष से परमोदार स्वर्गीय राजाबहादुर श्री सूर्यबख्शसिंहजी कसमण्डा राज्य अवध जिला सीतापुर में निवास करते हैं। आपके परमोदार विद्यानुरागी बुद्धिमान पुत्र श्रीमान् युवराज दिवाकर प्रकाश सिंह जी की विशेष कृपा से ही यहाँ उनके आश्रय में रहने का सौभाग्य हुआ। हमारी रचित "चिन्ता हरण जंत्री" जो इस समय सारे भारत वर्ष में विख्यात होकर जनता की दृष्टि में रुचिकर प्रतीत हो चुकी है। इस जंत्री के संरक्षक आप ही थे, आप ही की असीम कृपा द्वारा इसका उद्‌घाटन हुआ था। दिवाकर जैसा नाम था उसी प्रकार इस जंत्री का प्रकाश दिवाकर ( सूर्य ) सदृश भूमण्डल पर प्रकाशित हो गया।

यह रमलशास्त्र हमारे पूर्वजों के समय से हमारे वंश में चला आ रहा है। मुझको बाल्य काल ही से इस विद्या के सीखने का चाव था। निरन्तर जिस काम में जी जान से लगे रहें उसमें किसी न किसी समय सफलता प्राप्त ही होती है—इसी अभ्यास से आज यह अपूर्व ग्रन्थ आप महानुभावों के सन्मुख प्रस्तुत है। अस्तु—

अब हम अपने इष्टदेव महावीर हनुमानजी तथा गुरुदेव भगवान श्री १०८ श्री स्वामी श्री नारदानन्द जी महाराज सरस्वती ब्रह्मचर्य्य आश्रम नैमिषारण्य ( नीमसार ) को साष्टांग प्रणाम करते है। उनकी आत्मशक्ति का आशीर्वाद तारबर्की बिजुली की तरह लेकर अपने हृदय-मन्दिर को प्रकाशित करते हैं। इसी प्रकाश में इस अपूर्व ग्रंथ को लिखना आरम्भ करते हैं। इसी कारण से इसका नाम "रमल-प्रदीपिका" रक्खा गया है। ओं शम ! सत्यं शिवं सुन्दरम् ॥

**बचानप्रसाद त्रिपाठी**

# "रमल"

जिस प्रकार ज्योतिषी लोग लग्न निकाल कर उस समय के ग्रहों को यथाक्रम जन्माङ्ग में रख कर ग्रहों के शुभाशुभ फल से भविष्य फल कहते हैं उसी प्रकार रमलज्ञ रमल शास्त्र से शक्लें बनाकर तथा उन्हीं शक्लों के शुभाशुभ फलों को देखकर भूत, भविष्य, वर्तमान का हाल बताते हैं—ज्योतिष द्वारा लग्न साधन में प्रायः गलती हो जाने की सम्भावना रहती है—परन्तु रमल-शास्त्र में लग्न आदि साधन की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती—अपने इष्टदेव का आवाहन करके भगवान पर भरोसा करके तथा अपने प्रश्न का ध्यान धरके पाँसा फेंक दिया जाता है। पाँसों के फेंकने पर पहले चार शक्लें पैदा होती हैं; फिर उन्हीं चार शक्लों को नियमित क्रम से लिख कर १६ शक्लों का पूरा प्रस्तार बना लिया जाता है। इसी प्रस्तार से भविष्य फल कहा जाता है।

## नियम

आप लोगों को रमल सीखने के नियम जानना आवश्यक है। जब तक आप इन नियमों का पालन नहीं करेंगे तब तक आपको सफलता नहीं मिलेगी। [रमलज्ञको चाहिये कि वह अपनी नियत सदैव ठीक रक्खे सदैव परोपकार करता रहे। प्रायः अपने इष्टदेव का ध्यान आवाहन करता रहे बिना इष्ट के सब कार्य भ्रष्ट होगा, कोई इष्ट देवता का निरन्तर मनन करना आवश्यक है—इस निरन्तर अभ्यास से एक न एक दिन आपकी आत्मा में एक दैवी शक्ति भर जायेगी और आपका हृदय पवित्र हो जायेगा। बुरे विचार मन में भूल कर भी न आने पावेंगे। पहले कम से कम सवा लक्ष श्री गायत्री महा जप करके तब इस विद्या में श्री गणेश करने का अभ्यास करें।

क्योंकि जब तक वाक् (वाणी) तथा अन्तःकरण शुद्ध न होगा तब तक आपकी आत्मा में किसी भी भविष्यफल के जानने की शक्ति नहीं आ सकेगी। प्रायः लोग कहा करते हैं यंत्र-मंत्र आदि एक ढकोसला है—इनमें कुछ भी प्रभाव नहीं है। विचार करने की बात है कि किसी को गाली-गलूच बकने से उसके दिल पर इतना कुप्रभाव पड़ता है कि उससे मारपीट तक की नौबत आ जाती है तो जो शब्द प्रेम तथा पूर्ण श्रद्धा से अपने इष्टदेव के प्रति निकलेंगे क्या उनमें प्रभाव न होगा? क्या हमारे इष्टदेव प्रसन्न होकर मुँह माँगा वरदान न देंगे? हमारी कामना पूर्ण न होगी? अवश्य होगी और मंत्र सिद्धि से आपका हृदय मन्दिर यथार्थ में देवालय बन जायगा।

अब अपने को भगवान् पर छोड़कर जो कुछ भी साधना करेंगे उसमें पूर्णतया सफलता प्राप्त होगी। गायत्री जप के बाद यदि आप भगवान् पर भरोसा करके किसी प्रकार के प्रश्न का उत्तर निकालना चाहेंगे तो रमल विधि के आधार पर निकाला हुआ भविष्य अक्षरशः ठीक होगा।

जो सज्जन गायत्री मंत्र नहीं जानते अथवा सवा लक्ष जप नहीं कर सकते हैं वे नित्य सन्ध्या के समय तथा प्रातःकाल कम से कम दस मिनट तक भगवान अथवा अन्य देवता का ध्यान अवश्य किया करें। जप करना अत्यावश्यक है। इस प्रकार आपका अन्तःकरण शुद्ध हो जायगा। और ऐसा दशा में रमलशास्त्र द्वारा आप जो भी प्रश्न निकालेंगे उनका उत्तर बिल्कुल ठीक होगा।

## समय

पाँसा डालने तथा विचार करने का समय प्रातःकाल से १० बजे दिन के भीतर ही ठीक होता है। कुसमय पर पाँसा डालने और विचार करने से जवाब ठीक न निकलेंगे पवित्र पृथ्वी पर ही पाँसा डालना तथा विचार करना ठीक होगा; पलंग, मेज कुर्सी पर बैठकर

अथवा छत के ऊपर विचार करने से प्रश्नों के जवाब ठीक न निकलेंगे। पानी बरस रहा हो, तेज वायु का वेग हो अथवा आँधी आ गयी हो- ऐसे कुसमय पर विचार करना ठीक न होगा, न पाँसा ही शुद्ध पड़ेगा। परन्तु यदि कोई अत्यावश्यक कार्य्य उपस्थित हो जाय और रमल द्वारा भविष्य विचारने की नौबत आ जाये तो एकान्त में किसी देवालय में में कम्बल या कुशासन छोड़कर पूर्व की ओर बैठकर अथवा देवता के सन्मुख बैठकर भगवान का स्मरण करके निम्नांकित मंत्र सात बार पढ़कर पाँसा पाटी पर फेंके।

ॐ नमो भगवति देवि कूष्मांडिनि सर्वकार्य प्रसाधिनि ॥
सर्वनिमित्तप्रकाशिनि एहि-एहि त्वर त्वर वरं देहि ॥
लिहि लिहि मातङ्गिनि सत्यं ब्रूहि ब्रूहि स्वाहा ॥

जिन सज्जनों को उपरोक्त मंत्र पढ़ने में कुछ अड़चन प्रतीत हो उनको चाहिये गायत्री मंत्र जप करने के पश्चात् पाँसा छोड़कर विचार करें। जिन्हें गायत्री मंत्र भी कठिन पड़ता हो "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" यह मंत्र सात बार पढ़कर पाँसा छोड़ें। यदि कोई यवन भाई इस अपूर्व शक्तिशाली विद्या-द्वारा अपना भविष्य तथा अन्य किसी प्रकार का भविष्य मालूम करना चाहें तो वे तीन बार "दरूद शरीफ" पुनः ५ बार कुल्लशरीफ पढ़कर पाँसा डालकर विचार करें कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक भाँति से पवित्र होकर ही विचार करने बैठा जाय।

इस बात का मुख्य ध्यान रक्खें कि जिस समय नाक से दाहिना स्वर तीव्र वेग से चल रहा हो उसी समय पाँसा डालैं। यदि दोनों स्वर बराबर चल रहे हों तो कम से कम ३ या ४ मिनट रुकने के पश्चात् पाँसा डाला जाय जब दोनों स्वर चलते हैं उनको सुषुम्ना स्वर कहते हैं। ऐसी दशा में कोई काम न करना चाहिये अन्यथा उत्तर अशुद्ध निकलेगा। जब दहिने से बाँया अथवा बायें से दहिना स्वर

बदलता है तभी केवल ३ या ४ मिनट सुखमना स्वर चलता है। फिर दाहिना या बायाँ, स्वर जैसी प्रकृति होती है, अपने नियमित रूप से चलने लगता है जब दाहिना स्वर चलता है तो उसको सूर्य्य स्वर कहते हैं। जब बाँया स्वर चलता रहता है उसको चन्द्र स्वर कहते हैं। इन स्वरों का समय केवल एक-एक घंटा रहा करता है। एक-एक घंटा के बाद जब स्वर बदलते हैं तब एक या २ या ३ मिनट तक सुखमना स्वर चलकर फिर दाहिना या बाँया चलने लगता है। केवल सूर्य्य तथा चन्द्र स्वर ही में विचार करना तथा पाँसा छोड़ना चाहिये। सुखमना में पाँसा नहीं डालना चाहिए।

## रमलज्ञ को शिक्षा

प्रायः ऐसे भी लोग आ जाते हैं कि रमलज्ञ के पास आकर शासक की भाँति पूँछ बैठते हैं—अजी! इस प्रश्न का उत्तर जल्दी निकाल दो, क्योंकि हम एक आवश्यक काम छोड़कर आपके पास आये हैं। ऐसे लोगों से नम्रता पूर्वक कह देना चाहिए श्रीमान् जी! प्रथम आप अपने आवश्यक कार्य कर लें, इसके पश्चात् हमारे पास आयें।

## पाँसा क्या है !

अष्ट धातु-सोना, चाँदी, लोहा, सीसा-पीतल, ताँबा-जस्ता और पारा को गलाकर एक में मिलाया जाता है। फिर बनाने वाला पवित्र होकर प्रातःकाल से १० बजे दिन के भीतर पूर्व की ओर बैठकर गूगुल की धूनी देकर पाँसा का वजन सात तोला यदि इससे अधिक हो सात पर सात रत्ती सात मासा दें और यदि १२ तोला हो तो १२ पर १२ रत्ती ले। इन आठों धातुओं को मिलाना आवश्यक है, क्योंकि उस सर्व शक्तिमान परमात्मा ने प्रत्येक ग्रह का प्रभाव प्रत्येक धातु पर प्राकृतिक रूप में डाल रक्खा है। सोना सूर्य्य से सम्बन्ध रखता है और चाँदी चन्द्रमा से, लोहा मंगल से, सीसा शनि से,

पीतल बृहस्पति से, ताँबा शुक्र से तथा जस्ता बुध से सम्बन्ध रखता है— इसमें सोना, चाँदी एक-एक रत्ती डालना चाहिये। शेष धातुएँ इच्छानुसार छोड़ना चाहिये, गुरु से सम्बन्ध रखनेवाली पीतल धातु अधिक मात्रा में होनी चाहिए।

## पाँसा बनाने का समय

जब सूर्य देव मेषराशि के १९ अंश पर आवें अथवा २१ मार्च तथा २३ सितम्बर, जिस रोज दिन रात बराबर होवे।

विधि—किसी चतुर स्वर्णकार को समझाओ कि उपरोक्त आठों धातुओं को ढालकर एक ही मात्रा तथा आकार-प्रकार के आठ चौकोर टुकड़े बनावें, उन्हीं चौकोर टुकड़ों के बीच में छेद करके चार-चार टुकड़ों को तांबे या लोहे के तारों में इस प्रकार पहना लें कि वह सरलता-पूर्वक इधर-उधर घुमा सकें। फिर उन टुकड़ों के ऊपर एक ओर दो बिन्दु बराबर तथा एक बिन्दु नीचे ∵ करे फिर दूसरी ओर दो बिन्दु ऊपर-नीचे : बनावें फिर तीसरी ओर ऊपर एक बिन्दु नीचे दो ∴ बराबर-बराबर बनावे फिर उसी टुकड़े के चौथी ओर चार बिन्दु ∷ बनावें।

इसी प्रकार से आठों टुकड़ों पर बनाना चाहिये—चारों तरफ के चारों पहलों का चित्र इस प्रकार होगा:—

नम्बर १

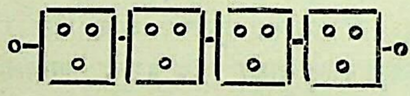

नम्बर २

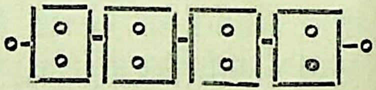

नम्बर ३

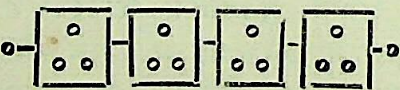

नम्बर ४

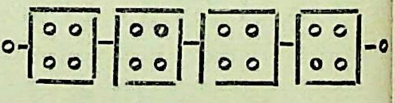

उपरोक्त रीति के अनुसार चतुर कारीगर बनाकर इसी प्रकार से

आठों टुकड़ों पर विन्दु बनाकर प्रत्येक चार टुकड़ों को एक तार में पिरो कर ठीक कर देगा। बस, पांसा तैयार हो गया।

अब रमलज्ञ को चाहिये जब कोई प्रश्नकर्ता आवें तो पीछे लिखे समय का ध्यान करके "जिस दिन वर्षा की झड़ी न लगी हो, और तीव्र वायु न हो" प्रातःकाल १० बजे दिन के भीतर हो अपने इष्टदेव का ध्यान तथा आवाहन करके अपने हृदय मन्दिर में स्थान देने को आमंत्रित करने के पश्चात् प्रश्न का ध्यान करके पांसा को चौकोर चिकनी वस्तु या सिलेट के टुकड़े जिल्द बँधी पुस्तक अथवा कागज की दफ्ती पर पूर्व मुंह बैठकर फेंकना चाहिये।

पांसा छोड़ते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि आठों टुकड़े बराबर बराबर सतह पर रह जावें। यदि असावधानी से पांसे के ऊपर पांसा चढ़ गया तो उन टुकड़ों के ऊपर जो बिन्दु और पाई हों उनका हिसाब ठीक न बैठेगा।

जब पाँसा समतल सतह पर गिरेगा तब आपको उसे पाँसा में पहले प्रथम चार शक्लें ऊपर मिलेगी। उनचार शक्लों का क्रम दाहिनी ओर से रखा जाता है। उन्हें 'उमहात' कहते हैं।

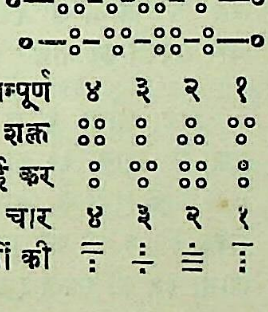

मान लो आपका पाँसा इस प्रकार पड़ा अब दो पाँसों को पास-पास ऊपर-नीचे रखलो क्योंकि दोनों पांसों की सहायता से एक सम्पूर्ण शक्ल बनेगी। दाहिनी ओर से रक्खा तो यह शक्ल बनी। अब इनको अपने हिसाब से बिन्दु पाई कर लो। इस प्रकार अपने पाँसा की सहायतासे चार शक्लें तो प्राप्त कीं, अब इन्हीं चार शक्लों की सहायता से सोरह शक्लें बनाई जावेंगी।

प्रत्येक शक्ल में चार पंक्तियां होती हैं। पहली पंक्ति को अग्नि, दूसरी को वायु, तीसरी को जल और चौथी को पृथ्वी तत्व—अग्नि कहते हैं। इस प्रकार देखो शक्ल नम्बर १ इसी प्रकार ० वायु सभी शक्लों में अग्नि, वायु, जल और पृथ्वी होती हैं। ० जल इन १, २, ३, ४ शक्लों का नाम उमहात है। अब पाचवीं ० पृथ्वी शक्ल इस प्रकार बनावे। शक्ल घर १, २, ३, ४ के अग्नि भाग अर्थात् सबको पहली पंक्ति में क्रम से जो पाई अथवा विन्दु मिलें उनको क्रमसे लेकर पांचवीं शक्ल बनाये। देखो पहली शक्ल में पाई (–) दूसरी में शून्य (०) तीसरी में शून्य (०) चौथी में पाई (–) है। इनको क्रम से लिखा तो यह पांचवीं शक्ल ⁝ बनी इसी प्रकार खाना १, २, ३, ४ की वायु तत्व अर्थात् दूसरी पंक्ति के विन्दु तथा पाई को लिया तो यह शक्ल बनी ÷ इसको खाना ६ में रक्खा। इसी प्रकार इन्हीं चारों खानों के जल तत्व की पंक्तियों को देखा तो ÷ यह शक्ल बनी। इसको खाना सात में रक्खा-फिर इन्हीं चारों खानों की चौथी पंक्ति जो पृथ्वी तत्त्व कहलाती है लिया। खाना १ में (०) २ में (–) ३ में (०) खाना ४ में (०) मिला। इनको क्रम से लिखा तो यह शक्ल ÷ बनी जो खाना ८ में रक्खा अस्तु। खाना ५ में ⁝, खाना ६ में ÷, खाना ७ में ÷, खाना ८ में ÷ रक्खा। अब "९" खाना से १६ घरों के बनाने का क्रम नीचे लिखते हैं इन चार शक्लों का नाम "बनात" है।

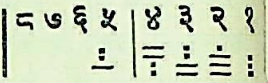

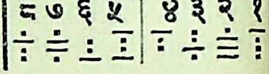

अब खाना १ व २ के गुणा से नवीं शक्ल खाना ३ व ४ के गुणा से खाना १० की शक्ल ५ व ६ के गुणा से ग्यारहवीं और ७ व ८ के गुणा से बारहवीं शक्ल खाना ९ व १० की गुणासे तेरहवीं शक्ल ११ व १२ की गुणा से १४ वीं शक्ल १३ और १४ की गुणा से खाना १५ की शक्ल-इस पन्द्रहवां शक्ल का नाम मीज़ान है।

अब खाना १५ और खाना १ की शक्ल से गुणा होगा वही १६ वीं शक्ल बनेगी। गुणा करने का क़ायदा यह है कि जब पाई के सामने शून्य होगा अर्थात् खाना १ में अग्नि तत्त्व या ऊपरी पंक्ति में पाई (–) हो और खाना २ में शून्य हो इस प्रकार ( ० ō ) तो ( हासिल ) शून्य होगा यदि शून्य के सामने पाई पाई ( ō ० ) हो तो भी शून्य होगा यदि शून्य के सामने शून्य हो तो पाई होगी इस प्रकार ( ·—· ) यदि पाई के सामने पाई हो तो लब्धि पाई होगी। इस प्रकार (—‿—) केवल चार प्रकार ही गुणा है। चारों का चित्र (·—·) (—‿—) (·.—) (—.·) अब नवें घरकी शक्ल बनाते हैं। देखो खाना "१" में अग्नि अर्थात् ऊपर पंक्ति में (–) है और खाना २ की अग्नि पंक्ति में शून्य है। गुणा इस प्रकार नीचे खाना ९ में रक्खा (·) इसी प्रकार वायु जल, पृथ्वी की तीनों पंक्तियों में खाना १ में तीनों जगह शून्य हैं और खाना २ के वायु, जल, पृथ्वी तीनों पंक्तियों में पाई (–) मौजूद हैं। अतः इस प्रकार खाना ९ रक्खा। इसी प्रकार खाना ३ और खाना ४ को गुणा से ( ÷ ÷ ) से शक्ल ( ⋮ ) प्राप्त हुई जो खाना १० में रक्खा। इसी प्रकार खाना ५ व ६ की गुणा ( ÷ ⫶ ) से यह शक्ल (≟) पैदा हुई, क्योंकि पहले पाई के सामने शून्य है फिर शून्य के सामने पाई है, अतः दोनों हासिल शून्य आया इसी प्रकार खाना ५, ६ की तीसरी तथा चौथी पंक्ति में शून्य के सामने शून्य है अतः हासिल पाई हुई फिर पाई के सामने पाई है। अतः हासिल पाई हुई इसी कारण खाना ५, ६ का गुणा के शक्ल ≟ आई जो खाना ११ में रक्खा इसी प्रकार खाना ७ और ८के गुणा से शक्ल (⫶) पैदा हुई जो खाना १२में रक्खा—

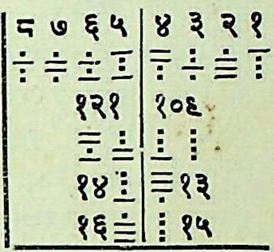

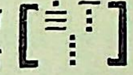

---

नोट—गुणा का गुणन फल उसी के नीचे रखते हैं।

इसी प्रकार ९ और १० की गुणा से शक्ल ≡ आई और ११ व १२ की गुणा से शक्ल ( ⫶ ) आई जो खाना १४ में रक्खा। इसी प्रकार १३ व १४ की गुणा से शक्ल ( ⋮ ) आई जो खाना १५ में रक्खा अब खाना १५ और खाना १ ( $\overset{1}{⫶}$ $\overset{15}{⋮}$ ) को गुणा किया तो शक्ल ≐ आई जिसे खाना : १६ में रक्खा। इस प्रकार से पूरा जायचा बन गया।

इसी प्रकार पाँसा की सहायता से पूरा जायचा बनाया जाता है। यह बात भी याद रखने योग्य है कि शून्य (०) का नाम बिन्दु है इसको 'फ़र्द" भी कहते हैं। और पाई (—) को ज़ौज भी कहते हैं ज़ौज का अर्थ जुट या जोड़ के हैं। यह चारों शब्द काम में आवेंगे। इनका परिचय आवश्यक है।

अब इस बात का खास खयाल रक्खें कि खाना १५ में सदैव यह शक्लें आती हैं ( ≐ ≡ ≡ ÷ ÷ ÷ ⋮ ≡ ) इनके अतिरिक्त अन्य शक्लें खाना १५ में कतई न आ सकेंगी। यदि संयोगवश ( ⫶ ≡ ≡ ÷ ÷ ≡ ≡ ≐ ) इन शक्लों में से कोई शक्ल खाना १५ में आ जावे तो समझ लीजिए हमारे प्रस्तार बनाने में कहीं गलती हो गई है। फिर आदि से शून्य तथा पाई की जाँच गुणा आदि से करलो जब खाना १५ में दो शून्य तथा दो पाई अथवा चारों शून्य या चारों पाई में से कोई शक्ल आ जावे तो समझ लीजिए हमारा प्रस्तार ठीक बन गया है।

## पाँसा बनाने की दूसरी विधि

यदि आप के पास पाँसा नहीं है तब इस प्रकार से प्रस्तार या ज़ायजा बनावे जो प्रश्न करना हो अर्थात् जिस प्रश्न का उत्तर आपको मालूम करना हो तो अपने इष्टदेव का ध्यान धर कर एक ही स्वांस में बिना गिने बिन्दुओं की चार पंक्तियां बनाये। परन्तु इतना ध्यान रक्खे बिन्दु १२ से कम न हो और

२० से अधिक न हों। फिर इन बिन्दुओं को दो दो बिन्दु एक में करते जावें। यदि पूरी बट जावे तो पाई (–) रक्खें। यदि एक शून्य रह जावे तो शून्य (०) रक्खें, इसी प्रकार बिन्दु से चारों पंक्तियों की एक शक्ल बन जावेगी।

*उदाहरणार्थ*—इस प्रकार बिन्दु रक्खा और उन बिन्दुओं को दो दो में मिलाते गये और अन्त में जो शून्य या पाई मिली क्रम से इस प्रकार रखकर चार शक्लें जिन्हें उमहात कहते हैं, बनाया।

पुनः १, २, ३, ४ शक्लों के प्रथम बिन्दु से शक्ल ÷ बनाया जिसको खाना ५ में रक्खा इसी प्रकार दूसरी पंक्ति के चारो खाना के पाई बिन्दु लेकर ⁝ शक्ल बनाया।

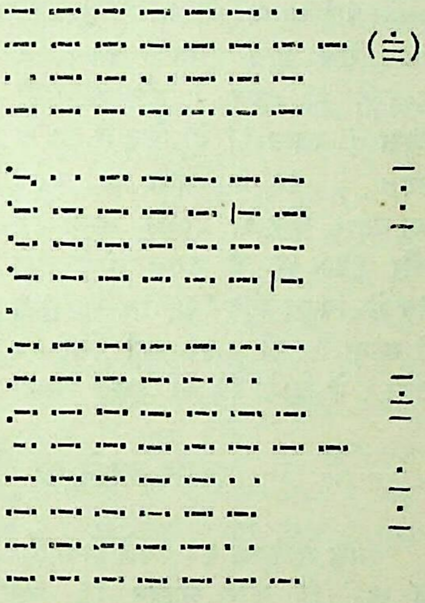

इसको खाना ६ में रक्खा। इसी प्रकार खाना ७ में शक्ल ÷ रक्खा इसी प्रकार चौथी पंक्तिमें चारों पाई मौजूद हैं अतः शक्ल ≡ खाना ८ में रक्खा। इस प्रकार जायचा की ५, ६, ७, ८ शक्लें बन गयीं। अब ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६ तक की शक्ल गुणा से बना

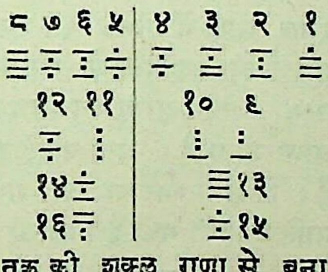

---

नोट—देखो खाना १५ में सम शक्ल ÷ आ गयी, अतः प्रस्तार ठीक है।

लिया खाना १, २ की गुणा से ९ वीं ३, ४ से १० वीं और ५, ६ से ११ वीं तथा ७, ८ से १२ वीं शक्ल बना लिया गुणा करने की विधि पहले लिख चुके हैं कि जब शून्य के सामने शून्य होगा अथवा पाई के सामने पाई होगी तब हासिल पाई होगी। अथवा जब शून्य के सामने पाई या पाई के सामने शून्य होगा इस प्रकार ( · – ) ( · – ) तब हासिल शून्य होगा। अब १, २ की गुणा से शक्ल ⋮ और ३, ४ से भी शक्ल ⋮ और ५, ६ से शक्ल ⋮ खाना ११ में फिर ७, ८ से शक्ल ⋮ १२ वें खाना की शक्ल बन गई। और ९, १० से खाना १३ और ११×१२ से शक्ल ⋮ खाना १४ में रक्खा और १३, १४ की गुणा से खाना १५ की शक्ल बनी फिर १५ तथा १ से खाना १६ की शक्ल बनाया

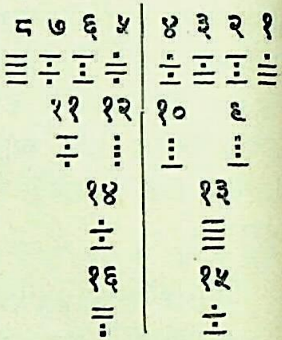

## प्रस्तार बनाने की तीसरी विधि

रमल में केवल १६ शक्लें होती हैं। जिस प्रकार हिन्दी वर्णमाला में स्वर १६ और व्यञ्जन ३६ अक्षर माने गये हैं। इसी प्रकार रमल शास्त्र में केवल १६ शक्लें ही मानी गई हैं। इन्हीं सोलह शक्लों की सहायता से संसार भर के प्राणियों के सुख-दुख हानि-लाभ, जीवन-मरण भाग्योदय तथा भूत, वर्तमान, भविष्य का हाल जाना जाता है। अतः पहिले इन १६ शक्लों के क्रम का चिन्ह बनाते हैं। जिस नम्बर पर जो शक्ल रक्खी गयी है वह उसी घर की मालिक मानी गयी है। शक्लों का क्रम इस प्रकार है :—

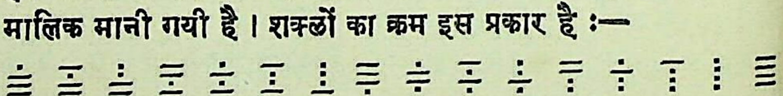

तीसरे प्रकार से प्रस्तार बनाने की सरल रीति यही है कि जब कोई प्रश्न कर्ता रमलज्ञ के सामने आवे तो उसका नाम, पूरा पता लिख कर याद कर लेना चाहिये । उसका प्रश्न भी लिखना चाहिये जब उसके प्रश्न को लिख लेवें तब प्रश्नकर्ता से कहें कि आप नेत्र बन्द करके भगवान् का ध्यान करें । एक मिनट तक ध्यान के बाद उसको समझा कर बतावें कि एकाग्रचित्त होकर १ से १०० तक के मध्य में कोई चार गिन्ती आप मुख से कह देवें जब वह चार गिन्ती बोल देवे तब क्रम से चारों कागज या सिलेट पर लिख लें। यदि वह १६ से कम की संख्या लेता है तब तो उपरोक्त शक्लों में जिस नम्बर की शक्ल लिया है वही शक्ल खाना १ में रख दो । यदि वह ६ से ऊपर की गिन्ती बोलता है तब उस गिन्ती को १६ से भाग देकर जो अंक बचे उसी अंक के ऊपर की शक्ल ले लो, इसी प्रकार चार गिनती में से आप चार शक्लें उमहात की बनाकर पहले लिखे हुए नियम के अनुसार खाना १, २, ३, ४ शक्लों की अग्नि, बायु, जल, पृथ्वी, अर्थात् पहली, दूसरी, तीसरी और चौथी पक्तियों के जो शून्य या बिन्दु क्रम से मिलते जावें उनको खाना ५, ६, ७, ८ में रख देवें फिर ९ से १६ खाने आपस को गुणा से जैसा ऊपर कहा गया है पूरा प्रस्तार बना लेवें ।

*उदाहरणार्थ*—मान लो प्रश्नकर्ता ने चार गिन्ती इस प्रकार कहा १२, ६, ४५, ३९ तो खाना १२ की शक्ल $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ है खाना ६ की शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ है अतः खाना १ में $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ और खाना २ से $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ लिखा अब ४५ में १६ का भाग दिया तो १३ बचे, अतः तेरहवें खाना की मालिक $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ शक्ल है । इसको खाना ३ में रक्खा फिर ३९ को भी १६ से भाग दिया तो ७ बचे, अतः खाना ७ की शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ है अब इन्हीं चारों शक्लों

को 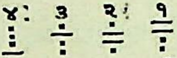 इस प्रकार रक्खा उपरोक्त विधि के अनुसार इस प्रकार प्रस्तार बना लिया।

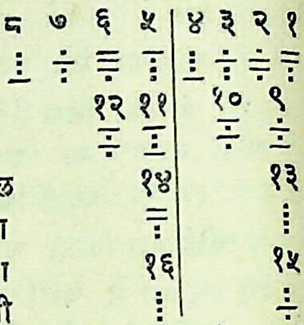

अब खाना १५ और १शक्ल की गुणा

१×१५

किया इस प्रकार ( 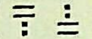 ) तो यह शक्ल बनी इसको नं० १६ में रख दिया इस प्रकार से पूरा प्रस्तार अथवा जायचा बन गया। जो उपाय सुगम जान पड़े उसी के अनुसार प्रस्तार बना लेवें। चाहे पासों की सहायता से, चाहे चार स्वांस में १६ सतरैं विन्दुओं को रख कर, चाहे प्रश्नकर्ता से चार भिन्न भिन्न गिनतियाँ कहला कर। इसी प्रस्तार से रमलज्ञ पूरा हाल प्रश्नकर्ता का बतायेगा।। रमलशास्त्र की वर्णमाला में केवल १६ शक्लें हैं उन शक्लों का नाम, रूप, गुण, प्रकृति, स्वभाव इत्यादि अङ्ग प्रत्यंग भली-भाँति याद कर लेवें—इनको पूर्ण ज्ञान प्राप्त किये विना अपका बिचार अधूरा रहेगा।

## शकुन पंक्ति

| शक्लों के नाम | रूप |
|---|---|
| तरीक | 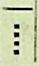 |
| इज्जतमा | 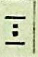 |
| अतबेदाखिल | 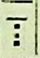 |
| नकी | 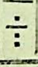 |
| अतबेखारिज | 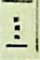 |
| नसरतुलदाखिल | 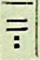 |
| नसरतुलखारिज | 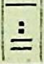 |
| बयाज | 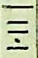 |
| हुमरा | 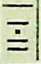 |
| अकीस | 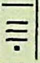 |
| उकला | 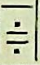 |
| फरह | 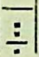 |
| जमात | 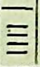 |
| कब्जुलखारिज | 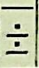 |
| कब्जुलदाखिल | 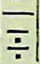 |
| लहियान | 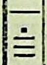 |

उपरोक्त चक्र का नाम शकुन पंक्ति है। इस चक्र का नाम मुनकलिब अर्थात् चर भी है जो लोग भूमध्य रेखा के उत्तर की ओर के निवासी हैं वह इस चक के द्वारा प्रत्येक प्रश्नों के शुभाशुभ फल का निर्माण करते हैं।

## अवदह पंक्ति

| ·<br>–<br>–<br>– | –<br>·<br>–<br>– | ·<br>·<br>–<br>– | –<br>–<br>·<br>– | ·<br>–<br>·<br>– | –<br>·<br>·<br>– | ·<br>·<br>·<br>– | –<br>–<br>–<br>· | ·<br>–<br>–<br>· | –<br>·<br>–<br>· | ·<br>·<br>–<br>· | –<br>–<br>·<br>· | ·<br>–<br>·<br>· | –<br>·<br>·<br>· | ·<br>·<br>·<br>· | –<br>–<br>–<br>– |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |

उपरोक्त चक्र का नाम अवदह पंक्ति है—इन शक्लों का क्रम १, २, ३, ४ इत्यादि इस प्रकार से रक्खा गया है प्रत्येक शक्ल में चार पंक्तियाँ हैं। प्रत्येक में अवदह क्रम वर्तमान है। अवदह में चार अक्षर हैं इस विद्या की असली शक्ल ( ⁞ ) है जिसमें चारो तत्त्व अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी वर्तमान हैं,
अतः प्रत्येक तत्त्व के सन्मुख अक्षर अवदह इस प्रकार ☞ · अ
स्थित है अवदह के कुल अंश १५ हैं। अ० का १ व २ का · व
तथा द के ४ और 'ह' के ८। चारों का जोड़ १५ होता है। · द
रमल शास्त्रकारों का नियम इस प्रकार है कि जिस शक्ल के · ह
जौज जिस दर्जा में जौज अर्थात् पाई ( – ) है–वह बन्द है उसके सामने के अक्षर का विश्वास नहीं इसलिए उसको नहीं लिया जाता है और जिस शक्ल में फ़र्द अर्थात् बिन्दु ( · ) है उसके सामने का अक्षर लेकर उसी तत्व के स्थान में उसको जगह दी जावेगी अर्थात् उसी खाने की मालिक बनेगी जैसे शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\-\end{smallmatrix}$ है
इसमें केवल ऊपर के दर्जा में एक बिन्दु है जिसके सामने · अ
अवदह चक्र का अ अक्षर मिलता है। इस प्रकार ☞ – व
अत एव अ का अंक. एक है शेष ३ पंक्तियों में पाई है। पाई का – द
विश्वास नहीं माना जाता हैं। पाई मृत्यु तुल्य है और बिन्दु – ह
'जीवित' माना गया है। इसी कारण शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\-\end{smallmatrix}$ का दर्जा खुला रहने से १ का अंक होने से इस शक्ल को खाना १ में रक्खा। यह शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\-\end{smallmatrix}$ खाना १ की मालिक बनी अब हमको खाना २ की शक्ल लेना है। जब सारे अवदह चक्र को देखा तो यह शक्ल $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\-\\-\end{smallmatrix}$ मिली, क्योंकि इस शक्ल में वायु तत्व का बिन्दु खुला है। अवदह क्रम का "व" दर्जा खुला है और उपरोक्त रीति के अनुसार व के अंक

“२” है, इसी कारण इसको खाना २ की मालिक माना। अब हमको तीसरी शक्ल लेना है अतः इस शक्ल को अपनी इच्छानुसार पाया क्योंकि इसमें दो बिन्दु अग्नि तथा वायु के खुले हैं अवदह चक्र के अनुसार अ और व खुले हैं इस प्रकार☞ अ का एक और व के २ अंक हैं, दोनों को जोड़ा तो १+२=३ हुये इसलिए इसको खाना ३ की शक्ल का मालिक माना। अब खाना ४ की शक्ल ढूढी तो शक्ल पाया क्योंकि इसमें केवल एक बिन्दु जल तत्व का खुला है अवदह का “द” खुला है। द के अंक ४ हैं इसी कारण शक्ल को खाना ४ में रक्खा और चौथे घर की मालिक यह शक्ल बनी। इसके बाद खाना ५ की शक्ल को ढूँढा तो यह शक्ल पाया। इसमें अ और द पाया अ का अंक एक और द का ४ अंक दोनों का जोड़ ५ हुआ। इसी कारण इस शक्ल कब्जुल खारिज को खाना ५ की मालिक बनाया। इसके बाद शक्ल इजतमा को खाना ६ में पाया क्योंकि अवदह का दर्जा “व” और ‘द” खुला पाया व के २ और “द” का अंक ४ दोनों का जोड़ ६ हुआ, इसी कारण खाना ६ की मालिक यह बनी। इसके बाद शक्ल “अतवेखारिज” को खाना ७ की मालिक बनाया क्योंकि इसमें अवदह का अ और व और द बिन्दु खुला है। अस्तु १+२+४=७ हुये इस प्रकार की☞ शक्ल को खाना सात की मालिक माना। इसी प्रकार शक्ल 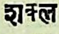 को खाना ८ की मालिक माना क्योंकि केवल (ह) ८ अंक खुला है इसके पश्चात् शक्ल उक्ला 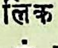 को खाना ९ की मालिक माना क्योंकि अ का १ अंक तथा ह के ८ अंक दोनों का जोड़ ९ हुआ फिर शक्ल को खाना १० की मालिक माना क्योंकि व और ह बिन्दु खुला है २+८=१० हुये—फिर शक्ल को खाना ११ तथा शक्ल को खाना १२ की मालिक माना क्योंकि इसमें एक बिन्दु जल तत्व अर्थात् तीसरी सतर का जिसके सामने अवदह चक्र का “द” मौजूद है “द” का अंक ४ तथा पृथ्वी तत्व अर्थात् चौथी पंक्ति का बिन्दु

· अ
· व
— द
— ह

· अ १
· व २
· द ४
— ह ८

अंक ८ है। दोनों का जोड़ ४+८=१२ हुआ। अतः शक्ल =: खाना की मालिक बनी। फिर शक्ल ÷ खाना १३ को और शक्ल ‾: खाना १४ की मालिक मानी गई। इसके पश्चात् शक्ल तारीख ⁞ को खाना १५ की मालिक माना क्योंकि इसमें चारों तत्त्व मौजूद हैं। सबके अंक अ (१) व के (२) द के ४ और ह के ८ सब मिला कर १+२+४+८=१५ हुये इसी कारण खाना १५ की मालिक यह शक्ल ⁞ हुई फिर शक्ल ≣ को खाना १६ की मालिक माना क्योंकि इसमें कोई बिन्दु नहीं है। और १६ शक्लों में से केवल यही शक्ल बची भी थी इसी कारण इसको खाना १६ में रक्खा।

## आवश्यकीय बात

सारे विश्व में पाँच तत्त्व काम कर रहे हैं वह यह हैं (१) आकाश (२) अग्नि (३) वायु (४) जल (५) पृथ्वी देखो [ ⁞ ] यह बिन्दु बिरेकट में हैं। प्रथम बिन्दु आकाश जो सारे ब्रह्माण्ड को घेरे है यही सबको पैदा करता है तथा यही सबका नाश करता है अर्थात् आकाश ही प्रत्येक वस्तु की मौत और सबके जीवन का कारण है। अतः उपरोक्त ५ बिन्दुओं में से यदि आकाश को अलग कर देवें तो आकाश में आकाश के बाद केवल यह चार बिन्दु ⁞ रह जाते हैं प्रथम अग्नि, दूसरा वायु, तीसरा जल, चौथा पृथ्वी, इसी कारण इनको चतुर्मुखी कहते हैं। शास्त्रकारों ने इन्हीं का नाम ब्रह्मा रक्खा है जो समस्त विश्व को पैदा करने वाला है। सारी सृष्टि इन्हीं ब्रह्मा की बनाई हुई है। अतः ब्रह्मा सबके पिता हैं परन्तु ब्रह्मा का कोई रूप साकार नहीं दृष्टिगोचर होता है। केवल यही चार बिन्दु अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी, के योग को ब्रह्मा कहते हैं इसी कारण ब्रह्मा को चतुर्भुजी और चतुर्मुखी कहते हैं।

आकाश "ब्रह्म" है अथवा ईश्वर है। ब्रह्मा जीव है। ब्रह्मा का योग [ ⁞ ⁞ ] यह ≣ होता है। देखो बिरेकट में यह प्रकृति है और ईश्वर जीव है इसी प्रकृति का नाम संसार अथवा दुनियाँ है और इन तीनों की तीन शक्लें हैं जिनका सूरत यह है

आकाश ⁝ ब्रह्मा योग ब्रह्मा    रमल विद्या का सारा कार्य इ
ईश्वर  जीव  ☰ प्रकृति

उपरोक्त अ ब द ह चक्र पर है। जिनका विवरण हम पीछे दे आये हैं अ ब द ह चक्र का नाम हिन्दी भाषा में "तमतम" कहा गया है।

अतएव हमारे देश के यू. पी., सी-पी, विहार प्रान्त, मध्य प्रदे बिन्ध्य प्रदेश आदि सूबों में इसी अबदह क्रम के द्वारा जो प्रश्नो निकालेंगे उनके जवाब सही होते जावेंगे। प्रत्येक चक्र या दायरो यही माननीय है।

## विज़दह चक्र

इस विज़दह चक्र का काम प्रत्येक काम की अवधि बतलाने है। अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी, तत्व में सम्पूर्ण शक्लों में विज़द क्रम लगा है जिस प्रकार अबदह क्रम में १ का एक ब का २ और के ४ तथा "ह" के ८ अंक माने गये हैं इसी प्रकार विजदह में वक (ब) के २ अंक तथा ज़ के सात और द के चार अंक तथा "ह" ८ अंक होते हैं। इस प्रकार २—वि
७—ज़
४—द सब का जोड़ २१ है।
८—ह

पूर्वोक्त रीति के अनुसार प्रगट बिन्दु (·) तत्व की संख को जोड़ें उसी घर में उसकी स्थिति जानें। यदि ८ जोड़ के आं १६ से अधिक हों तो १६ के भाग से जो शेष रहे उसे नये घर में शक्ल की स्थिति जाने। हम शक्ल ÷ को लेते हैं इसमें अग्नि तत्व बिन्दु है। अंक २ और वायु का बिन्दु भी खुला है अंक "ज़" ७ हुये और जल तत्व अर्थात् तीसरी पंक्ति ÷ में पाई (—) है बन्द है इसे छोड़ दिया। अब पृथ्वी तत्व को खुला शून्य (·) पा विज़दह पंक्ति के आधार पर "ह" पाया "ह" के अंक ८ हैं। जोड़ा २+७+८=१७ हुये। १६ से भाग दिया तो एक बचा अतः इसको खाना १ का मालिक माना। इसी प्रकार शक्ल ☰ केवल 'वि' खुला पाया, बाकी सब बन्द है। अब व के २ अङ्क है

लहियान को खाना २ में स्थान दिया। इसी प्रकार शक्ल अतबे दाखिल को खाना ३ में स्थान दिया क्योंकि इस शक्ल ⋮ में ज, द, ह बिन्दु खुले हैं। जोड़ ७+४+८=१६ हुआ, चूँकि १९ अङ्क १६ से अधिक है अतः १९ को १६ से भाग दिया तो ३ बाकी बचे, इसी कारण इसको खाना ३ में स्थापित किया। इसी प्रकार उपरोक्त रीति के अनुसार बिजदह पंक्ति का पूरा चक्र बना है। चक्र का नाम दायरा भी है। बिजदह चक्र यह है:—

| शक्ल | ÷ | ≐ | ⫧ | ≖ | ⁞ | ∺ | ⩧ | ⩸ | ≗ | ⨫ | ⌶ | ⫟ | ⊥ | ⨬ | ⩩ | ≣ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| संख्या | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |

इस चक्र से अवधि निकालने की रीति यह है। इस चक्र में प्रत्येक शक्ल को अपना ध्येय मान लो अर्थात् जो प्रश्न हो उस घर का सातवाँ घर देखो, जैसा हमारा प्रश्न है माल कब मिलेगा? माल का प्रश्न खाना २ से देखा जाता है। प्रत्येक प्रश्न किस घर से जायचा में देखने का नियम है सो हम इसका विवरण विस्तार पूर्वक आगे लिखेंगे।

अतः माल के प्रश्न पर उपरोक्त रीत्यनुसार प्रस्तार अथवा जायचा बनाकर खाना २ को देखो अब इस चक्र के खाना २ शक्ल ≐ से सातवीं शक्ल ⩸ को पाया इस शक्ल को अपने प्रश्नोत्तर के जायचा में देखो कि यह किस घर में पड़ी है और उस पर अन्य शक्ल की दृष्टि कैसी पड़ती है शुभ है? या अशुभ? उसी के अनुसार अवधि व मुद्दत लगाना चाहिये। प्रत्येक शक्ल जो इस चक्र की जिस घर की मालिक है उस घर में उस शक्ल के अंक उसी घर के अनुसार है और यही उस शक्ल के असली अंक है।

अंक निकालने की रीतिः—अंक उपरोक्त कायदा से १ माना जायेगा और खाना २ के ३ क्योंकि (१+२=३ और खाना ३ में (१+२=३) हुये और खाना में (१+२+३+४)=१० हुये। इसी प्रकार खाना ५ में १५ बचा खाना ६ में २१ तथा खाना सात में २८ तथा खाना ८ में ३६ इत्यादि इत्यादि होते जावेंगे। इस प्रकार (१+२+३+४+५

६+७+८=३६ ) अपने मतलब की शक्ल को देखो, वह जायचा
किस घर में है और अपने चक्र बिजदह के अनुसार वह कितने अं
रखती है ? फिर वह शक्ल आपके प्रस्तार में अर्थात् अवधि जायच
के किस घर में पड़ी है ? उतने ही अङ्क जोड़कर अवधि बता दो।

संयोगवश यदि वह शक्ल आपके प्रस्तार में न पड़ी हो तो अ
प्रस्तार के कुल बिन्दु और पाई ( — ) गिन लो । परन्तु पाई के दो
बिन्दु मानो क्योंकि यह पाई दो बिन्दु से बनी है। अस्तु, बिन्दु औ
पाई के सभी बिन्दु गिनकर १६ को भाग देकर जो शेष रहे जायचा में
उसके जितने बिन्दु हों ले लेना चाहिये ।

इस बात का मुख्य ध्यान रखें कि वह शक्ल आपके प्रस्तार में
आपके नियमित घर से आगे आई है या पीछे यदि आगे हो तो देखन
चाहिये कि अपने घर से कितने घर छोड़कर प्रथम आई है उतने ह
अङ्क उसमें जोड़ना होगा ।

*उदाहरणार्थ*—शक्ल $\overline{\underline{\cdot}}$ । यह खाना ४ की मालिक है ( देखे
विजदह चक्र ) और यह खाना २ में प्रस्तार में पड़ी है तो खाना २ के
अङ्क १+२=३ हैं और खाना २ चार शक्ल खाना तक दो घर क
दूरी है अर्थात् अधिक हैं २ में ३ को जोड़ दिया तो ५ अङ्क हुए। अत
५ अङ्क शक्ल $\overline{\underline{\cdot}}$ के खाना दो में जानना चाहिये । इसी प्रकार अग
शक्ल अपने खाना से आगे बढ़े तो जितने खाना आगे बढ़े उतने ह
अङ्क को उस खाना में, जिसमें शक्ल हो खाना से कम करना चाहिए
जैसे शक्ल $\underset{\cdot}{\div}$ यह खाना १ का मालिक है खाना ५ में आवे तो ५
अदद खाना पाँच के ( १+२+३+४+५ )=१५ हुए और अव्वल
और पाँच के बीच चार की दूरी है अतः १५ से ४ कम किये तो ११
बाकी रहे इस प्रकार शक्ल $\underset{\cdot}{\div}$ के खाना ५ में ११ अङ्क हुए । इसी
प्रकार अन्य शक्लों को भी जानना चाहिये । अगले पृष्ठ के नक्शे से
अपनी शक्ल के बारे में सब बातें जान लो। देखो वह किस घर में
पड़ी है उसी के अङ्क मान लो ।

## चक्र विजदह का मुद्दत निकालने का

| शक्ल खाना | •<br>•<br>—<br>• | •<br>—<br>—<br>— | —<br>•<br>•<br>• | —<br>—<br>•<br>— | •<br>•<br>•<br>• | •<br>—<br>•<br>— | —<br>•<br>—<br>— | —<br>—<br>—<br>• | •<br>•<br>—<br>— | •<br>—<br>—<br>• | —<br>•<br>•<br>— | •<br>•<br>—<br>— | •<br>•<br>•<br>— | •<br>—<br>•<br>• | —<br>•<br>—<br>• | —<br>—<br>—<br>— | विज. शक्ल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | |
| २ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | |
| ४ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | |
| ५ | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | |
| ६ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | |
| ७ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | |
| ८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | |
| ९ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | |
| १० | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | |
| ११ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | |
| १२ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | |
| १३ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | |
| १४ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० | १०१ | १०२ | १०३ | १०४ | १०५ | १०६ | १०७ | |
| १५ | १०६ | १०७ | १०८ | १०९ | ११० | १११ | ११२ | ११३ | ११४ | ११५ | ११६ | ११७ | ११८ | ११९ | १२० | १२१ | |
| १६ | १२१ | १२२ | १२३ | १२४ | १२५ | १२६ | १२७ | १२८ | १२९ | १३० | १३१ | १३२ | १३३ | १३४ | १३५ | १३६ | |

## शक्लों की संज्ञा

पहले बता चुके हैं कि रमल में कुल १६ शक्लें हैं ये चार प्रकार की होती हैं। (१) दाखिल संज्ञक (२) खारिज संज्ञक (३) सावित संज्ञक (४) मुनक्लीब संज्ञक। इन सबका चक्र इस प्रकार हैं:—

| दाखिल शक्लैं | खारिज शक्लैं | सावित शक्लैं | मुनकलिव शक्लैं |
|---|---|---|---|
| 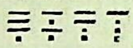 | 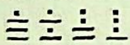 | 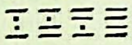 | 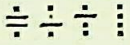 |

खारिज शक्लें दिन में बलवान होती हैं। ये पुरुष संज्ञक हैं। दाखिल शक्लें रात्रि में बलवान् होती हैं। ये स्त्री संज्ञक हैं। सावित शक्लें सन्ध्या समय में बलवान होती हैं। मुनक्लीब शक्लें प्रातः बलवान होती हैं। अब यह भी जानना चाहिये कौन शक्ल शुभ है कौन अशुभ है। शुभ शक्लें यह हैं 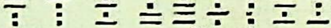 यह ६ शुभ हैं और शक्ल 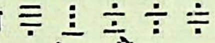 यह अशुभ हैं और शक्ल और ( ) यह दो नपुंसक हैं। मध्यम हैं। शुभ के साथ होने स शुभफल और अशुभ के स्थान होने से अशुभ फल देती है।

## तत्त्व विधान संज्ञक शक्लें

तत्त्व चार हैं अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी। इन १६ शक्लों में चार

---

नोट—जिन शक्लों के ऊपरी पंक्ति में पाई तथा नीचे शून्य हैं, वह दाखिल हैं। इनके विपरीत खारिज शक्लें हैं। जिन शक्लों के ऊपर नीचे पाई हैं वह सावित अथवा (स्थिर) हैं। जिन शक्लों के ऊपर नीचे दोनों में शून्य हैं वही मुनकलिव (चर) हैं।

शक्लें अग्नि की और चार शक्लें वायु की और चार शक्ल जल की तथा चार शक्लें पृथ्वी तत्व की हैं। चक्र यह है—

| अग्नि तत्व | वायु तत्व | जल तत्व | पृथ्वी तत्व |
|---|---|---|---|
| ≐ ÷ ∸ ⋮ | ⫶ ≐ ⊤ ÷ | ⋮ ≡ ⊤ ÷ | ≡ ÷ ÷ ≡ |

## राशि संज्ञक शक्लें

≐ ≒ यह धन और मीन राशि की शक्लें हैं। और बृहस्पति इनका स्वामी हैं और ≐ ≑ यह राशि हैं। इनके स्वामी सूर्य्य हैं। और ≡ ⫶ यह मिथुन राशि हैं। इनके स्वामी बुध हैं। और शक्ल ≐ ⋮ कर्क राशि की शक्लें हैं। इनका स्वामी चन्द्रमा है। और शक्ल ÷ ⋮ यह तुला राशि की हैं। इनका स्वामी शुक्र है। और शक्ल ≐ ÷ वृश्चिक राशि की शक्लें हैं। इनके स्वामी मंगल हैं और ÷ ⋮ तथा शक्ल ≒ ÷ यह मकर तथा कुम्भ राशि की शक्लें हैं। जिसमें ≒ ÷ का स्वामी शनि है और ÷ ⋮ का स्वामी राहु और केतु है।

---

नोट—अग्नि तत्व पूर्व दिशा से सम्बन्ध रखता है इनका पीला वर्ण है और वायु तत्व की शक्लें पश्चिम दिशा से सम्बन्ध रखती हैं। इनका लालवर्ण है। और जल तत्व की शक्लें उत्तर दिशा से सम्बन्ध रखती हैं। इनका श्वेत वर्ण है। पृथ्वी तत्व वाली शक्लें दक्षिण दिशा से सम्बन्ध रखती हैं। इनका श्याम वर्ण है।

नोट—मुनकलिब शक्लों की संज्ञा चर है। साबित शक्लों की संज्ञा स्थिर है। और खारिज तथा दाखिल शक्लों की संज्ञा द्विस्वभाव है। प्रश्न की शक्ल की जो राशि जो रूप जैसा रंग स्त्री पुरुष आदि तत्व जैसा हो प्रश्न का सिद्ध असिद्ध आदि भेद वैसा ही जानना चाहिए।

## चक्र द्वारा संज्ञादि विषय देखो:—

| नं० | नाम | शक्ल | स्वामी ग्रह | स्वामी आकाश | अवधि दिन | अवधि रात |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ≐ | ÷ | सूर्य्य | चौथे | इतवार | बृहस्पति |
| २ | ÷ | ⁝ | शुक्र | दूसरे | शुक्र | मंगल |
| ३ | ≡ | ⋮ | बुध | तीसरे | बुध | इतवार |
| ४ | ≡ | ⁞ | चन्द्रमा | प्रथम | सोमवार | शुक्र |
| ५ | ÷ | ≡ | शनि | सातवें | शनिवार | बुधवार |
| ६ | ≐ | ÷ | बृहस्पति | छठें | बृहस्पति | सोमवार |
| ७ | ≡ | ÷ | मंगल | पांचवें | मंगल | इतवार |
| ८ | ÷ | ⁝ | राहु केतु |  | शनिवार | मंगल |

| पुरुष संज्ञक शक्लें | स्त्री संज्ञक शक्लें | नपुंसक शक्लें |
|---|---|---|
| ≐ ≐ ÷ ≡ ≐ ⁝ | ÷ ≡ ÷ ÷ ⁝ | ≡ ÷ ÷ ≡ ⁝ |

## शक्लानां गुणवर्णादि

≐ ब्राह्मण है। गौर वर्ण है। धर्म में आसक्त पण्डित मीठा बोलने वाला। मीठा भोजन करने वाला। छोटी ग्रीवा वाला। श्याम नेत्र वाला लाँबाडील, पतला शरीर, एक दाँत नीचे का टूटा, सर पर ज़रक या निशान जलने का होगा या बीच सर में बाल न हों या गंज सर हो।

÷ श्रेष्ठ क्षत्रिय, गेहूँ सरीखे वर्ण वाला, मीठा बोलने वाला, श्याम नेत्र वाला, शिल्प विद्या में निपुण, अथवा चतुर तथा मध्यमडील वाला, बड़ा सर लम्बी गरदन, भौंहें मिली हुईं, छोटे कान, पे बड़ा कि उसमें बल पड़े हों, हाजिर जवाब हो।

म्लेच्छ हो, अन्याय में तत्पर, फोड़ा-फुन्सी के घाओं से चिह्नित शरीर वाला, बिल्लाई सरीखे नेत्रों वाला, दीर्घ शब्द करने वाला काला तथा पीला वर्ण, बड़े दाँत, चुगुल खोर, कड़ुआ पदार्थ प्रिय मानने वाला, निन्दित स्थान में बसने वाला, मुँह पर चेचक के दाग पाँव मोटे, दाँत छोटे, छाती पर बाल हों।

शक्ल का हुलिया गेहूँ जैसा रंग वाला, शूद्र जाति, चित्रकारी करने वाला, गुणवान भी हो, बड़ी नाक, चौड़ा मत्था, बदन में फोड़े-फुन्सी के चिह्न दाढ़ी बड़ी. चेहरा कुछ साँवला मिला पक्का रंग, काले नेत्र, बड़े मुखवाला हो।

फरत शक्ल का हुलिया दीर्घ शरीर वाला, गोरे वर्ण वाला, लिखने में निपुण लेखक हो, हँस मुख कटी हुई भृकुटी वाला, काले नेत्र सूक्ष्म नेत्र वाला मीठा भोजन करने वाला मँझोला डील स्वरूपवान बिना दाढ़ी के हों पतली नाक गाल चेहरा पर चिन्ह तिलक हो, और कान के नीचे दाग जखम या फोड़ा का होवे।

शक्ल उकला का हुलिया काले वर्ण वाला दीर्घ तथा लम्बा मुख नीच जाति वाला मोटी तथा ऊँची नाक ठँगना डील छोटा सर चौड़ा मुँह छोटे दाँत पेट लम्बी दाढ़ी छोटे पैर लम्बी पिंडुली चेहरा के बाई ओर या सर पर निशान लहसुन दहिनी आँख अथवा दहिने पैर में कज हो।

अंकीस शक्ल का हुलिया कृष्णवर्ण है खेती करने वाला, काले नेत्रों वाला, कुभेष वाला गृह कार्य्य में कुशल, गोल चेहरा मोटे होंठ सर बड़ा दाँत बड़े, बड़े कि आधे नीचे के लम्बे और आधे बड़े यह स्त्री की हुलिया है। पुरुष काला रंग लम्बा डील आँखों तथा दाँतों में कोई ऐब हो।

हुमरा शक्ल यह क्षत्री है शूर वीर शास्त्रों का जीर्णोद्धार करने में निपुण चोरी करने वाला, लम्बा डोल, दाढ़ी में चिह्न लहसुन अथवा तिल या गद्दी ही मुख पर दाग चेचक लडाका प्रकृति का होवे।

बजाय शक्ल गौरवर्ण ब्राह्मण की है-सुखी देवता का पुजारी रूपवान हो शरीर भरा हुआ सुडौल मँझोला डील वाला भौंहें मिली हुई छोटा मुख बड़ा-बड़ी स्याह आँखें लम्बे बाल चौड़ी छाती दाँत खुले हुये दाहिनो छाती पर तिल हो पेट पर चिह्न ज़ख्म आदि का हो। बगल में तिल हो।

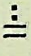
नुसुरतुल खारिज यह शक्ल उत्तम क्षत्रिय की है, राज कर्म में रत धर्म युत दीर्घ देह वाला गौर वर्ण सुन्दर नेत्र वाला जल के समीप स्थान खड़ी नाक छोटी सर छोटी दाढ़ी चौड़ी छाती आवाज ऊँची बोलने वाला बारीक उँगलियाँ पीछे दांत गोल मुख पर चिह्न तिल आदि का हो।

नुसुरतुल दाखिल का हुलिया गोरे वर्ण ब्राह्मण तपस्वी हैं। लम्बा डील गोल मुख तिल चिन्ह से युक्त बड़े नेत्र वाला यदि यह शक्ल खाना ७ में हो तो पुरुष अन्य घरों में स्त्री संज्ञक है बड़ी नाक बड़ा सर बड़े पैर और पैर में निशान चोट या जले का हो।

अतबे खारिज वर्ण म्लेच्छ है। घाओं के चिन्हों से चिन्हित दुबला शरीर, काला स्वरूप, दरिद्र भाव वाला मुँह में बदबू आती होवे, लाँबा डील बड़ा पैर, छोटा सर, पतली गर्दन नीचे का दाँत टूटा या कीड़ा खाया हुआ।

नकी शक्ल गोरे वर्ण क्षत्रिय हैं दुबला अथा पीले नेत्रों वाला मँझोला डील की तरह गर्दन छोटा मुँह बड़ी नाक होंठ बड़े-बड़े दाँत छिदरे नीचे का दाँत कुछ टूटा मांसाहारी निर्भीक होवे।

अतवेदाखिल शक्ल गेंहुआ रंग लाँबा शरीर वाला, दुबला पतला शूरवीर सुन्दर मुख कटी हुई भृकुटी वाला, बड़ी जाँघ काले नेत्र तिल के चिह्नों से युक्त गोल चेहरा छोटे पैर छोटी नाक मुख छोटा कान बड़े पिंड़ली तथा पैरों पर चिह्न हो बाईं तरफ नाक में छिद्र हों।

इजतमा शक्ल शूद्र की है। राजा का लेखक अथवा ज्योतिषी गुणों से युक्त-सुन्दर दाढ़ी वाला गेंहुआ रंग होगा। भौंहें खुली

हाजिर जवाब हो मुख पर दाहिनी तरफ चिन्ह या दाग या बगल के नीचे चिन्ह ज़ख्म का होगा छोटी नाक चौड़े दाँत का हो। तारीक़ गौर वर्ण वैश्य जाति का हो। दीर्घ देह वाला स्त्री संज्ञक हो पतला व दुबला शरीर बारीक आवाज़ छोटा सर नाक और कान पर या छाती के बाईं तरफ निशान या तिल हो।

## प्रश्न कथन प्रकार

सम्पूर्ण प्रश्नों के शूल रूप ग्रह कहे गये हैं, इसलिए हम उन घरों को लिखते हैं जिनसे प्रश्नोत्तर निकाले जाते हैं पहले हम लिख चुके हैं कोई भी प्रश्नोत्तर निकलना हो तो पहले उसी प्रश्न का ध्यान धरकर ईश्वर का स्मरण कर पाँसों द्वारा अथवा बिन्दुओं द्वारा जिस प्रकार सुविधा हो प्रस्तार ( जायचा ) बना लो। १६ घर प्रस्तार में बन जावेंगे। कौन सा प्रश्न किस घर से देखना चाहिए इसका विवरण इस प्रकार समझें।

**खाना १** इस घर से, शरीर तथा शरीर के अवयव, अँगुली आदि अंग का, सुख का दुःख का जीवन का,. आयु का, जन्म स्थान का, बल का, कार्य्यारम्भ का, वर्णों के स्थान प्रयत्न का राजनीति, भाग्य का हाल, स्वास्थ्य का हाल, हमारी भाग्य में उन्नति अवनति प्रतिष्ठा आदि का जवाब देखना चाहिये।

**खाना २** जीविका का प्रश्न, धन का, धन के सहायक का, विदेशी अथवा प्रेमी भाग का, मन का, उद्यम का खरीदने-बेचने का, साहूकार तथा कंगाल का, दाता तथा कृपण का, मैंने आज क्या खाया है ? किस पेशा से लाभ होगा ? अमुक व्यापार में हानि होगी या लाभ होगा ? अमुक व्यक्ति के पास माल है कि नहीं, अमुक व्यक्ति के साथ साझा करने से लाभ होगा कि नहीं ? इस प्रकार के प्रश्न इस घर से देखें।

**खाना ३** से सहोदर भाइयों का हाल तथा अन्य भाइयों का हाल, बहिन व भाई कितने हैं ? विद्या प्राप्ति का प्रश्न, समीप यात्रा होगी या नहीं ? उसमें लाभ होगा या हानि ? देह काँपने का नौकर का धर्म आचरण देव स्थान मन्दिरादि तथा दीवानी या फौजदारी के मुकद्दमों में कौन जीतेगा ? विद्या की बहस में कौन जीतेगा इत्यादि इस घर से विचारै ।

**खाना ४** खेती का हाल, मकान का हाल, पिता की स्थिति, पृथ्वी की गुप्त गड़ी द्रव्य का पता, वृक्षादि लगाने, मृतक जनका कार्य्यों के परिणाम का तत्रादिला इत्यादि वा हाल जायचा के इस खाना से विचार करना चाहिए ।

**खाना ५** सन्तान योग होना या न होना, सन्तान के प्रति प्रत्येक बातों का विचार यह खबर सच है या झूठी कुशल पत्र आने का, लौकिक वार्ता का, वस्त्र का, मंगल का, प्रसन्नता का, विद्या का । गर्भ का, मित्र जन का, प्रेमी मिलने का, कारीगरी का, मादक द्रव्य का—इनाम आदि पाने का । प्रश्न इस खाना से देखा जाता है ।

**खाना ६** रोग क्या है । शारीरिक है या बाधा है गर्भ है कि नहीं ? है तो कितने दिन तथा मास का है ? जादू—टोना आदि का बिचार । छोटे शरीर वाले पशु भेंड़-बकरी आदि का विचार कर्जा । रोगी अच्छा होगा या मरेगा ? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर इस घर से देखना चाहिये ।

**खाना ७** व्याह का हाल, पति कैसा प्राप्त होगा ? स्त्री कैसी तथा स्त्री का आचरण कैसा है ? चोर का हुलिया क्या है अर्थात् चोरी आदि का विचार, मुकद्दमा में विजय किसकी होगी परदेश आने का, मैथुन आदि का प्रश्न इस घर से देखना चाहिये ।

**खाना ८** भय का। मृत्यु का, शोक का, चिन्ता का, दुष्ट स्थिति का कर्ज देने का। सीर। साझे का। खाये हुये धन का, नठियाई जायदाद पाने का इत्यादि प्रश्नों का विचार खाना से देखा जाता है।

**खाना ९** धर्म का बहुत दूर के यात्रा से हानि अथवा लाभ का विचार और व्यभिचार भाग्योदय का विचार ऊँचो शिक्षा का विचार स्वप्न फल का विकार। इष्टदेव की पूजा का फल। संन्यास, धर्म, आदि का विचार इसी घर से किया जाता है।

**खाना १०** व्यापार से हानि, लाभ का नौकरी पाने आदि का अधिकार का, कीर्ति का मान प्रतिष्ठा पाने का, राजा, बादशाह के शासन का स्वामी का मंत्रादि का विचार किया जाता है।

**खाना ११** मित्र की बुद्धि का, सात्विकी वार्ता का अपनी इच्छानुसार कामना की पूर्ति का आशा पूर्ण होने का, राजा के मंत्री अथवा दीवान का-ईश्वर स्तुति का सत्यासत्य का-विचार इत्यादि घर से देखना चाहिये।

**खाना १२** पशुओं के खोये हुये का शत्रु का जेल खाना से छूटने का, कर्जा अदा करने खर्च का बाधा, पीड़ा, आदि से छूटने का विचार इस घर से किया जाता है।

इस प्रकार प्रश्न घरों को जानकर अपने तथा पराये प्रश्नों का विचार करैं और इस तरह इनके सम्बन्ध से और घरों को जाने।

कार्य्य सिद्धि, सिद्धि की अवधि, चोर का नाम बताना, मुट्ठी की वस्तु का विचार "मूक प्रश्न विचार" वर्ष फल विचार–इन पाँच प्रश्नों के विचार में जो प्रथम प्रस्तार ( जायचा ) आप पहिले कहे रीति से बनायेंगे उसी से विचार कर शुभाशुभ फल कहैंगे। अन्य प्रकार के प्रश्नों का फल निकालने में प्रस्तार का इनकलाब ( उलट-पलट ) करना होता है।

## प्रस्तार-परिवर्तन की रीति

रमलज्ञ प्रश्न के वास्ते पाँसे डालकर अथवा अन्य प्रकार से जैसा पहिले लिख चुके हैं प्रस्तार बना ले। जब प्रस्तार जायचा बन जावे उससे इनकलाब बनावे। इनकलाब का अर्थ है परिवर्तन, इनकलाब के बिना प्रश्न की सिद्धि नहीं होती। अतः इनकलाब अवश्य करना चाहिये। तब फल कहैं, इनकलाब करने की रीति यह है जो प्रस्तार बनाया है उसकी पहली शक्ल से पाँचवीं को गुणा करै फिर दूसरी शक्ल को जायचे की छठीं शक्ल से गुणा करै, फिर तीसरी को सातवीं से और चौथी शक्ल से आठवीं को गुणा करके यह चारो शक्लै क्रम से रखकर पुनः पूर्ववत् प्रस्तार बनावे इस प्रस्तार अथवा जायचा का नाम इनकलाब है। इसी से प्रश्नों का उत्तर निकालैं तभी प्रश्न के उत्तरों में पूर्ण सिद्धि पायेंगे।

यह भी जानना चाहिये कि प्रश्न दो प्रकार के होते हैं—खारिज शक्ल निगम (निकला) कही है और दाखिल आगम (आना) कही है। साबित स्थिर (खड़ी हुई) रूप रखती है, अतः प्रश्न जो दो प्रकार के होते हैं पहले का नाम इत्तिसाल है, दूसरे का नाम इनफिसाल। इत्तिसाल का अर्थ है प्राप्त करना, इनफिसाल का अर्थ है जाना, दूर होना, छुटकारा पाना, धन पाना, विद्या प्राप्त होना, स्वामी, राजा, हाकिम से लाभ उठाना, यदि इत्तिसाल की शक्लै पड़ जावें तो लाभ हो। इत्तिसाल की शक्लै दाखिल शक्लै कहलाती हैं—वह यह है $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}-\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$। यदि शुभ दाखिल हों तो शीघ्र लाभ हो, अशुभ दाखिल ( $\begin{smallmatrix}-\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ ) हो तो देर से लाभ हो। इनफिसाल प्रश्न जैसे यात्रा होना, रोग से छुटकारा पाना, कैदी का जेल से छूटना, इत्यादि इनको इनफिसाल कहते हैं। इस प्रकार के प्रश्न में यदि शुभ खारिज शक्ल होगी तो रोग शीघ्र छूटेगा, यात्रा से लाभ होगा, बन्धन से छुटकारा पायेगा, इत्यादि। खारिज शक्लै $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\-\\-\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\-\end{smallmatrix}$ है इसमें शुभ खारिज से शीघ्र, अशुभ खारिज से देर छुटकारा मिले।

## प्रस्तार में स्थानों की संज्ञा

जब प्रस्तार आप बना लें उस प्रस्तार का प्रथम, चौथा, साँतवाँ, और दसवाँ इन घेरों को केन्द्र अथवा अवताद कहते हैं। और दूसरा छठाँ, पाँचवाँ, आठवाँ, ग्यारहवाँ इन घेरों को मायल अवताद (पण फर) कहते हैं और तीसरा, छठाँ, नवाँ, बारहवाँ इन घेरों को जायल अवताद तथा आपोक्लिम कहते हैं और खाना १३, १४, १५, १६, को मुतवल्लिदात कहते हैं।

## चारो तत्वों की संज्ञा

जायचा में खाना १, ५, ९, १३ को अग्नि तत्त्व कहते हैं और खाना २, ६, १०, १४ को वायु तत्त्व कहते हैं, और खाना ३, ७, ११, १५ को जल तत्त्व कहते हैं, और खाना ४, ८, १२, १६, को पृथ्वी तत्त्व कहते हैं।

जिस प्रकार हम रमल की १६ शक्लों को प्रत्येक शक्ल का रूप अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी का लिख चुके हैं इसी प्रकार प्रश्नोत्तर को लिखे, जब जायचा बन जावेगा इन जायचा के १६ घरों का विभाजन अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी से कर दिया है।

अब इन तत्त्वों के शत्रु मित्र का ज्ञान आवश्यक है। अग्नि और वायु तत्व की मित्रता है। और जल तथा पृथ्वी तत्व की मित्रता है। तथा अग्नि और जल तत्व की शत्रुता है। और वायु तथा पृथ्वी तत्व की शत्रुता है। यदि अग्नि की शक्ल 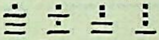 प्रस्तार में जल तत्व के घरों में पड़ गई अर्थात् जायचा के ३, ७, ११, १५, में पड़ी तो मानों शत्रु के घर में पड़ी प्रश्नोत्तर में कमजोरी कही जावेगी। यदि अग्नि की शक्ल अग्नि स्थान में तथा वायु के घर में जायचा में आ गयी तो बलवान् हो गई। कार्य्य बनेगा। इसके विपरीत शत्रु के घर में पड़ने से कार्य्य की सिद्धि में विघ्न लगेगा। इसी प्रकार यदि वायु तत्त्व की शक्ल जायचा के पृथ्वी तत्त्व के

घर पड़ गई तो मानो शत्रु के घर में पड़कर अपनी शक्ति खो रही है। इसी प्रकार अन्य तत्वों के घरों का विचार करना रमलज्ञ का खास काम है।

## जायचा में शुभाशुभ घरों का विवरण

जब प्रस्तार रमल द्वारा तैयार हो जावे उस जायचा में खाना १, ५, ६, ११ तथा १३ शुभ है और खाना २, ३, ४, १०, १४, १५, १६ मध्यम हैं और खाना ६, ८, १२ अशुभ हैं।

## साक्षी करण

जायचा के पहले घर की साक्षी तेरहवाँ तथा आठवाँ घर है। दूसरे घर का साक्षी पाँचवा तथा छठा घर है। और चौथे घर का साक्षी सोलहवाँ घर है। पाँचवें का नवाँ। छठे का दसवाँ। सातवें का ग्यारहवाँ। आठवें का बारहवाँ। नवें का पन्द्रहवाँ, दसवें का छठा। ग्यारहवाँ का सातवाँ, बारहवें का आठवाँ। तेरहवें का पहला। चौदहवें का दूसरा। पन्द्रहवें का नवाँ। और सोलहवें का चौथा घर साक्षी है। इसका चक्र इस प्रकार है:—

| गृह | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| साक्षीघर | १३<br>८ | १४<br>७ | ६<br>५ | १६ | ९ | १० | ११ | १२ | १५ | ६ | ७ | ८ | १ | २ | ९ | ४ |

## साक्षी कर्म देखने की रीति।

प्रस्तार बनाकर अपना प्रश्न देखो। किस घर का प्रश्न है। उस घर में कौन शक्ल है। शुभ है या अशुभ, बली है या निर्बल! बलाबल का क्रम अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी के तत्त्वों पर समझा चुके हैं। उस शक्ल के बलाबल को देखकर फिर उसके साक्षीघर को देखो कि उस घर में 'कौन शक्ल है? और वह उस घर में निर्बल है

या सबल है ? शत्रु, मित्र, आदि घरों का निर्णय करके तब प्रश्नोत्तर निकालै तब रमलज्ञ खूब छान-बीन कर हुक्म लगावें। ऐसा नियम है। शुभाशुभ फल देने वाली शक्ल बलवान हो तो शुभ फल देती है निर्बल हो तो अशुभ फल देती है। इससे सर्वथा बलाबल विचारना योग्य है, क्योंकि अग्नि की वायु से और जल की पृथ्वी से मित्रता है। इससे विपरीत हो तो शत्रुता जानिये जैसे जल की अग्नि की तथा वायु भूमि की शत्रुता है। अग्नि भूमि की व जल वायु की मध्यम प्रीति है, अग्नि तत्व की शक्ल अग्नि तत्व के घर में या वायु के स्थान में हो तो पूर्ण बलवान होती है। जो शत्रु स्थल में हो तो निर्बल हैं। मध्यम में मध्य बली जानो। वह बलाबल आवश्यक है इसी प्रकार गवाह के घरों को देखना है।

## सप्त–पंक्ति के स्थापन के प्रकार

रमलशास्त्र में सात क्रम ( पंक्ति ) माने गये हैं।

(१) शकुनि पंक्ति, (२) अवदह पंक्ति, (३) निजदह पंक्ति-इनका विवरण पहले लिख चुके हैं। अबचे अवजद पंक्ति, मिजाज पंक्ति, हरफा पंक्ति और असहा पंक्ति का चक्र बना कर दिखाते हैं।

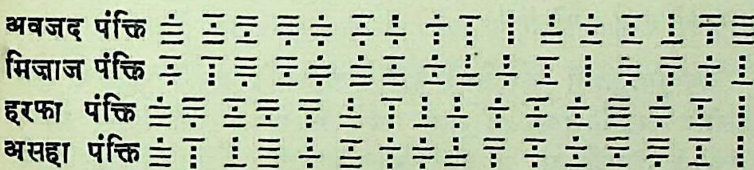

उपरोक्त पंक्तियों का क्रम समस्यानुसार लिखा जावेगा।

## प्रश्नोत्तर निकालने की रीति—

प्रातःकाल पवित्र होकर अपने मन गुरु को प्रणाम करै। फिर अपने इष्टदेव का ध्यान करे। इसके पश्चात् मंत्र को जपकर ( जैसा पहले लिखा जा चुका है) अपने मन में धारणा करै।

प्रश्न—आज हमारे पास कितने प्रश्नकर्ता आवेंगे इस नियत से पाँसा डालकर अथवा बिन्दु द्वारा पाँसा बनाकर जैसे पहले वर्णन हो चुका है प्रस्तार को बनावें और प्रश्न विचार विजदह क्रम से प्रस्तार में स्वग्रही कितनी शक्लें हैं। स्वग्रही का अर्थ यह है कि विजदह क्रम चक्र में जो शक्ल जिस घर की मालिक है आपके प्रस्तार में उसी घर में भी वही शक्ल पड़ी हो। सरलता के लिये विजदह क्रम देखो—

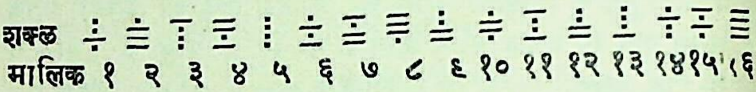

जैसे आपके प्रस्तार में खाने ७ में शक्ल ☰ पड़ी है उधर विजदह पंक्ति में भी प्रस्तार पड़ी है। इसी प्रकार अन्य शक्लों को भी देखो कि विजदह क्रम में आपके जायचा में स्वग्रही कितनी शक्लें हैं। जितनी शक्लें हों उतने ही प्रश्नकर्ता आज आवेंगे। यदि कोई शक्ल न हो तो नहीं आवेंगे। यदि वह शक्ल स्त्री संज्ञक हों तो स्त्री और यदि पुरुष हो तो पुरुष आवेंगे।

प्रश्न—उनका प्रश्न क्या होगा ? क्या कारण है ? क्या भेद है ? कार्य होगा या नहीं ? इनको विचारें और देखें कि कुछ दक्षिणा देवेगा या खाली हाथ आवेगा ?

तब पुनः पाँसा डालकर प्रस्तार ( जायचा ) बनावें जायचा की पहली व तेरहवीं शक्ल को गुणा करके एक शक्ल बनावें फिर स्थान १४ को व ग्यारहवें घर की शक्ल को गुणा करें। दोनों को गुणा करके एक शक्ल बनावें—यदि आदि के प्रस्तार में किसी जगह यह शक्ल हो तो प्रश्नकर्ता कुछ लेकर आवेगा यदि न हो तो खाली हाथ आवेगा।

पुनः विचार करें कि पूछने वाला धातु मूलादि में क्या वस्तु लायेगा २ पूर्वोक्त शक्ल में अग्नि तत्व खुला हो तो अग्नि से पकायी हुई वस्तु लेकर आवेगा यदि वायु तत्व खुला हो तो बीज से उत्पन्न

हुई वस्तु लेकर आवेगा। जल तत्त्व खुला हो तो फल इत्यादि लेकर आवेगा। यदि पृथ्वी तत्व खुला हो तो मूलादि गाजर सकरकन्द जमीकन्द इत्यादि लेकर आवेगा। यदि इसी शक्ल के २ या ३ तत्व खुले हों तो उन उन तत्वों की वस्तु मिली हुई जानों जैसे खाना १, १३ तथा खाना १४, ११ से जो दो शक्लें बनीं। फिर उन दोनों को आपस में गुणा किया तो शक्ल $\underline{\div}$ मिली। इस शक्ल में अग्नि तथा जल तत्व खुला है अतः समाचार उपरोक्त रीति के अनुसार जान लो।

ध्यान देनेवाली बात— सम्पूर्ण प्रश्न वालों के चार प्रकार होते हैं (१) पहले मन का आश्रय कहना। इसको बताने का क्रम यह है पहले शकुनि क्रम (चक्र) को देखो। उस पंक्ति की १, ४, ७, १० शक्ल को लो अर्थात्— $\dot{\equiv}$ ≣ $\underset{\cdot}{\equiv}$ $\overset{:}{-}$ को लो। फिर अपने प्रस्तार के केन्द्र स्थानों अर्थात् खाना १, ४, ७, १० के खण्ड लो फिर जायचा की १३, १४, १५, १६ और केन्द्रों के साक्षी खण्ड (५, ८, ११, १४,) शकुनि क्रम से खण्ड लो।

जैसे शकुनि चक्र की चार केन्द्र स्थानों की शक्ल $\dot{\equiv}$ ≣ $\underset{\cdot}{\equiv}$ $\overset{:}{-}$ इनके साक्षी खण्ड प्रस्तार के १३, १४, १५, १६ इनसे क्रम से चार शक्लें बनावे और अलग-अलग घर देवे फिर प्रस्तार के केन्द्र स्थानों की शक्ल (१, ४, ७, १०) और इसके साक्षी शकुन में (५, ८, ११,१४) इनसे चार शक्लें बनाव पुनः उक्त ४ और यह चार आठों शक्लों से क्रम से चार शक्लें बनावें और इनको अलग रख कर क्रम से अर्थात् पहली आदि तीन से शकुनि क्रम में जिस घर की हों उन घरों के अनुसार मन की वार्ता, प्रश्न का कारण, प्रश्न का भेद इनको कहै। और चौथी शक्ल के बलाबल को देखकर सिद्धि असिद्धि को कहै परन्तु वह चौथी शक्ल शकुनि पंक्ति में जिस घर की हो उसी घर का प्रश्न कार्य का सहायक जानैं। पहले मन का अभिप्राय, दूसरे में कारण, तीसरे में भेद, चौथे से सिद्धि असिद्धि होना विचारे। मूक प्रश्न कहने की सर्वोत्तम रीति यही है।

## शकुनि शक्ल

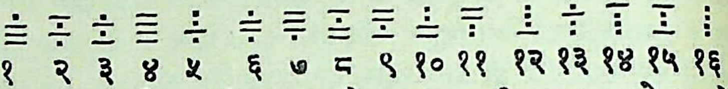

उदाहरणार्थः—कोई आया और कहा एक ही प्रश्न करके हमारे इन चारों को बतावें। तब पाँसा डालकर प्रस्तार बनाया प्रस्तार का रूप इस प्रकार बना☞ पहले घर में शक्ल है दूसरे में और खाना ३ व ४ में है। इसी प्रकार पूरा प्रस्तार बनाया।

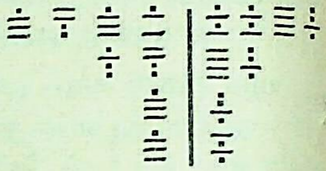

चारों भेदों के दो-दो खंड हैं। और दो-दो ही साक्षी रूप खण्ड हैं। उस अभिप्राय में का पहला घर जिसमें शकुनि में है उसका साक्षी जायचा में खाना १३ में शक्ल है। दोनों का गुणा किया तो शक्ल पाया, पुनः दूसरे प्रस्तार में पहली शक्ल है और इसका साक्षी प्रस्तार में ही पाँचवाँ धर नकी शक्ल है, अतः को गुणा किया तो शक्ल पैदा हुई। फिर प्रथम लाई हुई शक्ल को गुणा किया तो शक्ल पैदा हुई। शकुनि क्रम से यह ग्यारहवें घर को मालिक है, अतः ग्यारहवें घर का अभिप्राय प्रश्नकर्ता का जानना, इसलिये पृच्छक के मन में लाभ आदि का विचार है।

अब दूसरा अभिप्राय कारण का घर शकुनि पंक्ति में है इसका साक्षी प्रस्तार में १४ वें घर में है। अतः को से गुणा किया तो ही हासिल हुई—पुनः दूसरे प्रस्तार की शक्ल है। इसका साक्षी नियमानुसार आठवें घर को लिया तो पाया। अतः शक्ल को से गुणा किया तो पाया। फिर पूर्वोक्त और को गुणा किया तो शक्ल आई। यह शकुनि क्रम में तीसरे घर की है सो यह घर भाई आदि तथा समीप गमन का है, इससे

भाई आदि के कारण या निकट यात्रा से लाभ की चिन्ता है अस्तु, प्रथम प्रश्न का अभिप्राय दूसरे कारण का हाल जाना। अब तीसरा भेद चौथे में सिद्धि की असिद्धि की प्राप्ति का हाल जानना है।

## प्रश्न के भेद का उदाहरण

भेद का घर शकुनि पंक्ति में सातवाँ ≡̣ है। क्योंकि प्रथम कह चुके हैं शकुनि पंक्ति की चार शक्ल ≐ ≡ ≡̣ ≟ केन्द्र हैं। इनके साक्षी १३, १४, १५, १६, है। अतः अब भेद का उदाहरण कहते हैं। सातवाँ घर शकुनि केन्द्र का ≡̣ है, इसका साक्षी प्रस्तार में १५ वाँ घर ÷ है। दोनों को गुणा किया ≡̣ ÷ से शक्ल ≡ बनी। पुनः दूसरे प्रस्तार में सातवें घर में ≡̣ हैं और इसका साक्षी प्रस्तार में ग्यारहवें घर में ≡̣ है। दोनों के गुणा से ≡̣ ≡̣ से आई प्रथम ≡ फिर ≡ को गुणा किया तो शक्ल ≡ आई। अतः यह शक्ल शकुनि पंक्ति में ८ वें घर की मालिक है। सो प्रश्न या भेद ८ वें घर से सम्बन्ध रखता है—प्रश्न कर्ता के मन में सीर ( खेती ) साझे का भेद है।

## सिद्धा सिद्धि के उदाहरण

सिद्धा सिद्धि का दसवाँ घर शकुनि पंक्ति में ≟ है जिसका साक्षी प्रस्तार में १६ वें घर की शक्ल ≐ है दोनों के गुणा से

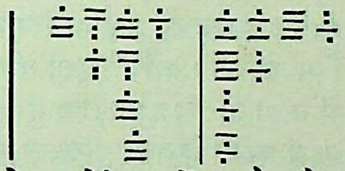

शक्ल ≡ आयी। पुनः दूसरा प्रस्तार के दसवें घर में ≡ है और इसका साक्षी प्रस्तार में चौदहवें घर में ≐ है, अतः दोनों को गुणा किया तो ≡ ≐ आयी। इनकी गुणा से ≐ आई। फिर शक्ल ≡ और ≐ को गुणा किया तो शक्ल ≟ आई। यह शकुनि पंक्ति में दसवें घर की है और शुभ है। अतः राजा की सहायता से कार्य सिद्ध होगा। इस प्रकार से यह चार तरह का ज्ञान सभी प्रश्नों में

जानना। हमने अपने रमल शास्त्र के प्रेमी जनों के लिये यह गुप्त भेद प्रकट किया है।

## प्रथम घर के प्रश्नों का विवरण

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे मेरी उम्र कितनी बाकी है और जीवन दुःख से बितेगा या सुख से ?

**उत्तर**—इस प्रकार के प्रश्न को ध्यान में करके ईश्वर का स्मरण करते हुये पाँसा डालकर अथवा अन्य रीति से जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं प्रस्तार बना लो। फिर चौथी तथा प्रथम शक्ल का आपस में गुणा करो। यदि वह हासिल शक्ल दाखिल हो तो आयु बहुत बाकी है यदि साबित शक्ल हो तो उससे थोड़ी, मुनकलिब शक्ल हो तो मध्यम आयु शेष हैं। यदि खारिज हो तो थोड़ी आयु जानना। शुभ हो तो सुखपूर्वक और यदि अशुभ हो तो दुःख से जीवन व्यतीत होय।

पहले उत्पन्न हुई शक्ल जायचा में जिस घर में स्थिर हो और त्रिजदह पंक्ति में उसके घर का जो अंक हो वही अंक आयु का जानना, यदि वह शक्ल दाखिल होय तो वह अंक संख्या वर्ष जानो। साबित शक्ल से महीना। मुनकलिब से सप्ताह। और खारिज से दिन जानना। यदि पहिली तथा चौथी शक्ल से उत्पन्न शक्ल प्रस्तार में न हो तो विजदह पंक्ति में जिस घर की हो उसी से संख्या अंक ग्रहण करो। विजदह पंक्ति का चक्र हम पहिले लिख चुके हैं।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे कि मेरा भाग्य आज-कल कैसा है ?

**उत्तर**—भगवान् का स्मरण करके इष्टदेव का आवाहन करके रमल डाल कर जायचा बना लें, यदि खाने १ में शक्ल $\overset{\cdot}{\equiv}$ या $\overset{:}{=}$ आवे तो आज-कल आप का भाग्य सन्तोष जनक है। प्रत्येक भाँति से सुख-शान्ति से समय व्यतीत हो रहा है। यदि खाना १ में शक्ल $\underline{\div}$ या

हो तो चिन्ता, व्यथा, आर्थिक संकट, शत्रुओं का भय तथा प्रत्येक भाँति से कष्ट कारक समय व्यतीत हो रहा है। प्रायः परदेश-गमन का विचार हो जाता है। यदि या में से कोई शक्ल खाना १ में आवे तो प्रत्येक भाँति से जीवन सुख-शान्ति से व्यतीत हो रहा है। यदि हो तो देखने में तो अच्छा समय मालूम होता है मगर आन्तरिक दशा में प्रायः कष्ट व्यथा एक न एक झगड़े लगे रहते हैं और जिस काम में हाथ डालते हैं वह देर से पूरा होता है। यदि खाना १ में शक्ल हो तो शनिदेव की अनुकंपा से कष्ट पा रहे हैं। शत्रु का भय लगा रहता है। जिस काम में हाथ डालते हैं वह देर से पूरा होता है। यदि शक्ल हो तो खुशी से समय व्यतीत हो रहा है, मगर चित्त में स्थिरता नहीं रहती है। प्रायः कामनायें अपूर्ण रहती है। यदि शक्ल हो तो प्रायः यात्रा की धुन सवार हो जाती है। यदि शक्ल या खाना १ में आवे तो दिन खोटे हैं। नाना प्रकार की चिन्तायें घेरे हैं। यदि हो तो ३ मास १७ दिन तक भाग्य खराब रहेगा जो कार्य्य आरम्भ करेंगे वह देर में पूरा होगा। यदि खाना १ में शक्ल हो तो गत चार वर्ष से भाग्य खोटा चला आ रहा है, जिस कार्य्य को आरम्भ करेंगे हानि उठावेंगे। यदि हो तो डाँवा-डोल दशा है, आमदनी से खर्चा अधिक होता है। यदि हो तो अत्यन्त भाग्य खोटा है, मंगलदेव की शान्ति करायें उपरोक्त प्रश्न का उत्तर केवल खाना १ से कहा गया है।

मगर साथ ही इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये यदि ताला अर्थात् खाना १ में शक्ल शुभ हो और शुभ घरों में तकरार करे तो तकरार का अर्थ यह है कि यदि कोई शक्ल जायचा की एक जगह मौजूद हो और वही शक्ल की दूसरे घर की तकरार मानी जाती है जैसे जायचा के खाना १ में शक्ल हो और यह जायचा में खाना सात व ६ इत्यादि में हों तो खाना १ की तकरार शक्ल ७, ६ कही जाती है तकरार में मानी दुबारा के हैं।

यदि भाग्य घर में ( खाना १ ) शुभ शक्ल हो और वहाँ से किसी दूसरे घर में भी मौजूद हो तो भाग्य उत्तम है। यदि अशुभ घर ( ६, ८, १२ ) में तकरार करे तो भाग्य में कुछ कमजोरी बयान करै। यदि खाना १, १३ शुभ हो तो भाग्य अच्छा है। स्वास्थ्य सन्तोष जनक है। यदि दोनों शक्ल शुभ खारिज हों तो सदैव प्रश्नकर्ता को चिन्ता घेरे रहती है। मान प्रतिष्ठा में विघ्न लग जाया करता है। यदि दोनों शुभ मुनकलिब हों और खाना ५ या ११ में तकरार करैं तो प्रश्नकर्ता का मन चंचल है। किसी नौकरानी दासी के प्रति मान्य अश्लील भाव पैदा हो रहे हैं। यदि शक्ल ÷ खाना १ में हो और खाना ८ में तकरार करै को प्रश्नकर्ता स्वयं व्यभिचार कराने की चेष्टा करता है ( परन्तु रमलज्ञ को इस बात का प्रकाश नहीं करना चाहिये )। यदि शक्ल ÷ खाना १ में हो तो नेत्र पीड़ा से दुःख पावें। यदि खाना १ व. १३ में अशुभ खारिज शक्ल हों तो चिन्ता युक्त हो। यदि खाना १ व. १३ अशुभ दाखिल शक्ल हो तो कष्ट चिन्ता घेरे हैं। यदि खाना १ में शुभ और खाना १३ अशुभ शक्ल हो तो खोटे ग्रहों से पृच्छक चिन्तित है। यदि शुभ बलवान् हो अर्थात् खाना १ में ≐ या ÷ या ⁝ हो और खाना १३ में अशुभ हो तो मध्यम श्रेणी प्रश्नकर्ता का समय व्यतीत हो रहा है। यदि खाना १ में अशुभ निर्बल हो और खाना १३ में शुभ बल युक्त हो तो कहो यद्यपि इस समय खोटे दिन हैं, परन्तु शीघ्र ही कष्ट दूर होगा।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे कोई काम आरम्भ कर रहे हैं परिणाम क्या होगा ?

**उत्तर**—पाँसा डालकर या जो सुगम मार्ग हो प्रस्तार बना लें फिर खाना १ की शक्ल को खाना १० की शक्ल से गुणा करैं हासिल शक्ल को खाना ११ की शक्ल से गुणा करो यदि दोनों शक्ल गुणन फल को शुभ हों तो सफलता होगी। यदि प्रथम १ व १० का गुणन

फल शुभ हो और खाना का गुणन फल अशुभ हो तो प्रथम उत्तम, अन्त में कार्य्य बिगड़ेगा। यदि दूसरी बार शुभ और प्रथम गुणन फल अशुभ हो तो प्रथम काम बिगड़ेगा, अन्त में सफलता होगी। यदि दोनों बार शुभ होवे तो आदि से अन्त तक कार्य्य में सफलता होगी।

प्रश्न—यदि कोई पूँछे कोई काम आरम्भ कर रहे हैं परिणाम क्या होगा ?

उत्तर—उपरोक्त रीत्यानुसार भगवान का ध्यान धर कर प्रस्तार बनावें-उस जायचा के खाना १ से १६ तक के घरों में जितने बिन्दु हों सबको गिन कर ९ से भाग देवें यदि एक बाकी रहे तो शनि दो रहे तो बृहस्पति तीन रहें तो मंगल यदि चार बाकी रहे तो सूर्य्य यदि ५ बाकी रहें तो शुक्र यदि ६ बाकी रहे तो बुध यदि सात बाकी रहे तो चन्द्रमा यदि आठ बाकी रहे तो राहु यदि शून्य रहे तो केतु का ग्रह प्रश्न कर्ता के ऊपर चल रहा है। शनि, मंगल राहु केतु सूर्य्य यह क्रूर ग्रह हैं, शेष ग्रह शुभ माने गये हैं।

अन्य विधि-जायचा बनाकर खाना १,१०,२,१२ की शक्लों के क्रम से रखकर इन्हीं शक्लों को उमहात बनाकर पूरा प्रस्तार फिर बनावें—अब इस नवीन जायचा की खाना १ व १३ तथा ४ व १४, फिर सात व पन्द्रह पुनः १० व १६ खानों की शक्लों को गुणा करके चार और फिर चार से गुणा कर दो फिर उससे १ शक्ल बनाई जावे जो शक्ल आवे उसको देखो यदि $\begin{smallmatrix}-\\ \cdot\\ -\\ \cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\cdot\\ \cdot\\ -\\ -\end{smallmatrix}$ आवे तो सूर्य्य यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\ \cdot\\ \cdot\\ \cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\ -\\ \cdot\\ -\end{smallmatrix}$ आवे तो चन्द्रमा यदि $\begin{smallmatrix}-\\ \cdot\\ -\\ -\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\cdot\\ -\\ \cdot\\ \cdot\end{smallmatrix}$ आवे तो मंगल यदि $\begin{smallmatrix}-\\ -\\ -\\ -\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\ \cdot\\ \cdot\\ -\end{smallmatrix}$ आवे तो बुध यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\ -\\ -\\ -\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\ -\\ \cdot\\ \cdot\end{smallmatrix}$ आवे तो बृहस्पति यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\ \cdot\\ -\\ \cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\ \cdot\\ \cdot\\ \cdot\end{smallmatrix}$ आवे तो शुक्र यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\ -\\ -\\ \cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\ -\\ -\\ \cdot\end{smallmatrix}$ आवे तो शनि देव यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\ -\\ \cdot\\ -\end{smallmatrix}$ आवे तो राहु यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\ \cdot\\ \cdot\\ -\end{smallmatrix}$ आवे तो केतु की दशा प्रश्न कर्ता के ऊपर चल रही है।

तीसरी विधि—प्रस्तार बनाकर जायचा की नवीं शक्ल को देखो उसमें कौन शक्ल है जो शक्ल हो उपरोक्त रीत्यानुसार वही ग्रह चल रहा है रमलज्ञ को बताना चाहिये।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछें मेरा भाग्योदय कब होगा ?

**उत्तर**—इस प्रकार के प्रश्न में ईश्वर का नाम स्मरण करके पहले व लोप हुये नियम के अनुसार जायचा बनावें जायचा के अन्दर शक्ल ÷ को देखो यदि यह शक्ल पृच्छक के जायचा में मौजूद है तो जवाब दो कि आपका भाग्योदय शीघ्र होगा यहि यह शक्ल जायचा उमहात ( १, २, ३, ४ ) में हो तो २० वर्ष की आयु तक यदि बनात में ( ५,६, ७, ८ ) हो तो ४० वर्ष की आयु में यदि खाना ६ से १२ के भीतर हो तो ४० वर्ष के बाद भाग्योदय होगा यदि शक्ल ÷ खाना १३, १४, १५, १६ में किसी घर में हो तो वृद्धावस्था में भाग्योदय होगा—यदि यही शक्ल जायचा के उमहात या बनात आदि किसी घर में हो और इसकी तकरार खाना ४ में शक्ल ⁝ हो तो भी यही कहना चाहिये सारा जीवन सुखमय व्यतीत होगा। यदि संयोगवश शक्ल ÷ जायचा में मौजूद न हो ता अपने प्रस्तार के खाना १ की शक्ल को जायचा की खाना १० शक्ल से गुणा कर लें यदि हासिल शक्ल ÷ या ⁝ या ÷ या ÷ या ≐ या ≐ में से कोई शक्ल जायचा में हो इस शक्ल की तकरार जायचा में जिस घर में हो उसी से हुक्म लगाओ उमहात में २० वर्ष बनात में ४० वर्ष और मुतवल्लिदात पानी खाना ९, १०, ११ व १२ में ४० वर्ष के ऊपर तथा १३, १४, १५, १६ में हो तो वृद्धावस्था में भाग्योदय बताओ।

## दूसरे घर से प्रश्नों का विवरण

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे मुझे माल मिलेगा या जीविका प्र होगी या नहीं ?

**उत्तर**—उपरोक्त लिखे हुये रीति से प्रस्तार बनावें यदि खाना में शक्ल शुभ दाखिल हो इस प्रकार ÷ या ÷ या ⁝ और इ शक्ल का तकरार खाना १०, ११, १५, १६ में से किसी खाना में

वैद्य वासुदेव शर्मा [illegible]
ग्राम [illegible]

या इन सब खानों में इसका तकरार हो तो माल अथवा जीविका सरलता पूर्वक मिलेगी। यदि खाना २ में शुभ दाखिल बलवान हो यानी केवल $\substack{-\\ \cdot\\ \cdot\\ \cdot}$ हो और इसकी तकरार जिस खाना में हो उसके बल या निर्बल के अनुसार हुक्म लगाओ।

यदि खाना २ में शक्ल शुभ खारिज $\substack{\cdot\\ \cdot\\ -\\ -}$ या $\substack{\cdot\\ -\\ -\\ -}$ हो और $\substack{-\\ \cdot\\ -\\ \cdot}$ किसी शुभ घर में पड़ी हो तो भी माल प्राप्त होगा अथवा जीविका भी प्राप्त होगी मगर जो पैदा करेगा वह धर्म के कामों में खर्च भी करता जावेगा।

यदि खाना २ में अशुभ खारिज $\substack{\cdot\\ \cdot\\ -\\ -}$ या $\substack{\cdot\\ -\\ -\\ -}$ हो और शक्ल $\substack{-\\ \cdot\\ -\\ \cdot}$ किस शुभ घर में बलवान होकर बैठी है अर्थात् खाना ३, ४, ७, ८, ११, १२ या १५, १६ में हो तो यद्यपि इस समय पृच्छक व्याकुल है भाग्य हीन है मगर थोड़े ही दिनों बाद धन धान्य की वृद्धि होगी और माल प्राप्त होगा।

यदि खाना २ में शक्ल अशुभ खारिज हो और उस शक्ल की बिलोम (उलटी) शक्ल खाना ७ या ११ या १४ में हो तब भी यही हुक्म होगा कि इस समय तंगी है मगर भगवान की कृपा से शीघ्र लाभ हो जावेगा मगर शर्त यह है कि यदि खाना १५ या १६ भी शुभ दाखिल हो।

यदि खाना २ में $\substack{-\\ -\\ -\\ \cdot}$ हो और इस शक्ल का तकरार खाना १०, ११, १४ में से किसी घर में हो तो माल बड़ी कठिनाई से प्राप्त हो चोरी या धोखा बाजी अश्लील व्यापार से माल मिले मगर टिकेगा नहीं।

यदि खाना २ में शुभ खारिज $\substack{\cdot\\ \cdot\\ -\\ -}$ या $\substack{\cdot\\ -\\ -\\ -}$ हो और शक्ल $\substack{-\\ -\\ -\\ \cdot}$ किसी अशुभ घर ६ या ८, १२ में हो तो माल खर्च बेतुका हो यदि खाना २ में अशुभ खारिज हो तो चोरी आदि का भय हो यदि खाना २ में $\substack{-\\ -\\ -\\ -}$ या $\substack{-\\ \cdot\\ \cdot\\ -}$ हो तो जितना पैदा करेगा उसका दूना खर्चा होगा अर्थात् लेखा जोखा बराबर रहेगा।

**प्रश्न**—मुझको व्यापार करने से लाभ होगा या नहीं ?

**उत्तर**—जायचा रमल बनावें यदि खाना २ में या शक्ल हो तो अच्छा लाभ होगा। यदि या हो तो माल बेचने से लाभ होगा यदि शक्ल या या या या या हो तो हानि होगी इस समय व्यापार करना ठीक नहीं। यदि या है तो मध्यम लाभ होगा यदि या या हो तो लाभ तो होगा मगर खर्च भी होगा। दूसरी विधि जायचा की शक्ल १ को १० से गुणा करो और खाना २ को खाना ११ की शक्ल से गुणा करो और इन दोनों गुणनफल की शक्लों को फिर आपस में गुणा करके एक शक्ल बनावे यदि हासिल शक्ल शुभ दाखिल हो या शुभ खारिज हो और केन्द्र में १, ४, ७, १० में तकरार हो तो काफी नफा होगा यदि शुभ साबित हो और किसी शुभ घर में तकरार करे तो भी लाभ होवे पर क्रय-विक्रय देर से होता रहे। शुभ मुनकलिब का भी यही हुक्म है। यदि अशुभ मुनकलिब या हो या अशुभ खारिज ( या ) हो और किसी अशुभ घर में तकरार करें तो व्यापार में या तो घाटा हो जावे या चोरी आदि होवे यदि या हासिल हो और खाना ३ या ६ या ९ या १२ में तकरार हो अथवा ६ या ८ या १२ में तकरार हो तो व्यापार की वस्तुयें चोरी चली जावें। यदि खाना १, ४, ७, १० अथवा खाना २, ७, ५, ११ में तकरार हो तो माल आधी कीमत पर बिकेगा।

**प्रश्न**—मैं अमुक व्यक्ति से कर्जा लेना चाहता हूँ मिलेगा या नहीं ?

**प्रश्नोत्तर**—भगवान का स्मरण करके पाँसा डालकर प्रस्तार बनावें। खाना २ को देखें यदि खाना २ में शुभ दाखिल या शुभ साबित शक्ल हो और खाना ८ में शुभ खारिज या शुभ मुनकलिब शक्ल हो तो कर्जा मिलेगा यदि खाना ८ में अशुभ दाखिल अथवा अशुभ साबित है तो कर्जा कदापि न मिलेगा। यदि दोनों घरों में

खारिज शक्ल हो तो पृच्छक खुद कर्ज न लेगा। यदि खाना १ में शक्ल $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ और खाना २ में $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ और खाना ८ में $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो तो प्रोनोट या तमस्सुक आदि लिखा कर देवेगा। यदि खाना २ में दाखिल और खाना ८ में $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो तो माँगने का एक भाग देवे दो भाग न देवे। यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो तो जितना माँगा है उससे आधा देवेगा।

प्रश्न—व्यापार या तिजारत करने का परिणाम क्या होगा ?

उत्तर—जायचा रमल बनाकर खाना १ की शक्ल को खाना १० से गुणा करो फिर खाना २ को ११ से गुणा करो फिर दोनों के गुणा से एक शक्ल बनाओ, यदि हासिल शक्ल शुभ दाखिल या शुभ खारिज हो और खाना केन्द्र (१, ४, ७, १०) में अथवा पणफर अर्थात् खाना २, ५, ८, ११ में तकरार करे तो (क्रय-विक्रय) देर से होगा, मगर लाभ होगा शुभ मनकलिब में भी मध्यम लाभ होगा यदि अशुभ खारिज या अशुभ मुनकलिब हो और तकरार खाना ६ या ८ या १२ में करे तो माल खरीद किया नष्ट हो जावे या चोरी जावे।

परीक्षित अनुभव—यदि उपरोक्त शक्ल $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\-\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो और खाना ३ या ६ या ९ या १२ में तकरार करे तो जरूर ही चोरी हो जावे, यदि खाना २, ५ या ८, ११ में तकरार करे तो खरीदा माल आधे दामों पर विकेगा यदि खाना १ या ४ या ७ या १० के खानों में तकरार करे तो बिक्री से लाभ होगा।

प्रश्न—खरीदने तथा बेचने माल के 'प्रति किस प्रकार देखना

उत्तर—जायचा बनाओ यदि खाना २ में शक्ल शुभ दाखिल हो और खाना १० में शुभ खारिज शक्ल हो तो लेने तथा देने वाला दोनों लाभ उठायेंगे। यदि खाना २ में शुभ दाखिल और खाना १० में अशुभ दाखिल हो तो खरीदने वाले को लाभ होगा और बेचने वाला

घाटा उठायेगा। यदि खाना २ में अशुभ खारिज शक्ल हो और खाना १० में शुभ दाखिल हो तो बेचने वाले को लाभ होगा। यदि खाना १, १०, २, ११, १४, १५ मे शुभ दाखिल शक्लें अधिक पड़ें—तो खरीदार माल को लाभ होगा। यदि शक्ल ⁝ खाना १०, ११, १४ में हो तो सौदा किया हुआ फिर जावे, यहाँ तक बयाना भी लौट जावे, लेकिन फिर भी खरीदार न खरीदे यदि शक्ल ⁝ खाना १, ९ या १६ में हो तो बेचने वाले का दिल फिर जावे।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे कि अमुक व्यक्ति धनवान है या निर्धन या साधारण दशा? और साखर्च है या कृपण है?

**उत्तर**—ऐसी दशा में भगवान का ध्यान धर कर पाँसा डालकर जायचा बनावें यदि जायचा के खाना २, ११, १३, १४ में यह शक्लें ÷ या ≑ या ⁝ या ≡ या ÷ या ≐ या ≡ में से कोई शक्ल हो तो कहो कि वह धनवान है, यदि खाना १ में ≐ या ÷ या ≐ या ⁞ या ≡ में से कोई शक्ल हो तो वह साखर्च भी है, यदि ≑ या ≡ या ÷ में से कोई शक्ल खाना २ में हो तो वह सूम (कृपण) है, यदि ÷ ≑ ⁝ खाना १ व २ में हो तो साखर्च हो।

**प्रश्न**—मेरा नौकर या अमुक दासी इमान्दारी से काम करेगी कि नहीं?

**उत्तर**—जायचा बनावें फिर जायचा की खाना २ व ६ की शक्ल को गुणा कर। यदि यह शक्ल और खाना ६ की शक्ल में ÷ या ≑ या ⁝ में कोई भी शक्ल हो तो वह सेवक ईमान्दारी से काम करेगा। यदि ≑ या ≐ या ÷ में से कोई शक्ल खाना ६ में हो तो वह दास या दासी स्वार्थी तथा शत्रु रूप होकर काम करेगी हानि होगी। यदि ÷ या ⁝ या ⁝ में से कोई शक्ल हो तथा खाना ६ की गुणा से पैदा हो और खाना में भी अशुम शक्ल हो तो वह भगोड़ा होगा। रुक कर काम न करेगा यदि ≐ या ≐ इनमें से कोई शक्ल खाना

२×६ से पैदा हो तो वह ईमान्दारी से चिरकाल तक काम न करेगा थोड़े ही दिन ईमान्दारी से काम करेगा। यदि या या में से कोई शक्ल आवे तो बहुत दिनों तक नेक चलनी से काम करेगा। इसके अलावा यदि जायचा के खाना ५ में या या या या या या या इन शक्लों में से कोई शक्ल हो तो भी नौकर ईमान्दारी से काम करेगा, यदि में से कोई शक्ल खाना ५ में हो तो चोर बेईमान तथा भगोड़ा होगा यदि हो तो चालाक होगा। यदि खाना २ व ११ में या या में से कोई हो तो मध्यम श्रेणी में रहकर काम करेगा।

प्रश्न—यदि कोई पूंछे अमुक व्यक्ति के साथ मिलकर व्यापार में लाभ होगा कि नहीं ?

उत्तर—जायचा रमल बनावें यदि खाना १ व ७ व १३ में शुभ शक्लें हों तो दोनों के साझेदारों में मेल रहकर लाभ होगा यदि खाना १ में अशुभ शक्ल और खाना ७ में शुभ शक्ल हो तो प्रश्नकर्ता को हानि होगी। यदि खाना १ की शक्ल खाना ५ या ९ या १३ में तकरार करे ( अर्थात् इन घरों में भी वही शक्ल जो खाना १ में हो ) आवे तो पृच्छक को लाभ होगा। यदि खाना ७ की शक्ल खाना ६ या ८ या १२ अशुभ घर में तकरार करे तो दूसरे साझीदार को हानि उठानी पड़ेगी । यदि खाना १ की शक्ल अशुभ हो तो प्रश्नकर्ता को हानि हो यदि खाना ७ की शक्ल अशुभ हो तो दूसरे साझीदार को बेइमानी करनी पड़े, यदि खाना १, ७ दोनों में अशुभ शक्ल आवें तो दोनों में झगड़ा होगा नुक़सान होगा।

दूसरी विधि—परीक्षित खाना २ और ८ को देखें जिधर शुभ हो वही लाभ उठावे । खाना २ प्रश्नकर्ता का घर है खाना ८ साझीदार का है जिस तरफ शक्ल शुभ और बली हो वही लाभ उठावे।

प्रश्न—यदि कोई पूंछे अमुक व्यक्ति बाहर गया है कब आवेगा ?

उत्तर—जायचा बनाकर खाना ४ की शक्ल को देखो यदि अशुभ हो और उस शक्ल की विलोम (उलटी) शक्ल, जैसे (≐ की विलोम ≡ अथवा ÷ की विलोम ÷ इत्यादि)। खाना ६ या ११ में पड़ा हो तो वह व्यक्ति राह में है और शीघ्र आवेगा। यदि खाना २ में शक्ल ÷ या ≡ या ⁝ हो और खाना ७ में ≐ या ≡ या ÷ हो तो भी वह व्यक्ति शीघ्र आवेगा। यदि खाना २ में ÷ ≡ या ≡ हो और खाना १ में ≐ या ÷ या ≡ आवे तो भी शीघ्र आवेगा। यदि खाना ७ की शक्ल शुभ खारिज हो और खान १, ९, ११, १४, १६ में से कोई शक्ल शुभ दाखिल हो तो गायब जल्दी आवे। यदि खाना ७ की शक्ल खाना ५ या ११ में तकरार करै तो पत्र या खबर शीघ्र आवे। यदि खाना १ व १० में शक्ल ⁝ हो तो भी शीघ्र आवेगा। यदि खाना ७ में शक्ल खारिज हो और उसकी विलोम शक्ल खाना ३ या ६ में हो तो वह व्यक्ति या गायब रास्ता में है शीघ्र आवेगा। यदि शक्ल खाने ७ खारिज तथा खान ६ की शक्ल दाखिल हो और तकरार खाना ११ में करै तो भी शीघ्र आया चाहता है। यदि खाना १ की शक्ल खाना ६ में हो और शक ÷ खाना १५ में हो या खाना ८ या १२ में ÷ हो तो व व्यक्ति बीमार है।

प्रश्न—यदि कोई पूंछे आज बादल हो रहा है वर्षा होगी या नहीं?

उत्तर—पाँसा डालकर जायचा बनावें और देखो खाना १, और खाना १० में शक्लैं जल तत्व की हों तो वर्षा खूब होगी ज तत्व की शक्लें हम लिख चुके हैं फिर भी सुविधा के लिये लिखते जल, तत्व की शक्लैं ≡ ÷ ÷ ⁝ यह हैं। यदि खाना १ में श जल तत्व की हों और खाना ४ व १० में भी हो तो इस जगह न ब सेगा यदि संयोगवश हुई भी तो थोड़ी वर्षा होगी, परन्तु अन्य स्था

में खूब वर्षा होगी यदि खाना १ और ४ में शक्ल जल तत्व की हो और खाना १० में शक्ल जल वाली न हो तो बादल घिरा है यह नहीं बरसेगा मगर अन्य बादल आकर बरसेंगे यदि खाना १ में जल विन्दु की शक्ल न हो अर्थात् ≡ ≡ ÷ ⁝ में से कोई शक्ल न हो तो उस शक्ल को खाना १० की शक्ल से गुणा करें यदि हासिल शक्ल जल की हो तो देखो यह शक्ल प्रस्तार में दाहिनी तरफ है या बाईं तरफ है और जल तत्व का बिन्दु बलवान् है या नहीं अस्तु, जिस घर में है उसको उस खाना की शक्ल से गुणा करो यदि हासिल शक्ल में जल तत्व का विन्दु (जैसे ÷ ⁝ ⫶ अथवा ≡ ≡ ÷ ⁝) हो तो खूब वर्षा होगी।

**परीक्षित अनुभव**—जायचा में शक्ल ≡ को देखो कहाँ पड़ी है यदि उसकी साथी शक्ल ⁝ भी जल तत्व के घरों में अर्थात् खाना ३, ७, ११, १५ में हो तो खूब वर्षा होगी। जायचा में ≡ और ≡ की तकरार जितनी अधिक जायचा में हो उतनी ही वर्षा होगी, यह भी ध्यान रक्खें कि शक्ल ≡ पानी की खास शक्ल है और शक्ल ≡ झड़ी की है यदि दोनों बलवान हो तो वर्षा भी हो और कई दिन झड़ी लगी रहे शक्ल ≡ खाना ११ में होवे तो झड़ी काफी लगी रहे यदि शक्ल ≡ खाना ४, १०, १२, १६ में हो तो वर्षा खूब हो, यदि ≡ का मित्र ÷ शक्ल भी जायचा में हो तो ओले भी पड़ें और बिजुली गिरे यदि ≡ खाना १० में हो तो हवा खूब चले वर्षा कम हो।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे मैं भोजन करके आया हूँ या भूखे पेट आया हूँ?

**उत्तर**—इसी नियत से जायचा बनाओ यदि खाना २ और ६ में दोनों में शुभ दाखिल शक्ल हो तो पेट भरकर खाया है यदि केवल खाना २ दाखिल हो तो पृच्छक कुछ खाकर आया है, यदि दोनों जगह मुनकलिब शक्ल हो तो पेट विकार अथवा अन्य कारण से

नहीं खाया है। खाना २ की शक्ल जितनी जगह तकरार करे उतने ही प्रकार के भोजन का बयान करे। यदि शक्ल $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ खाना १ में हो तो या तो स्नान करके या पहले जल पी लिया है तब खाया है यदि खाना २, ६ की शक्ल खारिज है तो भूखा है। "कहो" यदि खाना २ की शक्ल खाना ८ में तकरार करे तो चिन्तित होकर अथवा क्रोध में या किसी मृतक प्राणी के प्रति भोजन किया है। यदि खाना २ की शक्ल खाना सात में तकरार करे तो दूसरे घर का भोजन खाया होगा यदि खाना ६ या ९ मे तकरार करे तो बासी भोजन किया है। यदि खाना २ की शक्ल खाना ४ में तकरार करें तो खुद अपने घर पर ही खाया है। यदि खाना १ में ⁞ या $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ हो और यह शक्ल किसी शुभ घरों में तकरार करै तो निमंत्रग अथवा दावत का भोजन किया है।

**प्रश्न**—यदि कोई पूछै कि धन या माल मेरे पास रुकेगा या नहीं?

**उत्तर**—जायचा बनाकर खाना २ को देखैं यदि उसमें शक्ल शुभ दाखिल या शुभ साबित हो और खाना ४ या ५ में तकरार करै या उसी हैसियत की शक्ल खाना ४ या ५ में हो तो माल रुकेगा यदि इसके विपरीत हो तो धन न रुकेगा, यदि खाना ४, ५ में शुभ दाखिल के अतिरिक्त शुभ खारिज हो तो धन शुभ कार्यों में लगेगा। यदि शुभ शक्ल इन घरों में हो तो धन पास न रहेगा। या तो चोरी से हानि होवे झगड़े अदालत आदि में धन खर्च हो जावे।

दूसरी विधि खाना १०, ८ की शक्लों को गुणा करैं, गुणन फल को खाना १४ की शक्ल से फिर गुणा करै अस्तु, यह शक्ल शुभ दाखिल या शुभ साबित हो तो धन स्थिर रहकर वृद्धि होवे यदि अशुभ दाखिल या अशुभ साबित हो तो मध्यम श्रेणी में रहे। यदा कदा खर्चा लगता जावे। यदि अशुभ खारिज शक्ल हो तो धन नष्ट हो जावे।

## नौकरी का प्रश्न

उपरोक्त रीत्यानुसार से नौकरी रहेगी या चली जावेगी प्रश्नोत्तर निकालना चाहिये।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे रोगी को किस प्रकार की दवा दी जावे जिससे लाभ हो ?

**उत्तर**—जायचा बनाकर खाना २ की शक्ल को देखें यदि उस शक्ल में बिन्दु अग्नि तत्व का हो तो दवा तथा भोजन गर्म खुश्क देना चाहिये। यदि वायु तत्व का बिन्दु हो तो गर्म तर दवा देना चाहिये यदि जल तत्व हो तो सर्द-तर दवा दी जावे तो पृथ्वी तत्व का बिन्दु हो तो सर्द खुश्क दवा देना चाहिये यदि २ या ३ तत्व के बिन्दु खुले हो तो उन तत्वों के मिज़ाज के अनुसार दवा देनी चाहिये।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे मेरा पशु खो गया है मिलेगा कि नहीं ?

**उत्तर**—इस नियत से उपरोक्त रीत्यानुसार प्रस्तार बनाके दूसरे घर को देखै यदि उसमें शुभ दाखिल शक्ल हो तो जल्दी मिलेगा, यदि अशुभ दाखिल होवे तो बहुत दिनों में पावे यदि खारिज शक्ल हो तो न पावेगा यदि मुनकलिब हो तो खर्च लगेगा देर में मिलेगा सुख साबित आवे तो थोड़ा खर्च लगे और थोड़े दिनों बाद पशु को पावे।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे कि अमुक व्यक्ति के कुछ माल अमानत रूप में रखना चाहता हूँ—अस्तु, वह व्यक्ति धरोहरि में बेईमानी तो न करेगा ?

**उत्तर**—इस प्रकार के प्रश्न में प्रस्तार बनावें। खाना २ व ६ की शक्ल को गुणा करें यदि शुभ दाखिल अथवा शुभ साबित शक्ल आवे

तो वह अमानत देवेगा अर्थात् ईमानदारी बर्तेगा यदि शुभ या अशुभ मुनकलिब हो तो न देवेगा यदि अशुभ दाखिल या अशुभ साबित तथा अशुभ खारिज आवे तो वह अमानत देने में टाल-मटूल करैगा।

**प्रश्न**—मेरी अमुक वस्तु चोर ले गया है या मैं स्वयं कहीं भूल गया हूँ, मिलेगी कि नहीं ?

**उत्तर**—जायचा रमल बनावें फिर खाना २ देखो यदि शक्ल ÷ या ≕ या ⁝ हो तो प्रश्न कर्ता खुद कहीं भूल गया है चोर ने नहीं लिया है वह वस्तु पृच्छक के घर में कहीं पड़ी है। यदि खाना २ में ≡ हो तो वह वस्तु घर में है मगर प्रश्न कर्ता भूल गया है, यदि ≐ या ≐ हो तो भी पृच्छक कहीं रखकर भूल गया है या किसी घर के आदमी ने लिया है। यदि ÷ या ⁝ हो तो बेशक उस वस्तु को चोर ले गया है, यदि ≕ या ⁝ हो तो वह वस्तु उसी घर में गुप्त रूप से सुरक्षित पड़ी है, यदि ≡ है तो वह चीज घर में तो है मगर उसका मिलना कठिन है। यदि खाना २ में ÷ या ⁝ हो तो कहीं घर में इधर-उधर हो गई है, यदि ÷ यह बतायें या ÷ हो तो चोर ले गया है यदि खाना २ की शक्ल ३ या ६ में तकरार करे तो पृच्छक कहीं रास्ता या बाजार में भूल गया है। यदि खाना ४ में तकरार करे तो किसी मकान में रखकर भूल गया है, यदि खाना २ की शक्ल खाना ६ या १२ में तकरार करे तो चोरी हो गई है, यदि खाना २ की शक्ल दाखिल हो और अशुभ घर, खाना ६ या ८ या १२ में तकरार करै या उलट जावे यानी उस शक्ल का विलोम जैसे ≡ या ≐ हो जावे तो भी माल चोरी गया है।

**प्रश्न**—खोया हुआ माल मिलेगा या नहीं ?

**उत्तर**—जायचा बनावे यदि खाना ८ की शक्ल दाखिल हो तो न मिलेगा यदि खारिज हो और खाना २ दाखिल हो तो माल मिलेगा यदि खाना ८ अशुभ खारिज और खाना २ अशुभ दाखिल हो तो बड़े

परिश्रम से मिले यदि खाना २ अशुभ खारिज और ८ वाँ घर अशुभ दाखिल हो तो माल न मिलेगा बल्कि तलाश में और खर्च होगा। यदि खाना ८ में मुनकलिब हो और खाना २ दाखिल हो तो कुछ मिले कुछ न मिले, यदि खाना ७ व ८ की शक्ल खाना १ या २ या ३ या ४ में तकरार करे तो चोर और माल दोनों मिले, यदि केवल ८ की शक्ल उपरोक्त घरों में तकरार करे तो चोर मिलेगा माल न मिलेगा।

## अथ तीसरे घर से प्रश्नोत्तर निकालने की रीति

प्रश्न—यदि कोई पूछे कि मेरे घर बहिने अधिक हैं या भाई अधिक हैं ?

उत्तर—इसी नियत से जायचा बनावें फिर प्रस्तार में देखो यदि शक्ल ⫶ की तकरार प्रस्तार में बहुत हो तो भाई अधिक हैं यदि ☰ को तकरार अधिक हो तो बहिन अधिक हैं। यदि संयोग वश यह शक्लें जायचा में न हों तो जायचा के अग्नि तथा वायु तत्व के कुछ बिन्दु गिनें फिर जल तत्व तथा पृथ्वी तत्व के बिन्दु को भी गिनो। यदि अग्नि, वायु के बिन्दु अधिक हो तो भाई ज्यादा है। यदि जल अथवा पृथ्वी के बिन्दु अधिक हों तो बहनें अधिक हैं—बयान करना चाहिये।

प्रश्न—कितने भाई अथवा बहिनें हैं ?

उत्तर—जायचा बनाकर शक्ल ÷ को देखो जायचा के अन्दर कितने घरों में है और वह घर पुल्लिंग हैं अथवा स्त्री लिंग हैं, पुल्लिंग के घर १, २, ५, ६, ९, १०, १३, १४ है, शेष स्त्री के घर हैं अस्तु, जितनी जगह नर के घरों में शक्ल हो उनको दूना करके भाइयों का संख्या कहो और जितनी जगह स्त्री के घर में शक्ल ÷ हो उनकी दूनी संख्या करके बहनों की संख्या बतावें।

दूसरी विधि जायचा के बिन्दु खाना १ से १५ तक गिनो फिर जायचा में जितनी पाई ( – ) हो उन सबको गिनो यदि बिन्दु अधिक हों तो भाई ( – ) अधिक हों तो बहनें ज्यादा है।

**प्रश्न**—यदि कोई पूंछे कि निकट की यात्रा करना चाहता हूँ यात्रा होगी कि नहीं ?

**उत्तर**—जायचा बनावें यदि ताला यानी खाना १ में शक्ल खारिज हो और खाना ३ में तकरार करे और खाना ४ भी खारिज हो तो यात्रा होगी यदि खाना ३ की शक्ल खाना से भी होवे अर्थात् तकरार करे तो भी जावेगा यदि खाना १ की शक्ल खाना ९ या १५ में तकरार करे तो भी यात्रा होवे यदि मुनकलिब शक्ल होगी तो यात्रा न होगी यदि संयोग वश हुई भी तो मार्ग में लौट आवेगा। यदि खाना १ की शक्ल खारिज हो और खाना ३ या ९ में उसका विलोम ( उलटी शक्ल) हो, जावे और खाना २ व ४ में शक्लें खारिज हों तो जरूर यात्रा होगी यदि खाना १ में शक्ल दाखिल और वही शक्ल खाना ३ में विलोम यानी खारिज हो जावे तो भी यात्रा होगी, यदि खाना ३ की शक्ल खाना ९ में तकरार करें तो भी यात्रा होगी, यदि खाना ४ की शक्ल खाना १२ में तकरार करे तो भी जावे, खारिज से जल्दी, दाखिल से देर में जावे। यदि खाना ४ की शक्ल खारिज हो और खाना ९ में दाखिल होवे तो भी जावेगा यदि $\overset{\cdot}{\equiv}$ खाना ३ या ७ में हो और $\overset{\cdot}{\equiv}$ या $\underset{\cdot}{\equiv}$ खाना २ में न हो तो जरूर जावेगा यदि खाना १ में शक्ल खारिज हो और खाना ४ में दाखिल हो तो जाना न होगा। यदि खाना ४ में दाखिल तथा खाना ५ में खारिज हो तो जाना होगा।

**प्रश्न**—निकट यात्रा से लाभ होगा कि नहीं ?

**उत्तर**—इस नियत से जायचा बनावें यदि खाना ३ की शक्ल शुभ हो और शुभ घर में तकरार करै ( शुभ घर केन्द्र के ) १, ४, ७,

१०) के माने जाते हैं ) तो लाभ होगा वर्ना खाना १ व २ की शक्ल को आपस में गुणा करे यदि हासिल शक्ल शुभ हो और शुभ घर में तकरार करैं तो लाभ होगा यदि ऐसा न हो तो लाभ न होगा।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे कि मैं अमुक व्यक्ति से शास्त्रार्थ करना चाहता हूँ कौन विजयी होगा ?

**उत्तर**—जायचा बनावें खाना १ व ३ की शक्ल को गुणा करै यह गुणन फल प्रश्नकर्ता का है फिर खाना ७ को ६ से गुणा करें यह प्रतिवादी की शक्ल है हासिल शक्ल को देखो जिसकी तरफ इन शक्लों में से कोई शक्ल हो 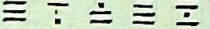 वही विजयी होगा। यदि १×३ से 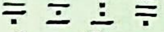 इनमें से कोई शक्ल निकले तो पृच्छक हारेगा प्रतिवादी जीतेगा यदि दोनों बराबर शक्लैं हो तो बराबरी रहेगी।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे मुझे विद्या प्राप्त होगी या नहीं ?

**उत्तर**—जायचा बनावें खाना १ व ३ व ६ को देखो यदि इसमें शक्ल 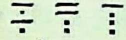 हो तो विद्या प्राप्त होगी यदि भिन्न शक्लैं हों तो ३ को ६ से गुणा करैं हासिल शक्ल को जायचा के खाना १ की शक्ल से गुणा करे यदि हासिल शुभ दाखिल शक्ल हो तो विद्या प्राप्त होगी और लाभ भी होगा अशुभ खारिज या मुनकलिब अथवा अशुभ दाखिल या अशुभ साबित से विद्या कम प्राप्त होगी और लाभ न होगा।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे कि अमुक बालक को पाठशाला भेजना चाहता हूँ, बच्चे का परिणाम क्या होगा पढ़ेगा या भागेगा ?

**उत्तर**—जायचा रमल बनावें और खाना ४ को देखें यदि उसमें शुभ दाखिल शक्ल हो तो लड़का पाठशाला में रुकेगा और

पढ़ेगा यदि अशुभ दाखिल या अशुभ साबित हो तो पाठशाला में टिकेगा नहीं—पढ़ने में आलस्य करेगा। यदि खारिज या अशुभ मुनकलिब शक्ल हो तो भाग जाया करेगा पढ़ेगा नहीं।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे मैं अमुक स्थान से आ रहा हूँ मार्ग में क्या दशा गुजरी ?

**उत्तर**—इस नियम से भगवान का स्मरण करते हुये जायचा रमल बनावें और खाना ३ को देखें यदि ≡ शक्ल हो तो रास्ते में कुत्ते ने काटा अथवा भौंका होगा या पृच्छक को पाँव उस पर पड़ गया होगा अथवा ठोकर लगी होगी यदि शक्ल ≡ होगी तो पाँव उलट गया या मोच आ गई होगी। यदि शक्ल ÷ हो और खाना ५ में तकरार करे तो मार्ग में किसी प्रेमी या प्रेमिका से भेंट हुई।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे मेरा भाई मुझ से प्रेम करता है या नहीं तथा लिपटेगा या झगड़ा करेगा ?

**उत्तर**—प्रस्तार बनाकर देखो यदि खाना १ व ३ दोनों घरों में शुभ शक्लैं हों तो आपस में प्रेम बना रहेगा यदि यह शक्लें दोनों एक ही ग्रह की हों जैसे ≐ ≐ बृहस्पति की ÷ ⫶ शुक्र की ≐ ÷ सूर्य की ≡ ⫶ बुध की ≡ ⋮ चन्द्रमा की ÷ ≡ शनि की ≐ ÷ मंगल की ÷ ≐ राहु केतु की अस्तु, एक ही ग्रह की हों तो अगाध प्रेम रहेगा यदि भिन्न २ शक्लैं हों तो खाना १ प्रश्न कर्ता का तथा खाना ३ भाई का देखें किस घर में शुभ शक्ल है जिस घर में शुभ शक्ल हो वही प्रेम करता है दूसरा मतलबी भाई है, यदि इनमें एक की तरफ राहु केतु की शक्ल हो और दूसरी तरफ चन्द्रमा या बृहस्पति की शक्ल हो तो दिखावे में तो खूब प्रेम होगा मगर भीतर से कपट होगा यदि खाना ३ की शक्ल खाना ७, ११ या १५ में से किसी घर में तकरार करे तो दोनों में प्रेम बना रहेगा, वर्ना शत्रुता रहेगी।

यदि खाना १, ३, ४ शुभ हो और शुभ घरों में तकरार करें तो सदैव प्रेम बना रहेगा यदि इनकी तकरार खाना ५ या ११ में हो तो भी प्रेम रहेगा यदि खाना ३ की शक्ल खाना ६ या ८ या १२ में हो तो परिणाम शत्रुता का रहेगा।

प्रश्न—यदि कोई पूंछे मैं अपने प्रेमी अथवा प्रेमिका के पास आदमी भेजता हूँ वह घर में है कि नहीं अथवा मिलेगा या नहीं ?

उत्तर—इस नियत से प्रस्तार बनावें, यदि खाना ५ में शुभ खारिज ≐ या ∸ हो और खाना ८ में ≡ हो तो वह न मिलेगा फिर खाना ३ व ५ की शक्ल को गुणा करो यदि वह अशुभ खारिज हो और खाना १ में तकरार हो तो नाखुशी से मिलेगा यदि खाना ५ व ८ में शुभ दाखिल या अशुभ साबित शक्लैं हो तो मिलेगा यदि अशुभ दाखिल या अशुभ साबित हो तो मिलेगा मगर प्रसन्न न रहेगा। यदि खाना ५ की शक्ल उमहात ( १, २, ३, ४ ) में हों और यह दाखिल हो तो मिलेगा यदि खाना ७ की शक्ल शुभ हो और उमहात ( १, २, ३, ४ ) में तकरार करे और यह शक्ल खारिज हो या इस शक्ल का विलोम ( उल्टी शक्ल ) उमहात में हो तब भी यही हुक्म होता है। यदि खाना ७ की शक्ल अशुभ खारिज या अशुभ दाखिल या अशुभ मुनकलिब हो तो वह प्रेमी दुखी अथवा कष्ट में है। यदि खाना ३ में शक्ल ⩸ हो तो रास्ते में आदमी को कुत्ता काटे या चोट लगेगी। यदि ≡̣ हो तब भी कष्ट पावेगा यदि ÷ हो तो मार्ग ही में जिससे मिलने जाते हैं मुलाकात हो जावेगी और कार्य बन जावेगा।

प्रश्न—मुदई ( वादी ) व मुद्दाअलेह ( प्रतिवादी ) में किसकी जीत होगी ?

उत्तर—इसी नियत से जायचा बनावें मान लो जायचा इस

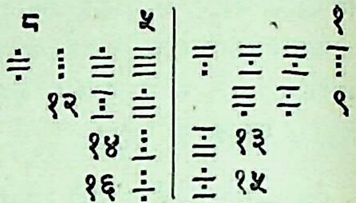

प्रकार बनाया गया खाना १ को १० से गुणा करै यह शक्ल ⫶ आई यह शक्ल मुद्दई की अथवा प्रश्नकर्ता की है फिर खाना ७ व १० को गुणा कर जो दूसरी पार्टी या प्रतिवादी का घर है तो यह शक्ल ⋮ आई। अब देखो दोनों में से कौन बली है क्योंकि कायदा है जिधर की शक्ल वली हो वही जीतेगा।

अस्तु इस प्रकार के क्रम ≐ ⩧ ≐ ⫧ ÷ यह पाँच शुभ हैं और ÷ ≐ ≡ ⋮ ≡ यह पाँच अशुभ मानी गई हैं और ⋮ ÷ मध्यम शुभ हैं और ÷ ≡ अशुभ हैं और ⫶ ⫶ मध्यम शुभ मानी गई है। एक गूढ़ बात यह भी ध्यान रक्खो उपरोक्त गुणनफल की शक्ल वादी अथवा प्रतिवादी की जिसकी शक्ल खाना १५ में होगी अथवा वह शक्ल शकुन क्रम से अपने घर की मालिक होगी तो हाकिम उसी की तरफ होकर न्याय करेगा—यदि दोनों शक्लें बराबर बराबर होवें तो सुलह हो जावेगा। उपरोक्त जायचा में प्रश्नकर्ता की तरफ ⫶ शुभ है उधर ⋮ अशुभ है अतः मुद्दई जीतेगा।

प्रश्न—यदि कोई पूँछे अमुक व्यक्ति विद्वान् है या खाली ढकोसला बनाये हैं ?

उत्तर—जायचा बनाकर खाना ५, ६, १० को देखो यदि इन घरों में शुभ शक्लें हो तो विद्वान है यदि अशुभ शक्लें हो तो आडम्बर बनाये हैं कम पढ़ा है मीजान (खाना १५) में शक्ल ÷ या ≐ हो तो भी कम पढ़ा है यदि ⋮ शक्ल आवे तब भी यही कहो मूर्ख है। दूसरी विधि—खाना १, १ को गुणा करो फिर खाना ३, ११ की शक्ल को गुणा करो हासिल शक्लों को फिर आपस में गुणा करो यदि गुणनफल इन शक्लों में से ⩧ ⫧ ÷ ≡ ≡ ⫶ कोई शक्ल हो तो विद्वान हैं, यदि ≐ ÷ ≐ ⋮ हो तब भी मध्यम श्रेणी का विद्वान है अन्य से मूर्ख बतावें।

प्रश्न—मेरे स्वप्न का फल कैसा है ?

उत्तर—प्रस्तार बनाकर खाना ३ की शक्ल को शक्ल ÷ से गुणा करें जो शक्ल हासिल हो उसका प्रस्तार के खाना १ की शक्ल से गुणा करें यदि हासिल शक्ल शुभ हो तो स्वप्न का फल शुभ जानना लाभ होगा यदि अशुभ हो तो दुःख चिन्ता व्यथा पैदा होगी इसी शक्ल से रमलज्ञ फल को कहे यह दिन में स्वप्न देखने की रीति है रात्रि के स्वप्न का हाल खाना ९ के बयान में लिखेंगे ।

## चौथे घर के प्रश्नोत्तर

प्रश्न—यदि कोई पूँछे मेरे मकान की दशा क्या है शुभ है या अशुभ ?

उत्तर—जायचा बनाकर खाना ४ को देखो यदि उसमें शक्ल ⋮ हो तो कहो प्रश्न कर्ता दो घर रखता है और उसमें वृक्ष भी है जिसमें फल लगते हैं यदि उसमें शक्ल ≡ या ≐ या ⋮ या ÷ में से कोई शक्ल हो तो कहो पृच्छक का मकान खराब है इस मकान से चिन्तित रहता है और उसमें कोई अग्नि का घर या भट्टी है । यदि ⁞ हो तो कहो दीवार मकान की फट गई है या कच्चा मकान है यदि ⋮ हो तो कड़ियाँ छत की टूटी हुई हैं यदि ≐ हो तो मकान में चूल्हा या भट्टी था अग्नि का घर हो या पत्थर रक्खे है अथवा इस मकान में कोई मार डाला गया होगा यदि ≡ हो तो इसमें प्रायः साँप निकलते हैं अथवा कोई कब्र प्राचीन की होगी लोग दुःखी रहते होंगे और मकान के भीतर दक्खिन तरफ एक अँधेरी कोठरी होगी सम्भव है उसमें धन हो यदि शक्ल खाना ४ ≡ हो और खाना १२ में तकरार करे तो इस मकान में कोई आदमी कैद किया होगा या कत्ल हुआ होगा जिस कदर ≡ की तकरार जायचा में ज्यादा हो तो उसमें साँप खूब होंगे ।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे अमुक व्यक्ति घर में है कि नहीं ? मिलेगा या नहीं ? और उससे लाभ होगा ?

**उत्तर**—जायचा बनावें यदि खाना १ में शक्ल खारिज हो औ और वह उलट कर खाना ४ में हासिल हो जावे तो घर पर है मिलेगा यदि खाना ४ की शक्ल खाना ७ या ८ या ६ में तकरार करै तो नहीं है । यदि उमहात ( १, २, ३, ४ ) में शक्ल ÷ ≡ ⋮ इनमें से कोई शक्ल हो तो वह घर पर है। यदि खाना ४ व ७ दाख़िल हों या साबित हो तब भी मौंजूद मकान पर मिलेगा यदि शुभ दाख़िल या शुभ साबित हो तो सुखपूर्वक है यदि अशुभ हो तो चिन्तित दशा में मिलेगा यदि खाना ३ की शक्ल ७ या ६ या १२ में हो तो हुक्म होता है कि मकान से कहीं बाहर गया है यदि शक्ल ⋮ अग्नि तथा वायु तत्व में हो या शक्ल ÷ खाना ७ या १३ या ५ से किसी घर में हो तो न मिलेगा । यदि खाना ७ में ≑ हो या ख़ाना १० में हो तो मुलाकात होगी । यदि इन घरों के अलावा ख़ाना ३ या ९ में होवें तो मुलक्कात न होगी अथवा शक्ल ≐ या ≡ में से कोई खास शक्ल ख़ाना १ में होवे तो वह स्वयं अपने को छिपायेगा यदि ÷ ≡ ÷ ≐ में से कोई ख़ाना शक्ल खाना १ में हो तो मिलेगा मगर काम न बनेगा यदि ÷ हो तो रास्ता ही में मिलेगा अथवा खाना ७ व ८ में शुभ शक्ल हो तो मुळाकात होगी और लाभ भी होगा यदि खाना ७ में अशुभ व खाना ८ में शुभ हो तो मुळाकात होगी मगर लाभ न होगा, यदि खाना ७ शुभ व ख़ाना ८ अशुभ हो तो मिलेगा मगर लाभ न होगा ।

**प्रश्न**—मुझको इसी स्थान पर लाभ होगा या अन्य स्थान पर जाने से लाभ होगा ?

**उत्तर**—इसी नियत से जायचा बनावें यदि खाना ४ शुभ हो और खाना ७ अशुभ हो तो इसी जगह पर रहने से लाभ होगा यदि

खाना ७ भी शुभ हो तो दोनों जगह बराबर रहेगी यदि खाना १ व ४ अशुभ हो और खाना ७ शुभ हो तो दूसरी जगह पर जाने से लाभ होगा।

**दूसरी विधि**—केवल खाना ४ को देखो यदि इसमें शक्ल ∸ या ⩪ या ⁝ हो तो इसी जगह पर रहने से लाभ होगा यदि ⩦ या ≟ हो तो भी इसी स्थान पर लाभ होगा मगर देर से लाभ होगा तथा प्रश्नकर्ता अन्य कई कारणों से इस स्थान को छोड़ नहीं सका है। यदि ÷ ⋮ ≐ ≗ इन शक्लों में से कोई हो तो पृच्छक को दूसरी जगह जाने से लाभ होगा। यदि ⩮ या ⩧ हो तो यद्यपि इस जगह पर कष्ट तथा चिन्ता धनाभाव है मगर वह इस जगह से दूसरी जगह जावेगा। यदि खाना १ की शक्ल खाना ६ में तकरार करैं और खाना ११ में ⩪ और खाना ७ में ⩦ हो दूसरे मकान पर जाने से लाभ होगा यदि खाना १० की शक्ल शुभ तथा बलवान अपने तत्त्व के अनुसार हो तो दूसरी जगह जाने से लाभ होगा। इस शर्त पर खाना ४ भी शुभ हो अथवा खाना १ व ४ से और २ व १२ से गुणा करके फिर दोनों की गुणा करके एक शक्ल बनावे यदि शुभ दाखिल हो तो इसी जगह पर रहने से लाभ होगा।

**प्रश्न**—क्या पिता जी मुझ पर प्रसन्न रहेंगे और उनसे लाभ होगा ?

**उत्तर**—इस नियत से जायचा बनावे यदि खाना ४ शुभ दाखिल हो और तकरार उसका खाना १ या ३ या ५ या ९ या ११ या १३ या १६ में से किसी घर में हो अथवा १४ घर में भी हो तो पिता खुश रहेगा और लाभ होगा यदि अशुभ हो और तकरार अशुभ घर ( ६–८–१२ ) मे करे तो अप्रसन्न रहेगा लाभ न होगा अथवा खाना १ व ४ को गुणा से यदि शुभ दाखिल या शुभ साबित हो तो पुत्र व पिता के बीच प्रेम रहेगा शुभ खारिज या मुनकलिब होने से पिता पुत्र में वियोग तो रहता है मगर प्रेम बना रहेगा, अशुभ के होने से न तो प्रेम होगा न लाभ होगा।

**प्रश्न**—यदि कोई प्रश्न करे मुझको खेती करने से लाभ होगा ? या हानि होगी ?

**उत्तर**—जायचा बनावें यदि खाना ४ व ७ में शुभ दाखिल जल तत्व या वायु तत्व की शक्लै हो अर्थात् ≐ या ⫶ या ÷ या ⋮ या ÷ ≐ ⫶ ⋮ में से कोई शक्ल हो तो इच्छानुसार पैदावार होगी यदि अशुभ शक्ल अग्नि तत्व ≑ ÷ ⊥ ⋮ में से कोई शक्ल हो अथवा पृथ्वी तत्व की शक्ल ( ⫶ ÷ ≡ ≡ ) में से कोई शक्ल हो तो पैदावार कम होगी। यदि खाना १, ४, १० में शक्लें जल तत्व की हों तो निलाब ( घोरवृष्टि ) से हानि होगी, यदि अग्नि तत्व की हो तो सूखा से हानि होगी यदि वायु या पृथ्वी की शक्ल कोई हो तो पैदावार अच्छी होगी शक्ल ⋮ या ÷ का होने से हानि होगी।

**प्रश्न**—मैं एक मकान अथवा जमीन खरीदना चाहता हूँ लाभ रहेगा या नहीं ?

**उत्तर**—इस नियत स जायचा रमल बनावे यदि खाना १ व ४ व १० तीनों घरों में ÷ ⋮ ÷ ÷ से कोई शक्ल हो तो घर मकान सदैव खाली पड़ा रहेगा या बिक जावेगा लाभ न होगा। यदि खाना ४ में ÷ या ⋮ हो और १ व १० में तकरार करै तो अधूरा मकान रहेगा गिर जावेगा। यदि ≐ व ≡ की तकरार प्रस्तार में बहुत हो तो सदैव कष्ट इसमें रहेगा अथवा खाना १ व ४ की गुणा से शुभ दाखिल शक्ल हो तो लाभ रहेगा जन्म शक्लों से हानि होगी।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे यह मकान शुभ है या अशुभ ?

**उत्तर**—जायचा बनाकर खाना १ व ४ को देखो यदि वह किसी प्रकार से शुभ हो तो शुभ होगा यदि इन घरों की तकरार खाना ५ से हो तो सदैव शुभ रहेगा यदि १० या ११ में तकरार हो तो लाभ होवें और नित्य-प्रति वृद्धि होती जावे।

**प्रश्न**—अमुक मकान किस तरफ आबाद है और किधर सुनसान (वीराय) है ?

**उत्तर**—जायचा बनावें खाना ४ से दरवाजा का रुख बतावे अग्नि तत्व से पूर्व वायु से पश्चिम जल से उत्तर पृथ्वी से दक्खिन तरफ हो खाना ६ से पिछवाड़ा खाना ३ से बाईं तरफ खाना ५ से दहिनी तरफ का हाल कहो यदि इन घरों में शुभ दाखिल या साबित हो तो आबाद किसी हैसियत से हैं यदि खारिज या मुनकलिब हो तो मैदान पड़ा है।

**प्रश्न**—यदि कोई पूछे मैं मकान जो बनवा रहा हूँ वह लाभ दायक होगा या नहीं ?

**उत्तर**—जायचा रमल बनाकर देखो खाना १, ४, १० में यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\\text{—}\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}\text{—}\\\text{—}\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}\text{—}\\\cdot\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}\text{—}\\\cdot\\\cdot\\\text{—}\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}\text{—}\\\text{—}\\\text{—}\end{smallmatrix}$ इन शक्लों में से कोई शक्ल हो तो उत्तम मकान बनेगा और शुभ लाभ युक्त होगा यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\\text{—}\\\cdot\\\text{—}\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\\cdot\\\text{—}\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}\cdot\\\text{—}\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\text{—}\\\cdot\\\text{—}\\\text{—}\end{smallmatrix}$ में से कोई शक्ल हो तो इस मकान में कभी न रुक सकेंगे। सदैव खाली पड़ा रहेगा या आप बेच देवेंगे यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\\text{—}\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो तो आधा मकान तैयार होकर कोई न कोई विघ्न लग जायेगा और मकान बन न सकेगा यदि $\begin{smallmatrix}\text{—}\\\cdot\\\text{—}\\\text{—}\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\text{—}\\\text{—}\\\text{—}\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो तो यदि इस मकान में रहेगा तो सदैव बीमार रहेगा।

**प्रश्न**—यदि कोई पूछै यदि मैं अपनी जमीन किसी पट्टा या ठेका पर दे रहा हूँ परिणाम क्या है ?

**उत्तर**—जायचा बनावें यदि खाना ४ की तकरार खाना ७ में हो तो वह बेइमान होगा हानि पहुँचायेगा, यदि खाना ६ में तकरार हो तो ईमानदार होगा और लाभ होगा खाना ४ में $\begin{smallmatrix}\text{—}\\\text{—}\\\text{—}\\\cdot\end{smallmatrix}$ शक्ल होवे तो खेती खराब होगी यदि $\begin{smallmatrix}\text{—}\\\cdot\\\text{—}\\\text{—}\end{smallmatrix}$ हो तो पथरीली जमीन होगी यदि $\begin{smallmatrix}\text{—}\\\cdot\\\cdot\\\text{—}\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\\cdot\\\text{—}\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}\cdot\\\text{—}\\\cdot\\\text{—}\end{smallmatrix}$ हो तो बालूदार जमीन होगी हानि रहैगी लेनेवाला. घाटा उठायेगा।

**प्रश्न**—यदि कोई पूंछे कि अमुक स्थान अथवा मकान में दफीना ( गड़ा धन ) है या नहीं और मिलेगा या नही ? इत्यादि—

**उत्तर**—परमात्मा का ध्यान धर कर इसी नियत से जायचा बनावें यदि खाना ४ में शक्ल $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो और शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ जायचा में मौजूद हो तो दफीना उस स्थान पर होगा। यदि खाना ४ की शक्ल खारिज हो और शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ प्रस्तार में मौजूद न हो तो वहाँ दफीना नहीं होता है, यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ मौजूद हों और शक्ल खाना ४ अशुभ हो तो दफीना होता है मगर मिलता नहीं है।

दूसरी विधि—जायचा की खाना ४ को ६ से गुणा करें यदि हासिल शक्ल शुभ दाखिल हो अथवा शुभ साबित हो तो दफीना होता है यदि शुभ मुनकलिब अथवा अशुभ मुनकलिब हो तो भी कुछ होता है खारिज शुभ अथवा अशुभ खारिज से कुछ नहीं होता है। अथवा प्रस्तार की खाना १ व ४ की शक्ल को आपस से गुणा कर और खाना ४ व ५ को आपस में गुणा करें फिर इन दोनों गुणनफल की शक्लों को फिर आपस में गुणा करें यदि हासिल शक्ल शुभ दाखिल अथवा शुभ सावित हो तो उस मकान में अथवा उस जगह पर दफीना ( गड़ा धन ) होगा यदि शुभ मुनकलिब हो तब भी कुछ धन वहाँ हो। यदि अशुभ मुनकलिब हो तो न होगा अशुभ खारिज या अशुभ साबित से वहाँ कुछ न होगा यदि गुणन फल की शक्ल $\begin{smallmatrix}-\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो तो थोड़ा धन होता है। पाँचवा कायदा यह है खाना ४ व १४ की शक्लों को आपस में गुणा कर यदि शुभ दाखिल शक्ल हो तो शीघ्र यदि शुभ सावित हो तो देर से मिलेगा अशुभ दाखिल व अशुभ सावित से बड़े परिश्रम और यत्न पूजन आदि कराने से मिले यदि अशुभ मुनकलिब व शुभ मुनकलिब हो तो कुछ मिले और कुछ नहीं, यदि अशुभ खारिज या शुभ खारिज हो तो न मिले।

जब इस बात का निश्चय हो जावे कि इस स्थान पर द्रव्य गड़ी

(दफीना) जरूर है तब रमलज्ञ को चाहिए उस स्थान का ध्यान धर कर एक वर्गाकार चौकोर कोठा इस प्रकार का बनावैं फिर नवीन प्रस्तार भागवान को स्मरण करके इस नियत से बनावें कि वह द्रव्य इस मकान के किस भाग में है। फिर प्रस्तार के खाना ३, ४, ५, १० के घरों के देखैं कि इन घरों में कौन सी शक्ल आई है और जो शक्लें इन घरों में हैं कौन बलवान हैं जो बलवान विशेष हों उसी दिशा में द्रव्य गड़ी हुई जानें। बलवान की शक्ल का नमूना इस प्रकार जानें जैसे खाना ३ जल तत्व का है और इस घर में शक्ल जल तत्व की ही आवे जैसे ( ⩧ ÷ ⩪ ⁝ ) यही जल तत्व की शक्लें खाना (३) में आवें तो उत्तर दिशा को कहें—क्योंकि अग्नि तत्व ( ⁝̱ ≐ ∸ ≑ ) की शक्लें पूर्व दिशा से सम्बन्ध रखती है वायु तत्व ( ⁝̱ ⩪ ⩧ ÷ ) की शक्लें पश्चिम दिशा से सम्बन्ध रखती हैं तथा पृथ्वी तत्व ( ≡̣ ≣ ÷ ⩪ ) की शक्लें दक्षिण दिशा से सम्बन्ध रखती हैं इसी प्रकार खाना ४ पृथ्वी का है यदि पृथ्वी तत्व की शक्ल खाना ५ में आ जावे तो पूर्ण बलवान बन गई खाना ५ अग्नि का है खाना १० वायु का है। क्योंकि हम प्रथम लिख चुके हैं जायचा के खाना १, ५, ९, १३ अग्नि तथा २, ६, १०, १४ वायु के तथा ३, ७, ११, १५ जल के और ४, ८, १२, १६ पृथ्वी तत्व के घर माने गये हैं इस हिसाब से तो अपने घर में बली होगी उसी दिशा में धन होगा यदि अग्नि की शक्ल वायु के घर में अथवा वायु की शक्ल अग्नि के घर में होगी तब भी बलवान होगी ऐसा समझै जैसे कोई अपने मित्र के घर जावे। यदि पृथ्वी तत्व की शक्ल जल तत्व में अथवा जल की शक्ल पृथ्वी तत्व के घर जावे तो भी बलवान होगी यही तरीका बलवान शक्ल के देखने का है। निर्बल शक्ल इस प्रकार जानें अग्नि की जल से पृथ्वी की वायु से शत्रुता है यदि

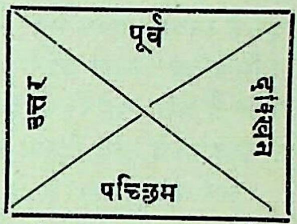

इस प्रकार से शक्लें खाना ३, ४, ५, १० में जैसा हम पहले लिख चुके हैं निर्बल शक्ल पड़े और यदि संयोगवश कोई बलवान शक्ल न मिले तब केवल खाना ४ की शक्ल लेवें और देखें कि इसमें कौन शक्ल है और वह किस दिशा से सम्बन्ध रखती है जिस दिशा से सम्बन्ध रक्खे उसी हिस्सा मकान में धन होना बतावें ।

जब मालूम हो जावे कि उपरोक्त रीत्यनुसार अमुक दिशा में धन गड़ा है तब फिर उस भाग के चार भाग कर इस प्रकार अब देखें कि इस १/४ भाग मकान के किस भाग में धन गड़ा है फिर जायचा दूसरा बनाकर खाना ४ की शक्ल देखें वह शक्ल जिस दिशा से सम्बन्ध रखती होगी उसी तरफ दफीना होगा। तीसरी बार फिर उस स्थान के चार भाग उपरोक्त रीति से करके फिर जायचा रमल पाँसा डाल कर बनावें फिर खाना ४ की शक्ल को देखें कि किस दिशा से सम्बन्ध रखती है उस दिशा में द्रव्य होगा। तीन बार पाँसा फेंकने तथा चौथे से दिशा का ज्ञान होकर थोड़ी जगह में धन का होना मालूम हो जावेगा।

| | |
|---|---|
| उत्तर | पूर्व |
| पच्छिम | दक्खिन |

## आवश्यक सूचना

गुप्त धन प्राप्ति ( दफीना ) की बाबत में प्रथम हम केवल इस बात का लेख लिख चुके हैं कि गड़ा धन इस जगह है कि नहीं तथा किस हिस्सा मकान में है ?

मगर सबसे जरूरी बात पहले रमलज्ञ को यह देखना चाहिये जो पाँच बातें हैं।

( १ ) प्रथम प्रश्नकर्ता की बाबत यह विचार करो कि इसके भाग्य में दफीना मिलना बदा है कि नहीं ?

( २ ) फिर देखो यह दफीना ( गुप्त धन ) यथार्थ में है कि नहीं ?

( ३ ) फिर देखो प्रश्नकर्ता को यह दफीना परिश्रम करने पर मिलेगा या थोड़ी मेहनत करने पर पृच्छक को गुप्त धन प्राप्त होगा।

(४) दफीना किस हिस्सा मकान अथवा पड़ती जमीन आदि में है। और किस प्रकार के चिह्न वह पृथ्वी पर रखती है।

(५) कितनी गहराई में दफीना है तथा दफीना में क्या वस्तु है ?

उपरोक्त प्रश्नों का ध्यान धर कर प्रस्तार बनावें।

## नं० १—प्रश्न कर्ता को धन मिलेगा या नहीं तथा कब ?

जायचा बनाकर खाना २ को देखें यदि उसमें शक्ल $\begin{smallmatrix}-\\ \cdot\\ \cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\ \cdot\\ -\\ \cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\ \cdot\\ \cdot\\ \cdot\end{smallmatrix}$ में से कोई शक्ल हो और उसकी तकरार खाना ८ या १४ में हो और खाना १६ किसी प्रकार से शुभ हो तो माल मिलेगा। अन्य शक्लों के होने से न मिलेगा। आगे निकालने तथा विशेष बातें मालूम करने के लिए व्यर्थ कष्ट न करें।

इसके पश्चात् उसी जायचा के खाना १, १०, २, १२ को देखो उन घरों में जो शक्लें हों क्रम से लेवें अर्थात् १ फिर १० फिर २ फिर १२ घर की शक्लों को क्रम से लेकर उमहात (१, २, ३, ४) बनाकर दूसरा प्रस्तार फिर बनावें। अब इस जायचा के खाना १ १३ को फिर ४ व १४ को फिर खाना ७ व १५ को और १० व १६ घरों की शक्लों को अलग-अलग गुणा करें। इन चार से २ शक्लें फिर इन दो से एक शक्ल बनाई जावे इससे पूरा-पूरा हाल पृच्छक के भाग्य का मालूम होगा यदि यह शक्ल दो शुभ शक्ल से पैदा हो तो इसी १ वर्ष के भीतर ही प्रश्नकर्ता को गुप्त धन मिलेगा। यदि हासिल शक्ल एक शुभ शक्ल तथा एक अशुभ शक्ल से प्राप्त हो तो २ वर्ष के भीतर धन मिलेगा। यदि दोनों अशुभ शक्लों से यह शक्ल पैदा हो तो कभी न मिलेगा इसका जानना जरूरी है।

## २—गुप्तधन यथार्थ में है कि नहीं ?

यदि शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\ -\\ -\\ \cdot\end{smallmatrix}$ की तकरार जायचा में हो तो दफीना जरूर हो और प्राप्त भी हो यदि इसकी तकरार गुप्त रूप से जायचा में हो।

**तीसरी बात**—यदि खाना १० व ११ की शक्लें शुभ दाखिल हों तथा खाना ४ व ६ की जरब से शुभ दाखिल शक्ल हो तो दफ़ीना आसानी से मिले यदि ऐसा न हो तो न मिले, यदि खाना ४, ५, ३, १० की शक्लें शुभ दाखिल हों तब भी दफ़ीना सरलता से मिले यदि ऐसा न हो तो न मिले।

**चौथी बात**—जायचा की शक्ल ३ के तथा खाना १० के मित्र से जगह बताई जावे। जैसे खाना ३ में हो तो इसका मित्र है जिसका विवरण हम प्रथम लिख चुके हैं कि का मित्र ( ) ( ) ( ) ( ) ( )( ) ( ) आपस में मित्र (हममिजाज) हैं। हममिजाज शक्लों से दिशा का ज्ञान प्राप्त किया जावे।

पाँचवीं शर्त खाना ४ की शक्ल के अंक चौड़ाई, लम्बाई, गहराई आदि बतावें।

## नक्शा लम्बाई-चौड़ाई यह है

| नामशक्ल | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चौड़ाई | १ गज | १ | ३ | ३ | २ | ५ | ५ | ४ | ३ | ४ | ५ | ६ | ५ | ५ | ४ | ५ |
| लम्बाई | २ गज | २ | ६ | ६ | ४ | ६ | ६ | ६ | ५ | ६ | ७ | ७ | ८ | ९ | ४ | ६ |
| गहराई | ४ गज | ४ | ९ | ५ | ६ | ८ | ९ | ८ | ६ | ७ | ११ | ९ | ९ | १० | ६ | ७ |

नोट—दफ़ीना की बाबत अंक जो दिये हैं वह हाथों की संख्या है। अब हम एक प्रस्तार बनाकर नमूना बनाकर दिखाते हैं ताकि समझने में सरलता हो जावे। हमने १५ जुलाई १९३८ का एक सज्जन के प्रति पाँसा डालकर प्रस्तार बनाया था यह जायचा बना।

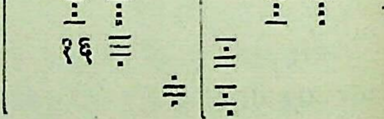

देखो खाना २में शक्ल अशुभ खारिज है और तकरार उसका ८ या १४ से किसी में नहीं है। अस्तु इस समय दफ़ीना न मिलेगा पुनः

दूसरे अमल से उपरोक्त लिखित नियम से १, १०, २, १२ को उमहात कायम करके दूसरा जायचा बनाया तो यह दूसरा प्रस्तार बन गया अब १×१३=( ⁝ ⁝ ) ⁝ ४×१४ ( ⁝ ⁝ ) ⁝ आया ७×१५ ( ⁝ ⁝ ) ⁝ आया और १०×१६ ( ⁝ ⁝ ) ⁝ आई अब इन चार से दो बनाया ( ⁝ ⁝ ) ⁝ और ( ⁝ ⁝ ) से ⁝ आई अब ⁝ को ⁝ से गुणा किया तो शक्ल ⁝ आई यह शक्ल ⁝ दो शुभ शक्लों की गुणा से प्राप्त हुई है, अतः १ वर्ष के भीतर ही दफीना पृच्छक को मिलेगा नं० २ शक्ल ⁝ की तकरार रमल में खाना ३, १६ में है अतः दफीना इस जगह जरूर है ऐसी आज्ञा दिया।

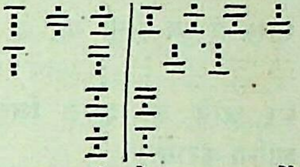

नं० ३ जायचा में खाना १० व ११ की शक्ल शुभ है अतः कहना पड़ा कि दफीना आसानी से मिलेगा और खाना ४, ६ की गुणा से ⁝ पैदा होती है शुभ दाखिल शक्ल है अतः दफीना सरलतापूर्वक मिलेगा लेकिन खाना ३ की शक्ल अशुभ है अतः कुछ कठिनाई भी पड़ेगी।

नं० ४ शक्ल ३ का हममिजाज या मित्र ⁝ है जो दक्खिन तरफ से सम्बन्ध रखती है और खाना १० ⁝ की मित्र ⁝ शक्ल है यह पश्चिम दिशा से सम्बन्ध रहती है अतः ⁝ की जरब से ⁝ आती है जो पूर्व से सम्बन्ध रखती है अतः हुक्म होता है पूर्व दक्षिन के कोना में धन है।

नम्बर ५–खाना ४ में शक्ल ⁝ है यह ५, ८, ६ से सम्बन्ध रखती है अतः ५ हाथ चौड़ाई ८ हाथ लम्बाई ६ हाथ गहराई में दफीना है जब मालूम हो गया इतनी गहराई में है तब इस जगह के फिर चार भाग करके जैसे हम लिख चुके हैं फिर पाँसा डाल कर खाना ४ की शक्ल से दिशा असली निकालो।

## खाना ५ के प्रश्नोत्तर

प्रश्न-—यदि को पूँछे मेरी भाग्य में पुत्र होना लिखा है कि नहीं?

**उत्तर**—इस नियत से भगवान का स्मरण करके पाँसा डाल कर जायचा रमल बनावें यदि जायचा के खाना १, ५ में शक्लें ∓ ≡ ÷ ≐ ÷ ⫶ ∓ ⫶ ≑ में से कोई शक्ल आवे तो पृच्छक की भाग्य में पुत्र होना बदा है और पुत्र होगा। यदि यह शक्लें ≐ ÷ ≡ ∓ ≐ ⫶ ⋮ आवें तो भाग्य में नहीं है। यदि पैदा हो तो मर जावे जो शक्ल जिस ग्रह से सम्बन्ध रखती हो उसी की शान्ति करायें।

फिर खाना १, ५ और खाना ६ व ७ की शक्ल को गुणा करके इन दोनों हासिल शक्ल को फिर गुणा करके एक शक्ल बनावें यदि यह शुभ दाखिल हो तो पुत्र योग है, यदि अशुभ दाखिल हो तो पुत्र तो होगा मगर जीवित न रहेगा, पुत्र पैदा होते ही ग्रह नक्षत्र आदि के योग देख कर पूर्ण रूप से शान्ति करायें। यदि साबित व खारिज व मुनकलिब शुभ हो तो भी पैदा होकर मर जावे। यदि अशुभ मुनकलिब हो तो गर्भपात हो जावे लेकिन अगरखाना ५ व ११ में शुभ दाखिल अथवा शुभ मुनकलिब हो तो पुत्र योग होगा फिर खाना १ व ७ को गुणा करें यदि हासिल शक्ल ∓ या ≐ हो तो चार पुत्र यदि ÷ या ⫶ हो तो ६ पुत्र यदि ≡ या ⫶ हो तो २ पुत्र यदि ∓ हो तो ५ पुत्र यदि ≑ या ∓ हो तो ३ पुत्र यदि ∓ या ≐ हो तो लड़कियाँ अधिक हों पुत्र चार हों यदि ≐ या ÷ हो तब कन्यायें अधिक हों।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे मेरे पुत्र की आयु कितनी है ?

**उत्तर**—इस नियत से पाँसा डाल कर जायचा रमल बनावें प्रथम जायचा का आठवाँ घर देखो यदि ≡ है तो दीर्घायु है यदि ÷ है तो बूढ़ा होकर मरेगा यदि ≑ हो तो १६ वर्ष यदि ≐ हो तो जवानी में मारकेशयोग आवे यदि ∓ हो तो शीघ्र मरे यदि ⫶ हो तो ६० वर्ष यदि ≐ हो तो ८ वर्ष यदि ⋮ हो तो ३ वर्ष की आयु हो।

यदि जायचा के खाना ५ में शक्ल ≐ ≣ ⫶ ≑ ÷ ⁞ में से कोई शक्ल हो तो ऐसा बालक एक साल से अधिक जीवित न रहे पूर्ण शान्ति करायें।

अन्य विधि जायचा की खाना १ व १५ को और शक्ल ५ व १५ को गुणा करके इन दोनों के गुणनफल से फिर एक शक्ल बनावें यदि हासिल शक्ल ÷ ≑ ⫶ ≐ ≣ में से कोई हो और खाना १, ५ में आवें तो दीर्घायु हो यदि ≐ ÷ ≐ ⁞ में से कोई हो तो मध्यमायु हो यदि ÷ हो तो पैदा होने के थोड़े दिन बाद मर जावे यदि ≐ हो तो १ वर्ष जिन्दा रहे ⁞ हो तो ६ मास जीवे यदि ≑ या ≐ हो तब भी थोड़े दिन की आयु होवे। फिर देखो खाना ४ को और देखो इस घर की तकरार किस घर में है यदि केन्द्र (१, ४ ७, १०) में हो तो वर्ष यदि पणफर अर्थात् मायल औताद खाना (२, ५, ८, ११) में हो तो महीना यदि खाना ३, ७, ११ या १५ में तकरार हो तो सप्ताह ८ शेष घरों में दिन बतावें। यदि इस शक्ल की तकरार कहीं न हो, और शक्ल शुभ हो तो वर्ष यदि मध्यम हो तो मास का हुक्म लगावें। यदि अशुभ हो तो सप्ताह या दिन अपनी बुद्धि के अनुसार शक्ल या बलाबल देखकर जवाब दें। अब हम प्रत्येक शक्ल का चक्र वर्ष मास दिन का बनाकर दिखाते हैं ताकि उत्तर निकालने में सुगमता हो।

| शक्ल | ≣ | ÷ | ≑ | ⫶ | ≐ | ⁞ | ⊤̣ | ≑ | ≑ | ÷ | ≣ | ≐ | ≣ | ≑ | ⫶ | ⁞ | नाम |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | ८६ | ८२ | ५७ | १०० | ६६ | ९५ | ८० | १८ | १०० | ८२ | १०५ | ८४ | ८४ | ८२ | ८२ | ८२ | वर्ष |
| मास | ४५ | ४२ | ३४ | ४२ | २९ | १९ | ३७ | ४३ | १२ | ४२ | १०० | ८२ | ८४ | १०० | ८२ | ८२ | मास |
| दिन | ३८ | १२ | १३ | १२ | १३ | १८ | ३० | ११ | २० | १२ | १० | १४ | १८ | १५ | ४५ | १२ | दिन |

**प्रश्न**—सन्तान न होने में दोष पुरुष में है या स्त्री में कोई दोष है ?

**उत्तर**—इस नियत से पाँसा डाल कर जायचा बनावें यदि खाना १ में ⋮ हो तो मर्द में दोष है धातु विकार है यदि खाना ८ में हो स्त्री के गर्भाशय में दोष है इलाज करायें यदि संयोग वश यह शक्ल उपरोक्त रीत्यनुसार प्रस्तार में न हो तो किसी का दोष नहीं पूर्व जन्म के अशुभ कर्मों का फल है। अस्तु, अब शुभ कर्म करके अपने को सफल मनोरथ बनावे शतचंडी सम्पुट-मंत्र से करावें तब दीर्घ जीवी पुत्र होगा बड़ी श्रद्धा से करावें।

**प्रश्न**—इस पुत्र अथवा कन्या को माता का दूध पिलाने में हितकर होगा गऊ इत्यादि का ?

**उत्तर**—जायचा बनावें यदि खाना १ में शुभ शक्ल हो और खाना में अशुभ शक्ल हो तो माता का दूध लाभकारी होगा यदि इसके विपरीत शक्लें हो तो बाहरी दूध लाभदायक होगा यदि दोनों घर १, ३ शुभ हो तो दोनों का दूध हितकर होगा अथवा खाना १, ५ को गुणा करें और खाना ३, ५ को अलग गुणा करें यदि पहली शुभ हो तो माता का दूध यदि दूसरी ३ × ५ की शक्ल शुभ हो तो बाहरी दूध लाभदायक होगा।

**प्रश्न**—यदि कोई प्रश्न करे यह पुत्र भाग्यशाली होगा या अभागा होगा ?

**उत्तर**—इस नियत से जायचा बनावें। शक्ल खाना ५ व ६ को गुणा करें हासिल शक्ल को खाना १५ की शक्ल से गुणा करें। यदि हासिल शक्ल शुभ हो तो भाग्यशाली होगा यदि अशुभ हो तो भाग्यहीन होगा यदि केवल खाना ५ में ≡ ≐ ÷ ÷ ⋮ ⋮ में से कोई शक्ल हो तो भाग्यशाली होगा, अन्य विधि खाना ५ व ७ की शक्लों को गुणा करें हासिल शक्ल को खाना १५ की शक्ल से गुणा

करै यदि हासिल शक्ल ≗ ≐ ⩦ ⁝ ÷ ⁞ ⩧ में से कोई शक्ल आवे तो भाग्यवान होगा वर्ना भाग्य हीन होगा।

प्रश्न—इस पुत्र से माता-पिता को सुख होगा या नहीं सेवा करेगा या नहीं ?

उत्तर—जायचा बनावें खाना ५ को ४ से गुणा करे हाखिल शक्ल को खाना १२ से गुणा करैं यदि हासिल शुभ शक्ल होवे तो पुत्र अपने पूज्य माता पिता का भक्त होगा सेवा करेगा। बिपरीत शक्ल होने से दुःखी माता पिता रहे-खाना १ व ५ को गुणा करके देखैं यदि शुभ दाखिल शक्ल हो तो पुत्र से आशायें पूरी होती रहेंगी यदि खारिज या अशुभ शक्ल हो तो निराशा रहे।

प्रश्न—यदि कोई पूँछे कि अमुक स्त्री को गर्भ है या नहीं ? यदि है तो कितने मास का है ?

उत्तर—इस नियत से भगवान का स्मरण करके एकाग्रचित्त होकर पाँसा डालकर प्रस्तार बनावें यदि जायचा में शक्लैं दाखिल या जल तत्व की अधिक हों या खाना ६ में शक्ल खारिज और कोई शक्ल जल तत्व की या ≑ खाना ५ मे हो या शक्ल ≑ या ≑ जायचा में मौजूद हो या खाना ५ व ६ को गुणा की शक्ल शुभ हो और ≑ खाना ११ में हो या खाना ५ व ६ किसी प्रकार से दाखिल शक्ल हो या खाना १ से ५ तक किसी में ÷ ⁝ ⩦ ≘ में से कोई शक्ल हो तो गर्भ होता है वर्ना नही ?

दूसरी विधि—यदि खाना ५ में ≑ या ≘ हो तो गर्भ है यदि यह न हों तो खाना ६ में या ७ में या ११ में या १२ में ≑ हो तो शीघ्र गर्भ होने का योग पड़ गया है यदि ≑ खाना ६ व ११ दोनों में होतो शीघ्र बच्चा होगा। यदि ≑ खाना ७ में और ≘ खाना ५ में हो तो २ मास का गर्भ होगा। यदि ≑ खाना १२ में हो और ≘

खाना ५ में हो तो गर्भ कई मास का हो गया है यदि ÷ ५ में हो और खाना ६, ७, ११ या १२ में किसी घर में ( ≐ ) हो और खाना ८ में अशुभ खारिज हो तो गर्भपात होने का भय है अथवा शीघ्र प्रसव हो जावे यदि ख़ाना ५ में ÷ और शक्ल ⩦ या ≡ खाना १ में आवे तो इस समय गर्भ नहीं है यदि ४ या ६ में ÷ शक्ल हो तो शीघ्र गर्भ होगा। यदि ख़ाना १५ में ÷ हो और १ में भी ÷ या ≑ हो तो गर्भ नहीं, बहुत समय के बाद पुत्र होवे यदि खाना ६ में ≑ या ⩦ हो और ÷ जायचा में हो तो गर्भ है।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे अमुक स्त्री के गर्भ कितने महीने का है ?

**उत्तर**—जायचा बनाकर ख़ाना २ व ११ से एक शक्ल तथा ६ व ११ से गुणा करके दूसरी शक्ल बनावें फिर इन दोनों के गुणा से एक शक्ल बनावें। यदि हासिल शक्ल ≐ या ÷ हो तो एक मास का गर्भ है यदि ÷ या ⁝ हो तो २ मास का यदि ≡ या ⩦ हो तो ३ मास का यदि ⁝ या ⩦ हो तो ४ मास का यदि ÷ या ≑ हो तो ५ मास का यदि ≐ या ≑ हो तो ६ मास का यदि ≐ या ÷ हो तो सात मास का यदि ÷ या ⁝ हो तो पूरे मास का गर्भ हो चुका है।

**प्रश्न**—इस गर्भ में पुत्र होगा या कन्या होगी ?

**उत्तर**—इस नियत से पाँसा डालकर जायचा बनावें फिर सातवीं तथा पहली शक्ल को आपस में गुणा करके एक शक्ल बनावें जो हासिल हो उसको पाँचवी शक्ल से गुणा करें जो शक्ल बने वह पुरुष संज्ञक हो तो अथवा स्त्री संज्ञक हो तो कन्या पाचवें घर की शक्ल जितनी जगह पुनरुक्त (तकरार) उतनी ही सन्तान होगी अग्नि वायु की शक्ल हो तो पुत्र, जल पृथ्वी की हो तो कन्या होवे। मगर पृथ्वीतत्त्व की होने से गर्भपात योग भी होता है यदि शुभ पृथ्वी की बलवान हो तो कन्या होवे अन्यविधि खाना ४, ६ में यदि शक्ल नर की हों तो पुत्र यदि स्त्री की शक्ल हो तो कन्या होगी

यदि ≣ खाना ५, ४ में आवे या ६ में हो तो पुत्र स्वास्थ्ययुक्त हो यदि यह ११ या १२ में ≣ आवे तो बच्चा मर जावे।

३ तरीका—खाना ५ को ६ से गुणा करैं यदि यह शक्ल दाखिल हो तो पुत्र, खारिज हो तो कन्या होवे। यदि खाना ६ की शक्ल "नर" हो तो पुत्र यदि स्त्री संज्ञक हो तो कन्या होगी—अथवा रमल के कुल बिन्दु गिनै जोड़ को ३ पर भाग दें यदि १ बाकी बचे तो पुत्र होगा २ बचे तो कन्या होगी यदि शून्य बचे तो हिजड़ा लड़का होगा।

प्रश्न—यदि कोई पूँछे प्रसव काल में सरलता पूर्वक बच्चा होगा या कष्टपूर्वक ?

उत्तर—जायचा रमल बनावें यदि खाना १ व ६ में शुभ खारिज या मुनकलिब शक्ल हो तो प्रसव आसानी से होगा। यदि दाखिल या साबित हो तो प्रसव काल में कष्ट विशेष होगा यदि अशुभ दाखिल अथवा अशुभ शक्ल हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट होवे दूसरे खाना ६ व ११ को देखै यदि इनमें ÷ ≡ ⋮ ÷ ÷ में से कोई शक्ल हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट हो यदि यह शक्ल खाना ५ में तकरार करै तो बच्चे की मृत्यु होवे और जच्चा (प्रसूता) को कष्ट हो।

पुनः खाना १ व ११ को गुणा कर यदि यह शक्ल शुभ दाखिल या शुभ साबित हो तो प्रसव कष्ट से होवे यदि अशुभ दाखिल या साबित हो तो गर्भवती की मृत्यु होवे। अथवा मृत्यु तुल्य कष्ट पावे या शुभ खारिज या शुभ मुनकलिब शक्ल हो तो प्रसव शान्तिपूर्वक होवे।

प्रश्न—यदि कोई प्रश्न करै प्रसवकाल दिन में होगा या रात को बच्चा होगा ?

उत्तर—जायचा रमल बनावें यदि खाना १ की शक्ल नर हो तो दिन को यदि स्त्री संज्ञा हो तो रात्रि को बच्चा पैदा होगा। नर शक्ल

यह हैं ( ≐ ⩦ ⍊ ÷ ÷ ÷ ⋮ ) की संज्ञा शक्लें यह है ( ⩦ ⋮ ⫶ ⫶ ≑ ÷ ⩮ ) ≡ ⩦ यह दोनों में शामिल है।

**दूसरी विधि**—यदि खाना ५ की शक्ल खारिज हो तो दिन को यदि दाखिल हो तो रात को यदि साबित हो तो रात को १२ बजे के पहले यदि मुनकलिब हो तो रात को १२ बजे के बाद पैदा होगा और खाना १ जिस ग्रह से संबंध रखता होगा प्रसव का दिन भी वही होगा। जैसे खाना १ में ⩦ हो तो मंगल का दिन जानें।

**प्रश्न**—यदि कोई पूछे बच्चा किस साइत में पैदा होगा ?

**उत्तर**—जायचा बना कर शक्ल ≐ को देखे कि किस खाना में है यदि अव्वल हो तो अव्वल साइत में दोम हो तो दूसरी साइत में इसी प्रकार १२ घरों तक साइत क्रम से बतावें।

**दूसरी विधि**—देखो यदि ≐ कहीं न पड़ी हो तो खाना १ की शक्ल को देखो कि उसकी तकरार किस घर में है जिस घर में हो उसी साइत में बच्चा होगा यदि खाना १ की शक्ल की भी तकरार न हो तो शक्ल खाना ५ के तकरार से बयान करो यदि ≐ खाना १ में या खाना ५ में हो तो बच्चा दोपहर या १२ बजे रात को पैदा होगा।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे बच्चा किस राशि या लग्न में पैदा होगा ?

**उत्तर**—खाना ९ की शक्ल जिस राशि से सम्बन्ध रखती होगी उसी लग्न में बच्चा होगा।

## राशि चक्र यह है—

| नाम | ≐ | ⩦ | ⍊ | ⩮ | ÷ | ⩦ | ⍊ | ⩮ | ≑ | ÷ | ÷ | ⫶ | ÷ | ⫶ | ⋮ | ≡ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शक्ल | धन | मेष | सिं. | क. | कु. | मि. | कु. | म. | कुं. | सिं. | तु. | मी. | वृ. | वृष | क. | मि. |

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे कि आज कोई अतिथि या मेहमान हमारे यहाँ आवेगा या नहीं।

उत्तर—इसी नियत से जायचा बनावें यदि खाना ४ व ६ में शुभ दाखिल किसी हैसियत से हो तो जरूर मेहमान आवे यदि खाना ४, ७ में इसी हैसियत से दाखिल हो तब भी अतिथि आवे यदि शक्ल खाना ४ व १२ की तकरार खाना १, २, ३ में हो या ९ या १० या १३ हो तब भी मेहमान आवें। यदि शक्ल खाना ४ व ७ की शक्ल उमहात में आवे तो सज्जन मेहमान यदि ऐसा न हो तो विपरीतफल कहैं—ख़ाना ७ की तकरार जितनी जगह हो उतने ही मेहमान आवें।

प्रश्न—यदि कोई पूँछे कि शिकार खेलने जाता हूँ शिकार मिलेगा या नहीं ?

उत्तर—जायचा बनावें यदि खाना १ शुभ दाखिल हो और खाना ५ में शुभ खारिज शक्ल हो या खाना ७ या ५ शुभ दाखिल हो या प्रस्तार के खाना ६, ७, ५, १ घरों की शक्लों का क्रमशः रखकर उमहात बनावें अर्थात् खाना ६ को १, ७ को २ तथा खाना ५ की शक्ल को नम्बर ३ तथा १ की शक्ल को खाना ४ की जगह पर रख कर उमहात बनाकर दूसरा जायचा बनावें यदि इस जायचा में $\overset{\cdot}{\underset{:}{-}}$ या $\underset{:}{=}$ हो और इस जायचा में इन्हीं घरों यानी ६, ७, ५, १ में हो तो इच्छानुसार शिकार मिलेगा यदि इसके विपरीत हो तो शिकार न मिलेगा। यदि संयोगवश कुछ मिलेगी तो बड़े परिश्रम से मिले यदि खाना ५ में शक्ल $\overset{\cdot}{=}$ या $\overset{\cdot}{\equiv}$ में से कोई हो तो निशाना बिल्कुल ठीक बैठेगा। यदि खाना १ शुभ दाखिल हो तब भी निशाना ठीक बैठेगा यदि खाना १ शुभ दाखिल हो और खाना ५ शुभ खारिज हो तो निशाना भी ठीक लगे शिकार भी मिले यदि दोनो शुभ खारिज हो तो कुछ मिले कुछ न मिले—यदि खाना ५, ६ दोनों शुभ दाखिल हो तो फौरन शिकार मिले यदि अशुभ दाखिल हो तो न मिले यदि शुभ या अशुभ खारिज हो तो शिकार न मिले।

प्रश्न—यदि कोई पूँछे जुँआ आदि में जीत होगी या हार

होगी अथवा लाटरी मेरे नाम निकलेगी या नहीं या कुछ हिस्सा मिलेगा या नहीं ?

उत्तर—सट्टा लाटरी आदि में कामियाबी प्राप्त करने के लिये उपरोक्त रीत्यानुसार पाँसा डालकर जायचा बनावें अब खाना १, ११, १४ को एक तरफ रक्ख यह प्रश्नकर्ता की शक्लै हैं और खाना ४, ५, ६ यह दूसरी पारटी की तरफ वाली शक्लैं हैं अब दोनों को देखैं कि किस हिस्सा में शक्लैं शुभ दाखिल व शुभ साबित बलवान् होकर बैठी हैं और किसमें अशुभ व मुनकलिब और खारिज शक्लैं हैं। यदि खाना १, ११, १४ की तरफ शुभ दाखिल व शुभ साबित बलवान् होकर बैठी है तो प्रश्नकर्ता जीतेगा यदि ४, ५, ७ की तरफ बलवान तथा शुभ दाखिल व शुभ साबित शक्लैं हो तो दूसरी पार्टी के लोग जीतैंगे प्रश्नकर्ता हार जावेगा लाटरी आदि न मिलेगी। दूसरा तरीका खाना १, २, ११, १४ की शक्लों के बिन्दु यदि अधिक हो तो प्रश्नकर्ता और ४, ५, ७, ८ दूसरी पारटी की तरफ की शक्लें जिसकी तरफ की शक्लैं बलवान हों तथा बिन्दु ज्यादा हों वही जीतेगा।

यहाँ हम एक प्रस्तार बनाकर नमूना दिखाते हैं ताकि रमलज्ञ को बतलाने में सुविधा हो जावे।

एक व्यक्ति ने आकर प्रश्न किया कि लाटरी का टिकट खरीदा है मिलेगा या नहीं ?

## प्रश्नोत्तर

पाँसा डालकर जायचा बनाया यह शक्ल पैदा हुई देखो जायचा—अब खाना १, ११, १४ को देखो इसमें १ ११ अशुभ है केवल १४ शुभ दाखिल है अब खाना ४, ५, ७ को देखो खाना ४, ७ शुभ खारिज और ५ मुनकलिब हैं—

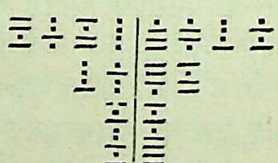

अतः हुक्म हुआ कि प्रश्नकर्ता की जीत न होगी क्योंकि दो अशुभ है केवल खाना १४ शुभ दाखिल तो है मगर कमजोर है, क्योंकि १४ घर वायु का है और शक्ल ≑ पृथ्वी तत्व की है पृथ्वी और वायु तत्व की शत्रुता है अतः कहा प्रश्नकर्ता को न तो लाटरी मिलेगी न किसी सट्टा आदि में जीतेगा। दूसरे खाना १५ में ≡ पड़ी है शास्त्रों का कथन है जिस जायचा में ≡ खाना १५ में पड़ जावे ६ माह तक कार्य्य की सफलता नहीं होती है।

प्रश्न—यदि कोई पूंछे परीक्षा में पास हूँगा या नहीं?

उत्तर—जायचा रमल बनावें यदि खाना ५ में ≐ ÷ ⫶ ⫶ ≑ ≐ ≡ ≑ ⁝ में से कोई शक्ल हो अथवा खाना १ व ३ की गुणा से ≑, ⫶, ÷, ⫶, ⁝, ≡, ≡ में से कोई शक्ल मौजूद है तो पास होगा यदि खाना ५ में ≑ हो तो फेल होगा यदि ≡ ⫶ ≡ आवे तो तीसरे नम्बर पास होगा। यदि अशुभ शक्ल कोई भी होगी तो फेल होगा यदि जायचा की शक्ल अशुभ दाखिल या शुभ साबित हो और तकरार खाना ५ या ९ या ११ में हो तो पास हो जावे यदि अशुभ हो तो फेल होवे शुभ मुनकलिब से दोम नम्बर में ≐ पास हो यदि खाना १ में ≐ और खाना ५ में ≑ और खाना ९ में हो तो भी पास होगा। यदि खाना ५ की शक्ल खाना ८ या ४ या १२ में तकरार करे तो फेल हो जावेगा। यदि खाना १ व ३ की गुणा से ≑ ⫶ ÷ में से कोई शक्ल आवे तो प्रथम श्रेणी में पास होगा यदि ⫶ ≡ ≡ हो तो दोम नम्बर में पास होगा शुभ मुनकलिब से सोम नम्बर में पास होवे।

प्रश्न—यदि कोई पूँछे अमुक व्यक्ति से इनाम या पारितोषिक मिलेगा?

उत्तर—जायचा बनाकर खाना ५ को देखो यदि शुभ दाखिल शक्ल हो और तकरार इसकी खाना १, १०, ११, १४, में किसी में हो तो मिलेगा अन्य अशुभ शक्लों से न मिलेगा।

प्रश्न—यदि कोई पूँछे अमुक स्थान से कोई पत्र या ख़बर आयेगा या नहीं।

उत्तर—यदि जायचा में खाना ५ में शुभ दाखिल हो तो आयेगा यदि ≐ ÷ ⋮ में से कोई हो तो खबर अथवा पत्र आयेगा शेष से आशा नहीं ?

दूसरी विधि—खाना १ व ५ को आपस में गुणा करैं और खाना ६, १० को गुणा करैं फिर इन दोनों गुणनफल की शक्लों को गुणा करके एक शक्ल बनावें यदि हासिल शक्ल शुभ दाखिल हो तो उत्तम खबर आवे अशुभ से अशुभ खबर आवे खाना ५ की शक्ल जिस दिन से सम्बन्ध रखती हो उसी दिन पत्र आवेगा। जैसे ≐ ⩱ से गुरुवार ⫠ ≡ से बुध ⩧ ÷ से मंगल ≗ ⩱ से इतवार ⋮ ⩦ से सोमवार ⩮ ⩱ से शनिवार ÷ ⫶ से शुक्र को खबर आवेगा ⩧ या ⫠ से शनिवार समझें।

प्रश्न—यदि कोई पूँछे खबर जो मिली हैं सच्ची है या झूठी है ?

उत्तर—इस नियत से जायचा बनावें यदि खाना ५ में शक्ल शुभ हो और शुभ घर में तकरार करै तो यह खबर सच्चा है यदि अशुभ हो और अशुभ घर जैसे ३, ६, ८ १२ में तकरार करे तो झूठी खबर है। शुभ घर जायचा में खाना १, ४, ५, १०, १३ शुभ माने गये हैं और खाना २, ७, ९, १४, १५, १६ शुभ तो है मगर मध्यम शुभ हैं।

दूसरी विधि—खाना १, ५ को गुणा करैं तथा ५, ७ को गुणा कर फिर इन दोनों की गुणा से एक शक्ल बनावें यदि हासिल शक्ल शुभ दाखिल हो तो खबर सच्चो है वर्ना झूठी है।

तीसरी विधि—जायचा के खाना १ से १५ तक के कुल बिन्दु जोड़े यदि वह बिन्दु विषम संख्या ताक़ संख्या हो जैसे १, ३, ५, ७

आदि तो खबर झूठी है। यदि सम बिन्दु यानी जोटा जैसे २, ४, ६ आदि हो तो खबर सच्ची है।

प्रश्न—यदि कोई पूँछे यह लिफाफा (पत्र) जो डाक द्वारा आया है इसमें खबर कैसी है ?

उत्तर—इस नियत से जायचा बनावें और उसमें जितने बिन्दु हों सबको गिन लें और १३ से भाग देवें यदि एक बाकी रहे तो खुशी का पत्र है तो भी लाभ युक्त पत्र प्रसन्नता का है यदि इससे अधिक बचे तो साधारण पत्र है। फिर खाना ५ को देखें यदि उसमें ≑ ≐ ÷ या ⋮ में से कोई हो तो खबर खुशी की है इसके अलावा शुभ दाखिल हो तो भी लाभ युक्त है यदि अशुभ शक्लें हों तो सुखद पत्र आया है सुनने से चिन्ता व्यथा पैदा होवे।

प्रश्न—मेरी प्रेमिका अथवा मेरा प्रेमी मुझे मित्र रूप मानता है अथवा शत्रु रूप ?

उत्तर—यद्यपि इस प्रकार के प्रश्नोत्तर निकालना एक प्रकार से अश्लील रूप है मगर शास्त्रकारों ने इसकी व्याख्या पूर्ण रूप से की है। अतः शास्त्र रूप से इस प्रकार के प्रश्नों को भी इस पुस्तक में लिखना अपना कर्तव्य समझते हैं। अस्तु, इस नियत से पाँसा डालकर प्रस्तार बनावें। खाना १० को देखो उसमें कौन शक्ल है यदि वही शक्ल खाना ५ या ६ में तकरार करै तो वह प्रेमी अथवा प्रेमिका ( माशूक ) आपको मित्र रूप मानता है वह खुद प्रेम करता है यदि ३ या ११ में तकरार करै तो आधा मित्र है यदि खाना ७ में तकरार करे तो शत्रु रूप मानता है अपना मतलबी यार है यदि खाना ४ में हो तो किसी समय प्रेम करै कभी ठुकराये।

**दूसरी विधि**—यदि खाना १ की शक्ल खाना ७ में उलटी हो जावे यानी विलोम हो जावे जैसे खाना १ में ÷ है और खाना ७ मे विलोम ≑ हो जावे तो मतलबी मित्र है उसकी मित्रता पर भरोसा न करैं।

**तीसरी विधि**—खाना १, ७ को गुणा करो यदि हासिल शक्ल शुभ हो और शुभ घर में (१, ४, १०, ११, १३) तकरार करे तो वह प्रेमी आपको मित्र मानता है अन्य घरों से मतलब का मित्र समझो उसकी मित्रता पर भरोसा न करो।

**चौथी विधि**—खाना ५ को देखो यदि उसमें शुभ दाखिल या शुभ ख़ारिज शक्ल हो और शुभ घर में तकरार करे तो प्रेमी अथवा प्रेमिका साथ करेगी यदि अशुभ घर खाना (३, ६, ८, १२) में तकरार करे तो शत्रुता होगी यदि खाना ५ में शक्ल अशुभ हो और शुभ घर में तकरार करैं तो यद्यपि वह प्रगट रूप में मित्रता करता है मगर उसकी मित्रता पर भरोसा न करै कारण वह कपटी मतलबी मित्र है।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे मेरी प्रेमिका या प्रेमी इच्छानुसार प्राप्त होगा या नहीं ?

**उत्तर**—जायचा बनाकर खाना १, ५ को गुणा करै हासिल को खाना ४ से गुणा करै यदि हासिल शक्ल शुभ दाखिल हो या शुभ साबित हो तो वह माशूक मिलेगा शुभ ख़ारिज से न मिलेगा यदि अशुभ हो तो यत्न से भी न मिले हाथ से निकल जावे, यदि हासिल शक्ल अशुभ दाखिल हो अथवा पृथ्वीतत्व की शक्ल हो तो बड़े परिश्रम से मिले—यदि खाना १ में $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\-\end{smallmatrix}$ और खाना ५ में $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ हो और खाना २, ३, ६, ११ या १३ में तकरार करै तो मिलेगा और मित्रता बहुत दिनों तक रहेगी।

**दूसरी विधि**—खाना १ से ५ तक बिन्दु गिना यदि जल तत्व के अधिक बिन्दु हों तो मिलेगा यदि पृथ्वी के अधिक हो तो अगाध प्रेम होवे यदि अग्नि वायु के ज्यादा हो तो केवल देखा देखी रहे। यदि खाना ५ $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ हो और खाना ७, ९, ११ में तकरार करें तो प्रेमिका से दुर्व्यवहार होगा यदि खाना ५ की शक्ल खाना २ या ३ या ६ या ११ या १३ में तकरार करे तो आपका प्रेमी

सदैव तुम्हारे मिलने के लिये वेचैन रहता है। यदि खाना १ में ÷ हो और खाना ५ में ≡ हो तो भी तुम्हारे प्रेम में फँसा है यदि खाना १ से ५ तक कुल शक्लैं जलतत्व की हों तो बिना किसी हीला के मिलेगा यदि वायु की शक्लैं हों तो बातचीत होगी यदि अग्नितत्व की शक्ल हो तो केवल दीदार ( दर्शन ) होते रहेंगे यदि पृथ्वीतत्व की शक्लैं हों तो निराशा होगी, यदि खाना ५, ६ या ८ या १२ में तकरार हो तो न मिले यदि खाना ५ में ÷ हो तो शीघ्र मुलाकात का संयोग होगा यदि ⋮ हो तो प्रेमी के वायदे का भरोसा न करैं।

प्रश्न—क्या अमुक पुरुष ने अमुक स्त्री के साथ दुर्व्यवहार किया है या नहीं।

उत्तर—इस नियत से पाँसा डालकर जायचा बनावें फिर खाना ५ की शक्ल को खाना ११ से गुणा करै यदि हासिल शक्ल ≐ हो तो विषय भोग नहीं किया है यदि ÷ हो तो दोनों की राजी से काम हुआ यदि ÷ हो तो शीघ्रता तथा चोरी से हुआ मगर अधूरा काम रहा यदि ≡ हो तो विषय भोग नहीं हुआ वरन् दोनों की रजामन्दी हो गई है समय का इन्तजार है यदि ≡ हो तो जमीन पर हुआ यदि ≡ हो तो किसी जलाशय के समीप हुआ है या पुष्पवाटिका बाग इत्यादि में हुआ है यदि ⋮ हो तो नहीं हुआ यदि ÷ हो तो घर पर दुर्व्यवहार किया यदि ⋮ हो तो पड़ोसी के घर अथवा अन्य स्थान पर हुआ यदि ≡ हो और खाना ८ में तकरार हो, भी तो चिरकाल के प्रेमी हो चुके हैं दोनों का प्रेम अगाध है।

प्रश्न—यदि कोई पूँछे कि आज हमने विषय भोग किया है या नहीं।

उत्तर—जायचा रमल इस नियत से बनावें और देखो खाना ८ व १२ को यदि एक घर में शुभ दाखिल और एक में खारिज हो तो भोग किया है यदि दोनों घरों में खारिज शक्ल हो तो नहीं किया यदि दोनों जगह मुनकलिब हो तो दिल चाहता था मगर संयोग न

हुआ यदि दोनों घरों में दाखिल शक्ल हो तो अनेक कारणों से नहीं हुआ खाना १४ में जितने बिन्दु हों उतनी ही बार भोग करने का अवकाश मिला। यदि खाना २, ५ में ≡ हो तो भंग पीकर किया है यदि ≡ या ÷ हो शराब आदि पीकर भोग किया है।

प्रश्न—यदि कोई पूँछै आज विषय भोग की नौबत होगी या नहीं।

उत्तर—जायचा बनावें यदि खाना १ में ≣ हो और खाना ५ या ९ या ११ या ४ में शक्ल ≡ या ≡ या ÷ हो और खाना ३ या ५ या ७ में शक्ल ÷ हो तो आज भोग करेगा, यदि खाना १ की शक्ल में जलतत्व का बिन्दु इस प्रकार ≡ ≡ आदि और उसमें अग्नितत्व का बिन्दु न हो और खाना ३ व ७ में जलतत्व का बिन्दु होवे तब भी विषय करैंगे यदि खाना १, ४ व ७ में शक्ल ≣ हो तब भी योग होगा।

प्रश्न—यदि कोई पूँछै कि मेरे शरीर में जख्म या तिल किस जगह पर है?

उत्तर—जायचा बनावे खाना ७ को देखैं यदि किसी अन्य स्थान पर तकरार न करै तो सर पर जख्म है यदि खाना १ में तकरार करे तो इन्द्री पर तिल है यदि खाना २ में तकरार करै तो रान पर यदि खाना ३ में तकरार करै तो चेहरा पर यदि खाना ४ में हो तो पिंडुली पर तिल है यदि खाना ५ में तकरार करै तो टखना पर यदि खाना ८ में तकरार हो तो गर्दन पर खाना ९ हो तो कंधे पर खाना १० में छाती पर खाना ११ में तकरार हो तो पहलू पर यदि खाना १२ में तकरार करै तो तोंदी या पेट पर जख्म या तिल का चिह्न होगा।

प्रश्न—अमुक आदमी को चेला बनाता हूँ कैसा है?

उत्तर—जायचा रमल बनावें यदि खाना १ में शक्ल शुभ खारिज हो और खाना १३ में शुभ दाखिल हो तो चेला से गुरु को लाभ होगा यदि खाना १ में शुभ दाखिल और १३ में शुभखारिज

हो तो चेला को गुरु से लाभ होगा यदि खाना १३ में ≐ हो तो गुरु झूठा फेरवी होगा यदि खाना १३ में ÷ या ⫶ हो तो चेला गुरु की सेवा न करेगा यदि खाना १३ में ≟ या ÷ हो तो चेला चोर दगा बाज होगा यदि ≐ या ⁝ हो तो झगड़ालू होगा यदि ⋮ या ≡ हो तो चतुर सेवन के होगा यदि ⋮ या ⁞ हो तो मसखरा होगा गाने बजाने का इच्छुक होगा यदि ≐ या ≟ हो तो प्रतिष्ठित होगा।

## खाना ६ के प्रश्नोत्तर

प्रश्न—यदि कोई पूछै अमुक व्यक्ति रोग से मुक्त होगा या नहीं ?

उत्तर—इसी नियत से पासा डालकर जायचा बनावें फिर शक्ल खाना ४ को १२ से गुणा करें और खाना ६ को ८ से गुणा करै फिर दोनों शक्लों से एक शक्ल बनावें हासिल शक्ल को खाना १ शक्ल से गुणा करै यदि यह हासिल शक्ल शुभ खारिज होगी और उमहात ( १, २, ३, ४ ) या खाना ५ पुनरुक्त ( तकरार ) हो तो रोगी शीघ्र अच्छा होगा शुभ मुनकलिब हो तो भी रोगी अच्छा होगा अशुभ मुनकलिब या अशुभ दाखिल हो और खाना ६ या ८ या १२ में तकरार करे तो रोगी मर जावे और रोग न छूटे। यदि खाना ४ में ≟ और खाना ८ में ÷ हो तो भी रोगी अच्छा न हो यदि खाना ४, ८ में ≟ हो तो भी रोगी मर जावे। विधि दूसरी तमाम रमल के बिन्दु को जोड़कर ३ का भाग दे यदि १ बाकी बचे तो रोगी अच्छा न हो २ शेष रहे तो अच्छा हो जावे यदि शून्य हो तो देर से आराम पावे। यदि खाना ६ में ⋮ या ≐ हो तो रोगी मरे, यदि खाना ४, ८, १२, १६ में ÷ या ⋮ या ≡ या ≐ या ÷ या ⁞ या ≐ या ⋮ या ≟ हो तो रोगी मर जावे यदि ⋮ खाना १२ में हो तो आराम हो जायेगा।

दूसरी विधि—जायचा में खाना १, ६ गुणा करैं फिर ४ व ८ को गुणा करै इन दोनों की गुणा से एक शक्ल बनायें यदि हासिल शक्ल

≐ या ≐ हो तो शीघ्र अच्छा हो यदि ⩪ या ÷ या ⫶ हो तो बाद राज के बाद अच्छा होगा यदि ⩦ या ≑ हो तो बहुत दिनों के चन्द अच्छा हो। यदि ≑ या ≓ हो तो बहुत दिनों के बाद अच्छा हो यदि ÷ या ⁝ हो तो चिरकाल तक बीमार रहकर तब मर जावे। यदि ÷ हो तो अनायास मर जावे यदि प्रस्तार में ⩦ खाना ६ में और ≑ ८ में हो तो रोगी मरे—

**तीसरी विधि**—जायचा रमल के कुल बिन्दु को जोड़ैं यदि इसमें अग्नि वायु के बिन्दु अधिक हों तो रोगी अच्छा हो जावे यदि जल और पृथ्वी के बिन्दु अधिक हों तो रोगी न अच्छा हो—

**चौथी विधि**—खाना ४, ६, ८ को देखो यदि यह शुभ खारिज हो तो शीघ्र अच्छा होवे जो अशुभ खारिज हों तो देर से अशुभ हो, दाखिल व साबित से रोग की वृद्धि होवे—फिर यदि खाना ४, ८, १२, १६ में यह शक्लैं हों ⩪ ≑ ≓ ÷ ⁝ ⁝ ÷ ⩦ ⩪ अन्य कोई शक्लैं न हों तो रोगी अच्छा न हो। यदि इनके अतिरिक्त किसी एक घर में भी कोई अन्य शक्ल आ जावे तो रोगी अच्छा जरूर होगा—फिर यदि जायचा में शुभ शक्लैं अथवा ÷ शक्ल की तकरार कई जगह पर हो तो रोगी जरूर अच्छा हो। दूसरी विधि खाना १, ६ को गुणा करैं फिर १ व ६ को गुणा करैं फिर इन दोनों से एक शक्ल बनावें यदि हासिल शक्ल जल तत्व या पृथ्वी की हो तो मर जावे यदि अग्नि या वायु की हो तो जरूर अच्छा हो। अग्नि वायु की शक्लैं यह हैं ≐ ≐ ÷ ⁝ ÷ ≓ ⫶ ⩦ शेष जल पृथ्वी की हैं।

**अन्यविधि**—जायचा रमल के कुल बिन्दु गिनो यदि कुल बिन्दु ३२ से कम हो तो रोगी मर जावेगा यदि ३२ अथवा अधिक बिन्दु हों तो अच्छा होगा।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे रोगी को शारीरिक रोग है या कोई बाधा है?

**उत्तर**—इस नियत से पाँसा डालकर जायचा बनावें ⩦ आसेब या बाधा की है यदि यह शक्ल खाना ६ या ११ या १२ में हो तो

आसेब बाधा है यदि ≡ हो तो जादू टोना अथवा नजर बंद डीठ आदि की व्याधि से बीमार हुआ है यदि अन्य शक्लें हो तो शारीरिक रोग जाने। यदि शक्ल ⩦ ≐ ⋮ ≡ ⫪ में से कोई शक्ल खाना ६ में हो और खाना १० में पुनरुक्त ( तक्कार ) हो तो निश्चय रूपसे आसेब बाधा है। यदि खाना ६ में ≡̣. हो तो पित्त से सर दर्द गर्दन व हलक् दर्द घुटना आदि हो वरन सन्निपात के चिन्ह हो। फिर देखो खाना ६ में कि उसमें कौन कौन बिन्दु हैं और कौन कौन बलवान हैं उन्हीं की ताकत से जवाब रोग का दो जैसे अग्नि तत्व हो तो पित्त का जोर वायु हो तो वायु-विकार जल तत्व का बिन्दु हो तो बलगम पृथ्वी तत्व हो तो अग्नि वायु के प्रकोप से व्याधि है। फिर देखो खाना ६ में कौन शक्ल है यदि ÷ है तो साधारण वियोग अथवा रंज की बीमारी है यदि ⫟ हो तो पेट विकार रक्त विकार है यदि ≡̣ हो तो मेदा की खराबी से बीमार है यदि ⩧ हो तो पेचिश यदि ⫪ हो तो बाधा जादू टोना आदि ⋮ है तो बेहोशी पागलपन है।

प्रश्न—यदि कोई पूँछे मेरा यह भेद छिपा रहेगा या खुल जावेगी?

उत्तर—इस नियत से जायचा बनाकर खाना ६ को देख यदि इसमें शक्ल दाखिल कोई भी हो और तकरार खाना १ में करे तो भेद छिपा रहेगा यदि इससे विपरीत शक्ल हो तो पर्दा खुल जायेगा। यदि खाना ६ में दाखिल अथवा साबित शक्ल हो तब भी भेद छिपा रहेगा ऐसा जवाब देवें यदि खारिज अथवा अशुभ मुनकलिब हो तो भेद खुल जायेगा शक्ल ⩦ से धाखा खुलने का हैं।

**दूसरी विधि**—यदि खाना १ व ६ दाखिल या साबित किसी हैसियत से हो तो भेद छिपा रहेगा, यदि खारिज अथवा मुनकलिब हो तो छिपाया जावे मगर अन्त में खुल जायेगा।

**अन्य तरीका**—खाना १ व ६ को गुणा कर यदि खारिज अथवा

मुनकलिब शक्ल हो तो भेद खुल जायेगा लेकिन यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\-\end{smallmatrix}$ हो तो गड़-बड़ी है यदि दाखिल या साबित हो तो छिपा रहेगा।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे कोई आदमी या व्यक्ति चला गया है अब लौटेगा या नहीं ?

**उत्तर**—पाँसा डाल कर जायचा बनावें खाना ६ को देखें यदि उसमें शक्ल खारिज या मुनकलिब हो तो वह व्यक्ति परेशान है। यदि खाना ६ में $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ या ≡ हो या अन्य कोई शक्ल दाखिल हो या खाना ७ में शक्ल दाखिल हो और तकरार उसकी खाना १० या ११ में हो या खाना १, २, ३ शुभ दाखिल या शुभ साबित हों या खाना ८ में शक्ल खारिज हो और तकरार उसकी खाना १० या १२ या १४ में से किसी में हो या खाना २, ४ में शक्ल दाखिल हो या खाना १, ९ में शुभ शक्ल दाखिल हो और तकरार उनमें से किसी की खाना ७ या ११ में हो और खाना १५ में शुभ दाखिल हो अथवा ( ३×४) और २×५ की शक्ल दाखिल हो या खाना ४ व १० में शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\-\\-\end{smallmatrix}$ हो तो वह गया हुआ व्यक्ति स्वयं वापस आवेगा।

यदि खाना ६ में शक्ल खारिज या मुनकलिब या अशुभ हो या खाना २, ४ में खारिज अथवा मुनकलिब शक्ल हो और जायचा मीजान (१५) में शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो अथवा ६×४ व २×५ की शक्लें साबित हों तो कठिनाई से मिलेगा। यदि खाना ४ व १० में शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ और $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ हो और खाना ७ दाखिल हो तो किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा घर पर आवे और इन्हीं घरों में ≡ हो तो बड़ी कठिनाई से वापस आवे यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो तो खर्चा करने से लौटे यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो तो बड़ी दौड़ धूप के बाद वापस आवे।

### यही तरीका खोई हुई वस्तु आदि में पाने का है।

यदि शक्ल $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\-\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ जायचा में हो तो कोई बहका कर ले गया है यदि वह जायचा में न हो तो खुद चला गया है। यदि शक्ल

≐ खाना ३ में हो या ५ से आठ खानों में से किसी घर में ⩦ हो तो वह जिन्दा है वर्ना मौत हो चुकी है।

**प्रश्न**—एक व्यक्ति भाग गया है बताओ किस तरफ गया है ?

**उत्तर**—इसी नियत से पाँसा डालकर प्रस्तार बनावें फिर शक्ल १ को ४ से गुणा करैं और ४ को १० से गुणा करैं फिर खाना १० को १५ में गुणा करैं और खाना ७ को १६ से गुणा करै यह चार शक्लैं हासिल करके फिर इनसे दो शक्लैं फिर इन दोनों से १ शक्ल बनावें यदि ≐ हो तो पुर्व को ⩦ हो तो पश्चिम को ⩦ हो तो उत्तर को ⩧ हो तो दक्खिन को ÷ हो तो पश्चिम और दक्खिन के कोना पर यदि ± हो तो उत्तर पूर्व के कोना पर यदि ≑ हो तो पूर्व दक्खिन के कोना पर यदि ≐ हो तो पूर्व उत्तर के कोना पर यदि ⩧ हो तो उत्तर तरफ यदि ⫶ या ⫶ या ÷ या ⋮ हो तो वह एक स्थान पर नहीं है मारा मारा फिरता है।

**दूसरी विधि**—कुल बिन्दु रमल के गिनो ४ पर भाग दें यदि एक बचेतो पूर्व२ बचे तो उत्तर ३ बचे तो पच्छिम शून्य बचे तो दक्खिन को गया है।

**प्रश्न**—चोर किस तरफ गया है ?

**उत्तर**—जायचा रमल बनावें खाना ७ व ६ को गुणा करै हासिल शक्ल को देखै यदि ≐ हो तो पूर्व ⩧ हो तो दक्खिन ± से पूर्व उत्तर के कोने में ≡ से दक्खिन ÷ हो तो मच्छिम ≑ हो तो पूर्व दक्खिन के कोना पर ⩧ से दक्खिन ⩦ से पच्छिम ⩦ से उत्तर ≐ से पूर्व तरफ ⩧ से उत्तर ⫶ से पूर्व उत्तर का कोना ÷ ⩦ से पच्छिम ⋮ से उत्तर तरफ गया है। परीक्षित अनुभव शक्ल खाना ६ को ८ से गुणा करै हासिल शक्ल से उपरोक्त रीत्यानुसार दिशा जाने को बतावें।

**प्रश्न**—अमुक व्यक्ति चला गया है कब आवेगा।

**उत्तर**—जायचा बनावें यदि खाना ४ की शक्ल अशुभ हो और

वह खाना ११ में उलट जावे अर्थात् खाना ४ का विलोम ( उलटा ) खाना ११ में हो तो गायब रास्ता में है शीघ्र आवेगा। यदि खाना २ में =̣ या ⁝ या ÷ हो और खाना ७ में ∸ या ≑ या ⫶ हो तो शीघ्र आवेगा। यदि खाना सात की शक्ल खारिज हो और खाना १ या ९ या ११ या १४ या १६ में शुभ दाखिल हो तो शीघ्र आवेगा यदि खाना ७ की शक्ल खाना ११ या १५ में तकरार करै तो खबर या पत्र शीघ्र आव यदि खाना सात में शक्ल खारिज हो और उसकी उलटी शक्ल खाना ३ या ९ में हो तो भी राह में है यदि खाना १ की शक्ल खाना ६ में और ≑ खाना १५ में या शक्ल खाना १ की खाना ८ या १२ में हो तो वह बीमार है।

अन्यविधि—जायचा की शक्ल ४ को ७ से गुणा करैं और २ को १२ से और ३ को ९ से गुणा करै यदि हासिल शक्ल दाखिल हो और उमहात ( १, २, ३, ४ ) में तकरार करे तो वह व्यक्ति शीघ्र आवेगा यदि मुनकलिब हो और बनात घरों म ( ५, ६, ७, ८ ) तकरार करै तो अन्दर एक मास के आवे यदि खारिज हो और खाना ९, १० ११, १२ में तकरार करे तो २ या ढाई मास में आवे यदि साबित शक्ल हो और खाना १३, १४, १५, १६ में तकरार करे तो बहुत देर उसके आने में है।

यदि यह मालूम करना हो कि अमुक व्यक्ति कब आवेगा तीसरी विधि यह है जायचा की खाना ४ को ५ से गुणा करैं फिर खाना सात को ९ से गुणा करै फिर इन दोनों की गुणा से एक शक्ल बनावे यदि हासिल शक्ल ÷ या ≐ हो तो एक मास में शनिवार अथवा बृहस्पति की रात को आवेगा। यदि ⩧ या ≐ हो तो ४५ दिन में मंगलवार या शनिवार की रात को आयेगा यदि ≡ या ⩦ हो तो ७० दिन वाद बुधवार या इतवार की रात को आवेगा। यदि ≑ या ≡̣ हो तो डेढ़ वर्ष पर आवे दिन शनिवार या बुधवार की रात को आवेगा यदि ∸ या ⫶ हो तो ढाई वर्ष बाद आवेगा यदि ⁝ हो तो

२५ दिन के भीतर आवेगा यदि ÷ हो तो एक दिन पर आवे अगर यह शक्ल ÷ उमहात में भी तकरार करे तो २४ घंटा में आवे।

नोट—यदि हासिल शक्ल खाना उमहात ( १, २, ३, ४ ) में हो तो दिन यदि बनात अर्थात् खाना ५ या ६ या ७ या ८ में हो तो सप्ताह यदि ९ से १२ के भीतर हो महीना शेष १३, १४, १५, १६ में होने से वर्ष का हुक्म लगावें।

प्रश्न—यदि कोई पूँछें कि भागे हुए व्यक्ति की तलाश में आदमी भेजा है वह मिलेगा या नहीं ?

उत्तर—यदि प्रस्तार में खाना १ की शक्ल केन्द्र ( १, ४, ७, १० ) में तकरार करै तो मिल जावेगा यदि खाना २, ५, ८, ११ में तकरार करे तो शीघ्र आ रहा है अन्य शक्लों से न मिलेगा। यदि शक्ल ⩧ खाना ३ या ५ या ६ या ७ या ८ में तकरार करे तो वह जीवित है यदि ⩧ की तकरार न हो तो वह व्यक्ति मर गया है।

प्रश्न—अमुक व्यक्ति खुद चला गया है या कोई फुसला कर भगा ले गया है ?

उत्तर—जायचा बनाकर शक्ल ⩧ व ÷ को देखैं यदि वह जायचा में मौजूद है तो कोई बहका कर भगा ले गया है यदि ⩧ ÷ प्रस्तार में न हो तो खुद कहीं चला गया है यदि खाना ६ व १२ में शुभ खारिज शक्ल हो तो लड़ाई झगड़े से भाग गया है।

प्रश्न—यदि कोई पूँछे अमुक माल चोरी गया है या खो गया है ?

उत्तर—इस नियत से जायचा बनावें यदि खाना २ में शुभ दाखिल हो तो चोरी नहीं गया है खुद कहीं रखकर भूल गया है यदि खाना २ की तकरार खाना ३ या ९ में हो तो मार्ग में भूल गया है बाकी पूरा विवरण दूसरे घर में प्रश्नोत्तर में लिख चुके हैं।

प्रश्न—यदि कोई पूछे अमुक जानवर खो गया है या चोरी गया है?

**उत्तर**—प्रस्तार बनाकर खाना १२ को देखैं यदि उसमें शक्ल शुभ खारिज हो तो वह पशु खुद कहीं चला गया है चोरी नहीं गया है यदि अशुभ खारिज हो तो चोरी गया समझै और मिलना भी कठिन है यदि शुभ दाखिल शक्ल है तो खुद चला गया है तलाश करने से मिल जावेगा यदि अशुभ दाखिल हो तो न मिलेगा। किस दिशा में है खाना १२ की शक्ल जिस दिशा से सम्बन्ध रखती हो उसी तरफ को पशु गया जानो। यदि ≡ या ÷ मौजूद जायचा न हो तो पशु छुट्टा चर रहा है यदि ≡ ÷ मौजूद जायचा हो तो चोरी गया है।

## खाना ७ के प्रश्नोत्तर का विवरण

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे मेरा विवाह होगा कि नहीं ?

**उत्तर**—जायचा रमल बनाव और खाना १, ४, ७, ६, ११ व १६ को देखौं यदि इन घरों में शक्लैं दाखिल किसी प्रकार की हों और शक्ल ≡ सिवाय खाना १२ के किसी अन्य जगह तकरार करै तो व्याह जरूर होगा। कुछ शक्लैं शुभ दाखिल हो तो बड़ी धूम-धाम से व्याह होवे यदि अशुभ अधिकतर हो तो न हो।

यदि शक्ल खाना ७ या खाना १ में शुभ दाखिल हो और इनकी तकरार खाना १० या ११ में हो और शक्ल ≡ खाना ४, ५, ६, ७, ८, या ६ या खाना १० में किसी जगह हो तो विवाह कहीं से जरूर हो जावे। यदि खाना "सात" में ⁞ का ⁝ या ÷ इनमें से कोई शक्ल हो और ≡ प्रस्तार में हो तो व्याह हो जायेगा, मगर पति-पत्नी में मेल न रहेगा यदि ÷ या ≡ खाना ७ में हो तो दोनों में फूट रहेगी, अथवा खाना सात या ११ शुभ दाखिल शक्ल हो तो व्याह हो जावे—

**प्रश्न**—यह विवाह शुभ होगा अथवा कष्टदायक होगा।

**उत्तर**—यदि खाना ४ अशुभ शक्ल हो तो मकान जिसमें रहेंगा वह गिरेगा या कोई अड़चन उस घर में रहेगी जिससे कष्ट

होगा यदि खाना ७ या १६ में ÷ हो तो स्त्री पुरुष व्याकुल तथा सफर में रहें यदि ७ या १६ में, ÷ ⋮ ⋮ ÷ इनमें से कोई शक्ल होतो एक की मृत्यु हो जावे यदि यह शक्लै खाना ३ में हो तो इष्ट मित्र सगे सम्बन्धी और खाना १० माता, पिता तथा व्यापार में गड़बड़ी लगे यदि यह खाना सात में हो तो स्त्री पुरुष में मेल बना रहे यदि खाना ६ में हो तो कोई न कोई बीमार रहे।

प्रश्न—यदि कोई प्रश्न करै वह स्त्री पतिव्रता है या भ्रष्टाचरण हो गई।

उत्तर—इसी नियत से पाँसा डाल कर जायचा रमल बनावे यदि खाना ७ में शक्ल शुभ दाखिल हो और तकरार उसकी खाना १ या २ या ४ या ५ या ८ या १० या ११ में से किसी में हो या खाना २ व ८ किसी प्रकार से दाखिल हो या खाना ७ में ≡ ≡ ÷ ÷ में से कोई शक्ल हो या खाना ७ में ÷ हो और खाना ८ में ≡ हो या खाना ७ में ÷ और खाना ८ में ≡ हो तो स्त्री पतिव्रता है। अथवा खाना १ को ७ से गुणा करे यदि हासिल शक्ल ÷ या ⋮ या ÷ हो तो पतिव्रता उत्तम वंश की है यदि ≡ ≡ ≡ हो तो भी उत्तम प्रकृति नेक चलन पति सेवी है यदि ≐ ≐ हो तो पतिव्रता है मगर क्रोध की मात्रा विशेष है यदि ÷ ⋮ हो तो वह स्त्री व्यभिचार युक्त है, प्रायः मसखरापन किया करती है विना पति की आज्ञा के इधर उधर जाया करती है। यदि ≡ ≡ या ÷ हो तो लड़ाका है यदि ⋮ है पति से शत्रुता करै यदि ÷ या ÷ हो तो कुरूपा मूर्ख हो भ्रष्टाचरण हो।

प्रश्न—इस स्त्री के गर्भ से सन्तान योग है या नहीं?

उत्तर—यदि जायचा में खाना ५ में ⋮ ⋮ ÷ में से कोई शक्ल हो या खाना १ व ७ की दोनों शक्ल अग्नि या वायु की हों तो सन्तान न होगी अथवा खाना १ व ७ की गुणा से ÷ ≡ ⋮ ≡

$\begin{smallmatrix}-\\-\\-\\-\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ में से कोई शक्ल हो तो भाग्यशालिनी हो सन्तान भी हो यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\-\\-\end{smallmatrix}$ तब भी भाग्यवान हो सन्तान हो तो मगर प्रायः गर्भपात हो जाया करै।

**प्रश्न**—यदि कोई स्त्री अपने पति के चाल चलन की बावत प्रश्न करै इसका आचरण कैसा है ?

**उत्तर**—जायचा बनावें यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ खाना ७ में हो और खाना ११ में अशुभ शक्ल हो तो मर्द बद चलन है यदि खाना ७ शुभ हो और खाना ८ में अशुभ या $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ उसमें हो तो इस समय भ्रष्टाचरण है मगर शीघ्र भविष्य में सुधर जायेगा यदि खाना ७ अशुभ और खाना ८ शुभ हो तो प्रथम धर्मवान हो मगर अन्त में बिगड़ जावे।

**प्रश्न**—क्या मेरा पति दूसरा बिवाह करेगा या नहीं ?

**उत्तर**—जायचा रमल बनावे खाना २ को देखो यदि शुभ दाखिल शक्ल हो तो ब्याह दूसरा करेगा यदि शुभ खारिज हो तो न करेगा यदि करेगा भी तो साथ छूट जायेगा। यदि शुभ साबित हो तो शादी करेगा और बहुत दिन साथ रहेगा अन्य शक्लों से नहीं करेगा।

**प्रश्न**—यदि कोई पूछै कि मेरी स्त्री किसी अन्य व्यक्ति से सम्बन्ध रखती है या नहीं ?

**उत्तर**—इसी नियत से पाँसा डालकर प्रस्तार बनावें यदि खाना सात की शक्ल खाना ११ में आवे तो किसी अन्य व्यक्ति से साथ रखती है यदि ऐसा न हो तो पतिव्रता है।

**प्रश्न**—पति और पत्नी में प्रेम रहेगा या नहीं ?

**उत्तर**—जायचा रमल बनावें यदि खाना १ की शक्ल खाना ५ या ९ या १३ में तक़रार करै तो अगाध प्रेम पति का सदैव रहेगा। यदि खाना १ की शक्ल खाना ३ या ११ या १५ में तक़रार करे तो स्त्री की तरफ से प्रेम अधिक रहेगा यदि दोनों घरों की शक्लैं यानी

खाना १, ७ की उपरोक्त रीत्यानुसार अपने अपने घरों में पड़ी हों तो यह जोड़ा मुबारक रहेगा दम्पति जीवन सुखमय व्यतीत होगा।

प्रश्न—यदि कोई पूँछै अमुक व्यक्ति जीवित है या मर गया है ?

उत्तर—इस नियत से प्रस्तार बनाकर देखो खाना १, ४, ६, ७, ६ और १२ यदि कुल घरों में शक्लें जीवधारी हों तो जीवित जानो यदि कुछ जीवधारी की शक्लै हो कुछ निर्जीव की हो तो उनके गवाह तथा मित्र वाली शक्लों को भी जायचा में तलाश करें जिधर अधिक ओट हो उसी अनुसार जवाब देवें। जीवधारी शक्लै यह हैं $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\-\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\-\\-\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\-\\-\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ जिसमें से शक्ल $\begin{smallmatrix}-\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ और $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ यह दो शक्लै ऐसी है यदि शुभ घरों में अथवा पृथ्वीतत्व घरों में ( ४, ८, १२, १६ ) में हो तो जीवधारी अन्यथा नीर्जीव मानी जाती है। यह दुःस्वभाव की शक्लै हैं शेष शक्लै निर्जीव की हैं।

दूसरी विधि—जायचा में अग्नि वायु के बिन्दु अधिक हों तो जिन्दा है यदि जल और पृथ्वी के बिन्दु अधिक हों तो मरा जानो।

तीसरी विधि—प्रस्तार में खाना १ से १५ तक के कुल बिन्दु जोड़े यदि बिन्दु ३२ से कम हो तो मरा हुआ समझो यदि ३२ अथवा ३२ से अधिक हो तो वह अवश्य जीवित है।

चौथी विधि—यदि खाना सात में $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}-\\-\\-\\-\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}-\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\-\\-\end{smallmatrix}$ इन में से कोई शक्ल हो और खाना ४ व १० में अशुभ शक्ल हो तो मरा जानो। यदि शुभ शक्लै उपरोक्त घरों में हों तो जीवित जानो अथवा खाना ४ में $\begin{smallmatrix}-\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ और खाना ८ में $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो और इन में से किसी की तकरार ( पुनरुक्त शक्ल ) खाना १ में हो तो मरा हुआ जानों। यदि खाना ७ में शक्ल $\begin{smallmatrix}-\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो और तकरार खाना ८ यां १२ में हो तो मरा जाने यही तरीका प्रायः रोगी के प्रति लोग काम में लाते हैं। अथवा जायचा के कुल बिन्दु खाना १ से १५ तक के गिन लेवें और खाना ३ में जो बिन्दु हो उनका और जो पाई हो उनको दूना करले

अस्तु पाई के २ बिन्दु माने और शेष जो बिन्दु हों जैसे खाना ३ में ≐ हो तो कुल बिन्दु ६ माने, क्योंकि दो पाई में ४ बिन्दु और बिन्दु अग्नि वायु के मिलकर ६ हो गये—अस्तु, खाने ३ के कुल बिन्दु से उपरोक्त खाना १ से १५ के बिन्दुओं के जोड़ से गुणा कर देवें गुणन फल को पाँच से भाग दे देव जो बाकी रहे उसको खाना १ से जायचा के घरों पर बाँटे जिस खाना पर तकसीम भाग फल का अंक पर्याप्त होवे—उस घर को देखैं, यदि उसमें अग्नि या वायु की शक्ल हो तो जिन्दा हैं, यदि पृथ्वी तथा जल की शक्ल हो तो मरा जानो अथवा खाना १ व ४ से गुणा करके देखै यदि यह शक्ल शुभ दाखिल या साबित हो तो जिन्दा है अशुभ हो तो मुर्दा जाने। अथवा खाना १ में शुभ शक्लें जैसे ⩧ ≐ ÷ ⫶ ≐ ≡ ⁝ इनमें से कोई हो और तकरार शुभ घर में करै। शुभ घर खाना १, ५, ६, ११, १३ माने गये हैं और २, ३, ४, १०, १४, १५, १६ मध्यम शुभ माने गये हैं और खाना ६, ८, १२ अशुभ माने गये।

**प्रश्न**—अब विदेशी अथवा ग़ायब का इरादा क्या है, आवेगा या नहीं ?

**उत्तर**—जायचा बनाकर खाना सात को देखै यदि उसमें शक्ल ÷ या ≑ या ÷ या ⁝ हो और खाना ६ या ११ में तकरार करै तो इरादा लौट आने का रखता है। यदि खाना सात व ११ में शक्ल ÷ या ≑ हो तो शीघ्र खत या खबर उसको आयेगी अथवा खाना १ व ३ और ९ व ११ को आपस में गुणा करके दो शक्लै बनावें फिर इन दो से गुणा करके एक शक्ल बनावें यदि हासिल शक्ल दाखिल या साबित हो तो वह व्यक्ति अपने ही स्थान पर है और रहेगा। यदि उसकी तकरार खाना १, ४, ७, १० यानी केन्द्र घरों में हो तो वह आने का इरादा कर रहा है यदि हासिल शक्ल ÷ या ≑ या ÷ या ⁝ हो और खाना २, ५ या ८ या ११ में हो तो उस जगह से दूसरी जगह जाने का विचार कर रहा है। यदि उसमें खारिज शक्ल

आवे और खाना ३ या ९ या ६ या १२ में हो तो उस जगह से अन्य स्थान को चला गया है, वहाँ नहीं है।

प्रश्न—यदि कोई पूँछै गायब व्यक्ति किधर है?

उत्तर—जायचा रमल इस नियत से बनावें और खाना १० को देखैं वह शक्ल जिस दिशा से सम्बन्ध रखती हो उसी तरफ को बतावें। शक्ल ≐ ≐ ÷ ⫶ पूर्व की है और ≐ ⁝ ⁝ ÷ पच्छिम की हैं ≡ ÷ ÷ ≡ दक्खिन की है ≡ ÷ ⁝ ⩧ यह उत्तर की शक्लें हैं।

दूसरी विधि—खाना ८, ९ को गुणा करैं यदि हासिल शक्ल सात या १२ में तकरार करे तो पूर्व तरफ खाना ४ या ५ से दक्खिन तरफ और ८ या ९ से उत्तर तरफ यदि खाना १० या ११ में हो तो पच्छिम तरफ है, यदि यह हासिल शक्ल प्रस्तार में न हो अथवा अन्य घर में हो अस्तु यदि अग्नि में हो तो पूर्व तरफ यदि वायु घर में हो तो पच्छिम यदि जल के घर में हो तो उत्तर यदि पृथ्वी के घर में हो तो दक्खिन तरफ कहना चाहिये। हम प्रथम लिख चुके हैं कि जायचा में खाना १, ५, ९, १३ अग्नि और २, ६, १०, १४ वायु और ३, ७, ११, १५ जल तथा ४, ८, १२, १६ घर पृथ्वी के हैं इसी अनुसार दिशा बताना चाहिये। अथवा खाना २ व ६ को गुणा करै यदि हासिल शक्ल अग्नि की हो तो पूर्व तरफ और वायु की हो तो पच्छिम तरफ यदि जल की हो तो उत्तर तरफ यदि पृथ्वी तत्व की शक्ल हो तो दक्खिन तरफ गायब व्यक्ति है।

प्रश्न—यदि कोई ँछै गायब व्यक्ति उसी जगह है जहाँ पर था या अन्य जगह चला गया?

उत्तर—जायचा बनावें खाना उमहात (१, २, ३, ४) की शक्लों को खाना सात से गुणा करै यदि यह शक्लै पैदा हों ÷ ⁝ ⩧ ≐ अथवा ≐ ⩧ ≡ में से कोई हो तो उसी जगह पर है यदि अन्य

शक्ल हो तो चला गया। इसके अतिरिक्त खाना १, ९, १५ शुभ दाखिल हो तो उसी जगह पर है यदि खाना १ की तकरार खाना ६ में हो या ६ की तकरार खाना १३ में हो और खारिज अथवा मुनकलिब किसी प्रकार से हो तो वह व्यक्ति उस जगह से दूसरे स्थान पर चला गया है। यदि शक्ल खाना ५ की अग्नि या वायु की हो तब भी वह दूसरी जगह चला गया बतावें।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे भागा हुआ अथवा गायब व्यक्ति कितनी दूर पर है ?

**उत्तर**—इस नियत से जायचा रमल बनावें और खाना १० की शक्ल को देख और दायरा ( पंक्ति ) अबदह के अनुसार अपने घर से किस कदर अधिक स्थान में आई है उसी कदर घर के अङ्क होना चाहिये उतने ही मील कहना चाहिए यदि $\substack{\cdot\\-\\-\\-}$ हो तो २९ $\substack{-\\\cdot\\-\\-}$ $\substack{\cdot\\\cdot\\-\\-}$ से २८ $\substack{-\\-\\\cdot\\-}$ से २६ $\substack{\cdot\\-\\\cdot\\-}$ से २५ $\substack{-\\\cdot\\\cdot\\-}$ से २४ $\substack{\cdot\\\cdot\\\cdot\\-}$ से २३ $\substack{-\\-\\-\\\cdot}$ से २२ $\substack{\cdot\\-\\-\\\cdot}$ से २१ $\substack{-\\\cdot\\-\\\cdot}$ से २० $\substack{\cdot\\\cdot\\-\\-}$ से १९ $\substack{-\\-\\\cdot\\\cdot}$ से १८ $\substack{\cdot\\-\\\cdot\\\cdot}$ से १७ $\substack{-\\\cdot\\\cdot\\\cdot}$ से १६ $\substack{\cdot\\\cdot\\\cdot\\\cdot}$ से १५ $\substack{-\\-\\-\\-}$ से २० मील का आदेश देना चाहिये।

**अन्य विधि**—जायचा बनाकर खाना ३ को देख कि इस शक्ल की तकरार कहाँ पर है यदि कहीं तकरार न हो तो उस शक्ल को शक्ल $\substack{\cdot\\-\\\cdot\\-}$ से गुणा करें और देखे कि इस शक्ल ने कहाँ तकरार किया है यदि खाना १ में तकरार करै तो गायब उलटे पाँव वापस आवे यदि खाना २ में तकरार कर रहा है तो इधर उधर डाँवाडोल फिर रहा है निकट ही है यदि खाना ३ में तकरार करे तो ४ या ५ मील पर खाना ४ में ६ मील खाना ५ से १२ मील खाना ६ से २५ मील खाना सात से ३८ मील खाना ८ से ५० मील खाना ९ से विशेष दूर खाना १० से ६५ मील खाना ११ से ?२५ मील/खाना १२ से १५० मील खाना १३ से पौने चारसौ मील १४, १५, १६ से बहुत दूर होना कहैं यदि $\substack{-\\\cdot\\\cdot\\-}$ खाना ८ में हो तो गायब निकट आ गया है। यदि खाना ७ खारिज और उसकी उलटी शक्ल खाना ३ या ६ में हो तो बहुत

जल्द आवें यदि ५ में $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो और खाना ६ में तकरार करै तो आशा है कि खबर या खत गायब का रास्ता में है जो शीघ्र आवेगा।

प्रश्न—यदि कोई पूछे कि अमुक व्यक्ति जो लापता है अकेला है या कोई साथी भी है?

उत्तर—जायचा बनाकर खाना ८ को देखो यदि उसमें शुभ दाखिल शक्ल हो तो उसके साथ में दूसरा आदमी है यदि वह शक्ल अग्नि या वायु की हो तो पुरुष है यदि जल या पृथ्वी तत्व की हो तो स्त्री साथ में हो यदि खाना ७ की तकरार खाना १३ में हो तो गायब ने स्त्री कर ली है यदि १२ में तकरार करे तो लौंडी बाँदी अथवा अन्य बाजारू स्त्री है यदि खाना ११ में तकरार करे तो किसी वेश्या के जाल में फँस गया है।

प्रश्न—यदि कोई पूछे कि अमुक व्यक्ति आने वाला है आवेगा या नहीं?

उत्तर—जायचा बनावें यदि खाना ७ में शक्ल खारिज हो और उस शक्ल की विलोम (उलटी) शक्ल खाना २ या ९ या ११ में हो तो आवेगा यदि खाना सात में शक्ल दाखिल हो और तकरार २ या ९ या ११ में हो तो भी आवे यदि खाना ७ की शक्ल खाना ३ में हो तो रास्ता में है। अथवा खाना ३ व ६ की शक्ल को गुणा कर यदि हासिल शक्ल दाखिल हो और तकरार १ या २ या ६ या ४ में करे तो शीघ्र आवे यदि खारिज हो तो देर में आवे यदि अशुभ खारिज हो तो न आवे अथवा खाना १, २, ४, ५ में दाखिल शक्लें हो और खाना ७ या ८ या ९ में कोई भी शक्ल खारिज हो तो जल्दी आवे।

प्रश्न—यदि कोई पूछे गायब या विदेशी कितने दिनों में आवेगा?

उत्तर—जायचा बनाकर शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ को तलाश करें कि कहाँ पर हैं यदि खाना उमहात (१, २, ३, ४ में)

तकरार करैं तो दो चार दिन में आजावेगा। यदि बनात में हो यानी (५ या ६ या ७ या ८ में) तो दो एक सप्ताह यदि ९, १०, ११ या १२ में से किसी में हो तो एक मास में यदि १३ से १६ से बीच में हो तो दो एक वर्ष आवेगा अथवा शक्ल ७ उमहात मे तकरार करे तो एक वर्ष में यदि बनात में हो तो महीना भर में यदि मुतबल्लिदात (९, १०, ११, १२) में हो तो आठ १० दिन में यदि जवायदात में (१३, १४, १५, १६) में हो तो शीघ्र आवेगा।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे अमुक व्यक्ति के साथ साझे में व्यापार करता हूँ लाभ होगा या हानि ?

**उत्तर**—इस नियत से जायचा बनावें खाना १० से गुणा करै और खाना ६ को ८ से गुणा करैं फिर इन दोनों की गुणा से एक शक्ल बनावे यदि यह शक्ल शुभ दाखिल व साबित हो तो लाभ रहेगा यदि शुभ खारिज व मुनकलिब हो तो मित्रता रहे मगर लाभ न हो। यदि अशुभ हो तो हानि होवे यदि हासिल शक्ल $\substack{-\\-\\\cdot\\-}$ या $\substack{-\\-\\-\\\cdot}$ हो तो झगड़ा हो जावेगा-यदि खाना अव्वल में $\substack{\cdot\\-\\-\\-}$ या $\substack{-\\-\\-\\\cdot}$ हो और खाना २ में शुभ किसी हैसियत से हो तो हानि न होगी यदि खाना ८ शुभ हो तो हानि होवे।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछैं कि मैं किसी पर दावा करना चाहता हूँ जीतूगा या नहीं ?

**उत्तर**—जायचा बनावें—खाना १ को ९ से गुणा करे और खाना ७ का १० से गुणा करैं प्रथम गुणन फल मुदई अथवा पृच्छक या वादी का है दूसरा गुणन फल मुदाअलेह अथवा प्रतिवादी या विपक्षी का है अस्तु इनमें जो शुभ हो और शुभ घरों में बलवान हो वही जीतेगा बराबर हो सुलह हो जाये।

**दूसरी विधि**—खाना १, २, ३, ४, ९, १०, १३ यह मुदई वादी के घर हैं और खाना ५,६,७, ८,११, १२, १४ यह प्रतिवादी या विपक्षी की शक्लें हैं अस्तु, जिस तरफ शुभ शक्लें अधिक हों वही जीतेगा यदि

बराबर हों तो सुलह हो जावे। अथवा उपरोक्त घरों की शक्लों के विन्दु जिधर अधिक हों वही जीते। इसके अतिरिक्त यदि खाना १ की शक्ल खाना १५ में हो तो न्यायाधीश मुद्दई की तरफ अपना ध्यान ज्यादा रक्खे यदि खाना ७ की शक्ल खाना १५ में हो तो प्रतिवादी की ओर झुकाव रक्खेगा यदि ≑ या ≡ खाना १५ में आवे तो पँचायत से फैसला हो जावे सुलह हो जावे यदि ÷ या ╤ मीजान (१५) में हो तब भी फैसला हो जावे। अथवा खाना ५ की शक्ल खाना ७ के तकरार करै तो सुलह हो जावे।

तीसरी विधि—खाना १, ४, ६, ११ प्रश्नकर्ता का है तथा २, ८ १२ दूसरी पार्टी की शक्लें हैं और खाना १५ न्यायाधीश है जिसकी तरफ शक्लैं शुभ ज्यादा हों वही जीतेगा।

प्रश्न—यदि कोई पूँछै अमुक व्यक्ति को अपने मुकदमे में वकील करता हूँ कैसा काय करेगा?

उत्तर—इस नियत से जायचा रमल बनावे खाना ११ को देखो यदि उसमें शक्ल ≐ या ╤ ≡ ÷ या ≑ में से कोई शक्ल हो और खाना १, ४, १०, १४ में किसी जगह तकरार करै तो वह वकील अथवा मुख्तार ईमान्दारी से काम करैगा और केस में विजय होगी इसके विपरीत होने पर विपरीत फल कहो।

प्रश्न—मैं कुश्ती लड़ने जाता हूँ जीतूँगा या नहीं?

उत्तर—इस प्रकार के प्रश्न पर प्रस्तार बनाकर आठवाँ घर देखो यदि शुभ दाखिल हो अथवा मुनकलिब हो तो पृच्छक जीतेगा। जो शुभ खारिज अथवा अशुभ खारिज हो तो शत्रु जीतेगा यदि शुभ साबित हो तो प्रश्नकर्त्ता जीतेगा यदि अशुभ मुनकलिब या अशुभ साबित अथवा अशुभ दाखिल हो तो जीत शत्रु की हो। यदि खाना १, २, ३, ४, ९, १०, ११, १३, १५ घरों में शुभ शक्ल हो अथवा विन्दु कम हो तो पृच्छक की जीत होगी और ५, ६, ७, ८, १२, १६ इन घरों में शुभ शक्ल हो और विन्दु कम हो तो शत्रु की जीत होवे।

अथवा खाना १ की शक्ल शुभ दाखिल हो प्रश्नकर्ता जीतेगा यदि अशुभ हो तो हार जावेगा यदि अशुभ मुनकलिब या अशुभ खारिज आवे तो पृच्छक जीतेगा नहीं। अशुभ या शुभ साबित हो तो बड़ी देर बाद जीत होगी। यहाँ शत्रु से भी लड़ने का कायदा है।

## खाना ८ के प्रश्नोत्तर का विवरण

**प्रश्न**—यदि कोई प्रश्न करै मुझको किसी की तरफ से भय तो न होगा ?

**उत्तर**—इसी नियत से जायचा रमल बनावें खाना ८ को देखै यदि यह शुभ खारिज हो और खाना १ व १३ में कोई भी शुभ शक्ल हो तो किसी प्रकार का भय न होगा यदि खाना ८ शुभ दाखिल या साबित हो और खाना १, १३ उसी प्रकार से शुभ हो तो जरूर भय होगा और हानि भी होगी यदि अशुभ दाखिल या साबित हो तो नाना प्रकार की चिन्तायें व्यापैं यदि ⩧ खाना ८ में हो तो तब भी भय रहै।

**दूसरी विधि**—खाना १, ४, ८, ९, १० को देखें यदि इन घरों में शुभ शक्लैं किसी प्रकार की हों तो पृच्छक को किसी प्रकार का भय नहीं है यदि ≣ ≐ ÷ ⁝ ⫶ ⩧ इन शक्लों की तकरार रमल के प्रस्तार में अधिक हो तो भय हो लेकिन यदि खाना ८ शुभ हो तो भय न हो।

**प्रश्न**—यदि कोई पूंछै अमुक स्थान को एक वी. पी. पारसल भेजा है वह लेगा या नहीं ?

**उत्तर**—जायचा बनाकर खाना १ को ११ से गुणा करें हासिल शक्ल को खाना दो की शक्ल से गुणा करैं यदि वह शक्ल दाखिल या साबित हो तो वह पारसल न छोड़ायेगा और वापस इनकारी में आवेगा यदि यह शक्ल खारिज अथवा मुनकलिब हो तो वह पारसल छोड़ायेगा और रुपिया वापस मिलेगा।

**प्रश्न**—खोया हुआ माल मिलेगा या नहीं ?

**उत्तर**—जायचा रमल पाँसा द्वारा बनावें यदि खाना ८ दाखिल हो तो माल न मिलेगा यदि खाना ८ खारिज हो और खाना २ दाखिल हो तो माल मिलेगा यदि खाना ८ अशुभ खारिज हो और खाना २ अशुभ दाखिल हो तो बड़ी कठिनाई से मिलेगा यदि खाना २ अशुभ खारिज और खाना ८ अशुभ दाखिल हो तो माल हाथ न आयेगा बल्कि तलाश में और भी खर्चा हो जावे यदि खाना ८ मनुकलिब हो और खाना २ दाखिल हो तो कुछ मिले और कुछ न मिले यदि खाना ७ और ८ उमहात घरों तकरार करे तो चोर मय माल के मिलेगा यदि केवल खाना ८ की शक्ल उमहात घरों में से किसी में हो अर्थात् १, २, ३, ४ किसी घर में हो तो माल मिले चोर न मिले।

**दूसरी विधि**—जायचा बनाकर खाना ६ व ७ का गुणा करे यदि हासिल शक्ल शुभ दाखिल हो तो खोया हुआ माल मिलेगा यदि शुभ मुनकलिब हो तो कुछ मिले कुछ न मिले अशुभ मुनकलिब व खारिज व साबित में कुछ न मिले अथवा प्रस्तार भर के कुल बिन्दु गिनो दो का भाग दो यदि १ बाकी बचे तो कुछ न मिले यदि शून्य रहे तो मिल जावे यदि खाना सात में ∸ ⫶ ⩪ में से कोई शक्ल हो तो सरलता पूर्वक मिले। यदि ⩧ ⩦ ≣ हो तो परिश्रम से कुछ दिन बाद मिले यदि ⩧ या ⁝ हो तो बड़े परिश्रम के बाद मिले यदि ÷ ⩪ ≛ ÷ ⩦ हो बिल्कुल न मिले—खामोश हो जाओ।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछै मृत्यु कब होगी।

**उत्तर**—जायचा रमल बनावें यदि खाना ८ शुभ खारिज हो तो वृद्धावस्था में मृत्यु होगी और सभी आशायें पूरी होंगी यदि अशुभ खारिज हो तो युवा अवस्था में मृत्यु होवे यदि शुभ साबित हो तो संसारी झगड़ों में फँसे हुये कष्ट से मृत्यु हो यदि अशुभ साबित हो तो कत्ल या ऊँचे से गिर कर मृत्यु हो यदि मुनकलिब शुभ हो तो लड़ाई

झगड़े फौजदारी आदि से मृत्यु होवे यदि ≑ या ⁝ हो तो बड़ी निर्दयता से मृत्यु हो।

**अन्य विधि**—यदि खाना ४ व ८ की गुणा से ≘ या ≟ हो तो अनायास मृत्यु होगी यदि ÷ या ⋮ हो तो क्षुधा से मृत्यु हो यदि शक्ल दो अशुभ शक्लों की गुणा से बने तो विष खाने अथवा सर्प काटने से हो यदि ⁝ ÷ या ≑ हो तो शान्ति पूर्वक मृत्यु हो यदि ≡ या ≑ हो तो क्लेश चिन्ता में घुलकर हो यदि ÷ या ⋮ हो तो परदेश में हो यदि ≡ या ÷ हो तो किसी अस्त्र से या चोट से मौत हो या जानवर के मारने आदि से मृत्यु हो यदि ≡ ≡ ≡ तो पूर्ण आयु पर अथवा बाधा से मृत्यु हो—लेकिन अगर ४ व ८ की गुणा से शक्ल खाना १ में हो तो क्रोध आदि से हो २ में हो धन नाश से दुःखित होकर मरे साथ ही खाना ८ को भी देखो यदि उसमें शक्ल ≡ या ÷ या ÷ हो तो जख़्म तलवार या किसी अस्त्र से मरे यदि ≟ हो तो वृक्ष से गिर कर मरे यदि ≡ या ≑ हो तो शत्रु द्वारा मृत्यु होवे।

**प्रश्न**—खोया हुआ माल मिलेगा या नहीं ?

**उत्तर**—जायचा बनाकर खाना ६ व ७ को गुणा करे यदि हासिल शक्ल शुभ दाखिल हो तो खोया हुआ माल मिलेगा यदि शुभ मुनकलिब हो तो कुछ मिले कुछ न मिले अशुभ मुनकलिब व खारिज व साबित में कुछ न मिले अथवा प्रस्तार भर के कुल बिन्दु गिनो दो का भाग दो यदि १ बाकी बचे तो कुछ न मिले यदि शून्य रहे तो मिल जावे यदि खाना सात में ÷ ⁝ ≑ में से कोई शक्ल हो तो सरलता पूर्वक मिले। यदि ≡ ≡ ≡ हो तो परिश्रम से कुछ दिन बाद मिले यदि ≡ या ⋮ हो तो बड़ी फजीहत के बाद मिले यदि ÷ ÷ ≡ ≑ ⋮ हो बिल्कुल न मिले—खामोश हो जाओ।

**प्रश्न**—क्या मुझको ऋण मिलेगा या नहीं।

उत्तर—जायचा रमल बनावे खाना २ को देखो यदि उसमें शुभ खारिज शक्ल हो तो सरलतापूर्वक मिले यदि ख़ारिज और साबित या दाखिल तथा अशुभ मुनकलिब हो तब भी यही हुक्म करें। यदि शुभ शक्ल हो तो देर से मिले यदि ≐ खाना १ में और खाना २, ८ में तकरार करे तो फौरन कर्जा अदा भी हो जावे। यदि ≡ ≡ या ÷ खाना २ में हो और खाना ६, ८ में तकरार हो तो कर्जा बढ़ता जावेगा।

प्रश्न—अमुक व्यक्ति कर्ज माँगता है अथवा कर्जा का रुपिया वसूल होगा या नहीं।

उत्तर—इसी नियत से पाँसा डालकर प्रस्तार बनावे यदि खाना २ में खारिज और ख़ाना ८ में दाखिल हो तो कर्जा लेने वाले को दे दो वसूल कर देवेगा यदि विपरीत शक्ल हो तो न दो। यदि खाना २ व ३ में शुभ ख़ारिज व मुनकलिब हो और खाना ८ दाखिल या साबित हो तो ऋण लेने वाला रुपिया दे देगा यदि ख़ाना २ में ÷ ÷ ≡ में से कोई हो तो कुछ देवे कुछ न अदा कर पावे यदि ≡ ÷ या ⁝ हो तो कुछ भी न देगा, इसको ऋण मत दो यदि ≡ ≡ हो तो चिरकाल तक हीला हवाला करके टालता रहे यदि ख़ाना ८ में ⁝ ≐ ≐ ÷ ⁝ में से कोई शक्ल हो तो सुगमता पूर्वक रुपिया वसूल हो जावेगा ऋण दे दो।

प्रश्न—यदि कोई पूँछै मुझको अमुक व्यक्ति की जायदाद या धन आदि मिलेगा ?

उत्तर—जायचा बनाकर खाना ४ को ८ से गुणा करो हासिल को ख़ाना ८ से गुणा करें यदि ≡ या ⁝ या ÷ में से कोई शक्ल हो तो माल मीरास जायदाद मिल जायेगी यदि ≡ हो तो परिश्रम करके पावें यदि ÷ या ⁝ हो तो कुछ पावें और कुछ न पावें। यदि ≡ ≡ ≡ हो तो देर से पावे यदि ≐ या ≐ हो तो प्रश्नकर्ता खुद

न लेवेगा यदि ⫶ ÷ ≐ ≑ या ≡ हो तो प्रश्नकर्ता का भाग्य खोटा है न मिलेगा अथवा १ व ४ की गुणा करें हासिल को खाना ८ से गुणा करै हासिल शक्ल को उपरोक्त रीत्यानुसार फल कहैं।

**प्रश्न**—अमुक मुकदमा में अमुक व्यक्ति को सजा होगी या नहीं ?

**उत्तर**—जायचा रमल बनावें खाना ८ व १२ को देखैं यदि दोनों घरों में शुभ खारिज शक्ल होवे तो पृच्छक छूट जावेगा यदि खाना ८ में खारिज और खाना १२ में दाखिल हो तो कैद हो जावे यदि खाना १२ खारिज हो और खाना ८ में दाखिल हो।तो जुर्माना होगा छूटेगा नहीं फिर खाना १ को ८ से गुणा करो हासिल शक्ल को खाना १२ से गुणा करै यदि हासिल शक्ल शुभ खारिज हो तो छूटे दाखिल व अशुभ से नहीं।

## खाना ६ के प्रश्नोत्तर का विवरण

**प्रश्न**—परीक्षा दिया है परिणाम क्या होगा ?

**उत्तर**—जायचा रमल बनावें यदि खाना ९ में ≐ या ≡ या ≐ या ≑ हो तो पास होगा। यदि खाना का शक्ल बलवान अ ब द ह पंक्ति के अनुसार हो तो पास हो अथवा खाना १×६ की हासिल शक्ल शुभ हो तो पास हो जावे। यहाँ एक प्रसार बना कर दिखाते हैं एक व्यक्ति आया और पूछा इस वर्ष बी. ए. की परीक्षा दिया है पास हूँगा अस्तु, पासा डालकर प्रस्तार बनाया तो यह जायचा बना।

देखो खाना ६ में शक्ल सूर्य्य की ≐ शुभ पड़ी है, अतः पास होने की आशा है और खाना ५ में ≐ है दायरा अबदह से अग्नि तत्व की शक्ल अग्नि के घर में है, अतः बलवान् है अतः पास होगा फिर १ व ६ की गुणा से ≡ शक्ल पैदा होती है यह वायु तत्व की है और वायु तत्व खुला भी है और वायु घर में भी है मगर

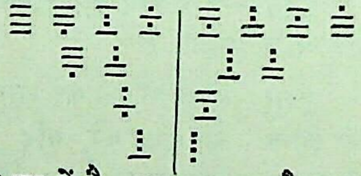

शक्ल अशुभ है अतः एक दर्जा पिछड़ती है इसी कारण कहा प्रश्नकर्ता सिकंड नम्बर पर पास होगा।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे कि सफर या यात्रा होगी या नहीं ?

**उत्तर**—जायचा बनावें यदि खाना १, ४, ६ में शुभ खारिज शक्ले हो तो सफर लाभ कायम होगा यदि खाना ९ में खारिज शक्ल हो और खाना ११ में तकरार करे तो भी सफर होगा यदि मुनकलिब हो तो रास्ता से वापस आये या यात्रा का विचार छोड़ देवे। यदि खाना ६ में शुभ शक्ल हो और शुभ घर में तकरार करे तो सफर शान्ति पूर्वक लाभ युक्त होगा यदि खाना ६ की शक्ल शुभ हो और खाना ६ या ८ या १२ में तकरार करे तो सफर में बीमार हो जावे।

**दूसरी विधि**—यदि खाना ३ या ७ व ६ में शक्लें खारिज हो तो यात्रा होगी और लाभ भी होगा यदि अशुभ खारिज हो तो लाचारी दर्जा सफर हो और हानि होवे अथवा खाना ९ में शुभ खारिज हो और खाना १३ में तकरार हो तो सफर जरूर हो। यदि यह खाना ८ में हो तो रास्ता में किसी जगह ठहर जावे यदि खाना ४ में तकरार करे तो यात्रा लाभ दायक हो अथवा यदि खाना ४ व ९ में खारिज हो तो सफर होवे यदि दाखिल हो तो न होवे मुनकलिब से यात्रा होकर रास्ता से लौट आवे शुभ से आराम के साथ अशुभ मुनकलिब से कष्ट युक्त सफर हो इसके अतिरिक्त अगर $\begin{smallmatrix}-\\ \cdot\\ -\\ -\end{smallmatrix}$ होवे तो रास्ता में जख्मी हो जावे या चोरी हो जावे।

अथवा यदि खाना ५, ७, ८ में शुभ दाखिल या शुभ साबित शक्ल हो तो यात्रा या सफर न होवे यदि शुभ खारिज व शुभ मुनकलिब हो तो सफर होवे और लाभ होवे यदि अशुभ खारिज या अशुभ मुनकलिब होवे तो हानि होवे यदि खाना १० में भी शक्ल खारिज किसी प्रकार की होवे तो सफर में शत्रु पैदा हो जावे फिर प्रस्तार के बिन्दु १ से १५ तक के गिन कर २ का भाग देवें यदि ९ बचे तो सफर लाभदायक हो यदि शून्य रहे तो हानि होगी।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे व्यापार के लिये सफर करने का विचार उसमें लाभ होगा या नहीं ?

**उत्तर**—इस नियत से जायचा रमल बनावें यदि खाना १ व ११ शुभ दाखिल हो और खाना २ की शक्ल खारिज हो तो यात्रा हो और व्यापार लाभदायक हो लेकिन नफा कम हो यदि १ व ११ भी अशुभ हो तो हानि हो।

**प्रश्न**—किस दिशा का सफर लाभदायक होगा ?

**उत्तर**—जायचा बनाकर खाना १ व ३ को गुणा करें फिर गुणन फल को खाना ६ से गुणा करें हासिल शक्ल यदि अग्नि तत्व की है तो पूर्व यदि वायु तत्व की है तो पश्चिम यदि जल तत्व की शक्ल है तो उत्तर यदि पृथ्वी तत्व की शक्ल है तो दक्खिन तरफ जाने से लाभ होगा अथवा खाना ५ व ९ की गुणा से जो शक्ल हासिल हो उपरोक्त रीत्यानुसार अग्नि वायु जल पृथ्वी के अनुसार दिशा बतलावे अग्नि शक्ल 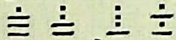 वायु शक्ल 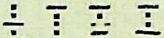 जल की शक्लें 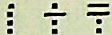 और पृथ्वी तत्व की शक्लें 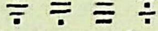 है जो आदि में लिख चुके है—यदि खाना ६ में 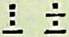 अथवा होवे तो मुसाफिर जिस मुकाम को जावे उस जगह लाभ न हो।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछै कि सफर को जाते हैं कितने दिनों में वापस आयेंगे ?

**उत्तर**—जायचा बनाकर खाना १० को देखो उसी मुद्दत के अनुसार आज्ञा देवैं नकशा यह है।

| शक्ल | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १,७ | ३,६ | ५,६, | १०७ | २२ | २७ | ३६ | ४५ | ५५ | ६० | १० | ० | ९ \| १२० | ११० | ० | ० |
| मास | १ | ३ | ० | १० | २ | ४ | ० | ० | २ | ० | ६ | ० | ० | ९ | ० | ० |
| वर्ष | ० | ० | १५ | ० | ० | २ | ५ | २ | ४ | ५ | ६ | ० | १ | १ | ० | ० |

इसको जानने का तरीका यह है जैसा जायचा बनाकर खाना १० को देखो उसमें शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\ -\\ -\\ -\end{smallmatrix}$ हो तो ३ या ६ मास में आवेगा अथवा ३ मास सफर में रहना होगा—इसके अतिरिक्त जिन शक्लों के नीचे अंक नहीं रक्खा है उनका आदेश यह है कि कभी आवे और कभी चला जावे रुकने का कयाम न रहे किसी शास्त्रकार का मत है यदि प्रस्तार में शुभ खारिज शक्लें हो अधिक हों तो मुसाफिर शीघ्र लौट आवे।

मुख्य ध्यान—इस बात का रक्खैं यदि निकट का सफर ( २० मील तक ) तब तो खाना तीन के अंकों को लेवें यदि अग्नि की शक्ल हों तो दिन वायु की हो तो सप्ताह जल की हो तो महीना यदि पृथ्वी तत्व की हो तो वर्ष का आदेश करना चाहिये।

प्रश्न—यदि कोई प्रश्न करै कि रात्रि को स्वप्न देखा है उसका फल कैसा होगा ?

उत्तर—इस नियत से प्रस्तार बनाकर खाना ६ को देखैं यदि उसमें शुभ शक्ल किसी प्रकार से हो तो उत्तम फल होगा यदि अशुभ हो तो खराब चिन्ता व्यथा पैदा हो—मगर यह ध्यान रहे यदि प्रथम पहर स्वप्न देखे और सो जावे तो उसका फल कुछ न होगा यदि मध्याह्न रात्रि में स्वप्न देखैं और सो जावें तो ३ मास बाद शक्ल के शुभाशुभ अनुसार फल कहैं। यदि पहर रात रहे देखे तो १५ दिन में फल मिले यदि प्रातःकाल ही स्वप्न देखे तो खाना ६ के शुभाशुभ फल के अनुसार फल कहैं। यदि उसमें शक्ल अग्नि की हो तो स्वप्न रोशनी, प्रकाश, सूर्य या चन्द्रमा आदि का देखा है या किसी प्रतिष्ठित पुरुष के दर्शन हुये हैं वायु की हो तो यात्रा तथा क्रोधमय आदि देखा है यदि $\begin{smallmatrix}-\\ \cdot\\ -\\ \cdot\end{smallmatrix}$ हो मालिक या किसी ओहदेदार या किसी कोषाध्यक्ष धन का व्यापार करनेवाला है इत्यादि को देखा है यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\ -\\ \cdot\\ -\end{smallmatrix}$ है तो खँडहर अथवा सुनसान मैदान पहाड़ आदि को देखा है यदि $\begin{smallmatrix}-\\ -\\ -\\ -\end{smallmatrix}$ हो तो हाथी या चित्रकार या खिलाड़ी ताश शतरंज आदि अथवा सराँय आदि देखा है यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\ \cdot\\ -\\ \cdot\end{smallmatrix}$ हो तो किसी स्त्री को देखा है अथवा राग रंग या जल इत्यादि को देखा है

यदि $\substack{\cdot\\ -\\ \cdot}$ हो तो तंग गली या श्मशान अथवा चूहे गदहे आदि जानवर अथवा पहाड़ और जंगल देखा है यदि $\substack{-\\ -\\ \cdot}$ या $\substack{-\\ \cdot\\ -}$ हो तो भयानक स्वप्न देखा है यदि $\substack{-\\ -\\ \cdot\\ -}$ हो तो दरिया बादल पानी जलाशय आदि देखा है यदि $\substack{\cdot\\ \cdot\\ -\\ -}$ हो तो हाकिम या घोड़े की सवारी आदि देखा है यदि $\substack{-\\ -\\ \cdot}$ हो तो सूखे वृक्ष या भयानक दृश्य देखा है यदि $\substack{\cdot\\ -\\ \cdot\\ \cdot}$ है तो अशुभ स्वप्न देखा है यदि $\substack{-\\ \cdot\\ \cdot\\ \cdot}$ हो तो किसी मसखरे व्यक्ति या प्रेयी को देखा या पान खाते देखा है यदि $\substack{-\\ \cdot\\ \cdot\\ \cdot}$ हो तो ऊँट, घोड़ा या पालकी आदि देखा है यदि $\substack{\cdot\\ \cdot\\ \cdot\\ \cdot}$ हो तो सफेद पदार्थ देखे है।

## स्वप्न का फल अन्य रीति से।

यदि दिन में स्वप्न देखा है तो खाना ३ को १ से गुणा करें यदि रात का स्वप्न है तो शक्ल खाना ९ को १ से गुणा करै हासिल शक्ल यदि शुभ शक्ल है और खाना १ या ५ या ९ या ११ में तकरार करें तो स्वप्न का फल उत्तम है यदि अशुभ है तो खाना ६ या ८ या १२ में तकरार करे तो स्वप्न झूठा है परेशानी होगी स्वप्न फल खराब है। यदि स्वप्न बुरा देखा हो और हासिल शक्ल केन्द्र अथवा २, ५, ८, ११ में तकरार करे तो कुछ कष्ट होवे खैरात करायें यदि ३ या ६ या ९ या १२ में तकरार करे तो शुभ फल कहो।

## खाना १० के प्रश्नोत्तर का विवरण

**प्रश्न**—यदि कोई प्रश्न करै यह हाकिम जो आया है कब तक रहेगा इससे जनता लाभ उठायेगी या नहीं?

**उत्तर**—जायचा बनाकर खाना १, ४, ७, १० को देखें यदि इनमें शुभ दाखिल या शुभ साबित शक्ल हो तो चिरकाल तक रहें और जनता खुश भी रहे वह हाकिम रियाया की भलाई का खयाल रक्खे यदि अशुभ दाखिल या अशुभ साबित हो तो २ वर्ष तक रहे परन्तु जनता के प्रति कठोरता का बर्ताव करे अथवा केवल खाना १० किसी सूरत से शुभ शक्ल हो और खाना ४ में कोई शुभ दाखिल शक्ल हो

जैसे तो हाकिम को प्रतिष्ठता बढ़े और लाभ हो और प्रजा को प्रसन्न रक्खे यदि खाना ४ में इनमें से कोई शक्ल हो या किसी प्रकार से शुभ शक्ल हो तो हाकिम की प्रतिष्ठा बढ़े पर लाभ न हो यदि खाना १० में में से कोई शक्ल हो और खाना ४ में शुभ दाखिल शक्ल हो तो हाकिम लाभ उठाये।

प्रश्न—यदि कोई प्रश्न करे अमुक हाकिम या स्वामी मुझ पर कृपालु होगा या नहीं ?

उत्तर—इस नियत से भगवान का स्मरण करके प्रस्तार बनावें यदि खाना १ व १० में शुभ दाखिल शक्ल हो तो कृपालु होगा और लाभ भी होगा इसके विपरीत से उलटा फल होवे। इसी विधि से प्रत्येक नौकर अपने स्वामी के प्रति हाल मालुम कर सकता है।

प्रश्न—यदि कोई पूँछे कि मेरी नौकरी लगेगी अथवा कोई व्यापार हाथ आवेगा या नहीं ?

उत्तर—इसी नियत से भगवान का भरोसा करके पाँसा डालकर प्रस्तार बनाले और खाना १ व १०, ११ को देखें यदि शक्ल । इनमें से कोई शक्ल हो तो व्यापार हाथ लगेगा, लाभ होगा और इच्छानुसार नौकरी भी मिल जावेगी यदि शुभ खारिज शक्ल हो तो कुछ आशा पूरी हो और कुछ न पूरी हो यदि किसी प्रकार से अशुभ शक्ल हो तो निराशा होवे।

अथवा खाना १ व १० को गुणा करके फल को खाना ११ से गुणा करे यदि हासिल शक्ल शुभ दाखिल हो तो फौरन नौकरी मिले तथा व्यापार से भी लाभ होवे यदि शुभ खारिज हो तो अधूरा कार्य्य बने व्यापार में लाभ मध्यम हो यदि अशुभ हो तो बिलकुल निराशा हो। कोई आचार्य्य खाना १ व १५ की गुणन फल से उपरोक्त रीत्यानुसार फल कहते हैं।

प्रश्न—यदि कोई पूँछे अमुक मालिक के पास मेरी नौकरी लगेगी या नहीं ?

**उत्तर**—इस नियत से ईश्वर का स्मरण करके पाँसा डालकर प्रस्तार बनावें खाना १० को देखैं यदि उसमें शुभ दाखिल शक्ल हो और तकरार खाना १ में करे या खाना १० में कोई भी शक्ल शुभ हो तो नौकरी लग जावेगी और उस स्वामी से लाभ भी हो यदि शुभ खारिज हो तो नौकरी तो लग जावेगी मगर कुछ काल बाद प्रश्नकर्ता खुद उसको छोड़ देवेगा यदि अशुभ शक्ल हो तो नौकरी न लगेगी यदि लग भी जावे तो शीघ्र छूट जावे बदनामी होवे।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे मैं अमुक व्यापार करना चाहता हूँ लाभ उसमें होगा ?

**उत्तर**—इस नियत से अपने इष्टदेव का ध्यान करके पासा डालकर प्रस्तार बनावें यदि खान २ व १० की गुणन फल की शक्ल शुभ हो तो लाभ होगा यदि अशुभ हो तो हानि होगी।

**दूसरी विधि**—खाना ४ व १० को गुणन करैं यदि गुणन फल शुभ हो तो लाभ हो वर्ना हानि हो।

**प्रश्न**—मैं अमुक प्रार्थना पत्र (दरख्वास्त) दूँ या नहीं हाकिम मानैगा या नहीं ?

**उत्तर**—इसी नियत से प्रस्तार बनावें यदि खाना १० में शक्ल दाखिल या साबित हो तो दरख्वास्त देवें हाकिम आपकी अर्जी पर ध्यान देवेगा यदि अशुभ अथवा मुनकलिब हो तो कदापि न दो प्रार्थना पत्र नामंजूर होगा इसके अलावा यदि प्रस्तार के खाना २ या ११ और १५ में शुभ शक्ल हो तो उत्तर सन्तोष जनक देवेंगा यदि अशुभ शक्ल हो तो नामंजूर होगी।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछै जबानी बात हाकिम या स्वामी से करना चाहता हूँ मानेगा ?

**उत्तर**—इस नियत से भगवान का भरोसा करके प्रस्तार बनाकर जायचा बनावे यदि खाना १० में शक्ल 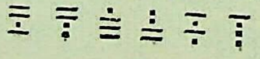 में से

कोई शक्ल हो तो आपकी प्रार्थना स्वीकार करेगा। यदि ≣ हो तो नामंजूर करेगा इस समय तो नहीं भविष्य में कहने से मान लेगा। यदि ≚ या ÷ हो तो बात-चीत की नौबत ही न आवेगी यदि ± या ⋮ हो तो मत कहो यदि ÷ या ⫶ हो तो कुछ काम बनेगा।

प्रश्न—यदि कोई पूँछे माता से लाभ होगा या नहीं ?

उत्तर—इसी नियत से प्रस्तार बनाकर खाना १० को देखें यदि खाना १० की शक्ल शकुन पंक्ति के चक्र के अनुसार खाना ५ या ११ व खाना १ में तकरार करे तो लाभ होगा इसके विपरीत होने से लाभ न होगा।

दूसरी विधि—यदि खाना १ शुभ दाखिल और खाना १० में शुभ खारिज शक्ल हो तो प्रश्न-कर्ता को पूर्ण लाभ होगा यदि खाना १ शुभ खारिज और खाना १० में शुभ दाखिल हो तो भी लाभ होवे यदि इस प्रकार की शक्ल न हो तो लाभ न होगा।

## आकाशी फलादेश

प्रश्न—पानी बरसेगा या नहीं ?

उत्तर—यदि प्रस्तार में शक्ल ≚ जल या पृथ्वी के घरों में हो यानी खाना ३, ७, ११, १५ अथवा ४, ८, १२, १६ में हो तो पानी बरसेगा यदि अग्नि अथवा वायु के घर में हो तो न बरसेगा। फिर जायचा के कुल बिन्दु गिने यदि अग्नि बिन्दु अधिक हो तो गर्मी अधिक पड़े यदि वायु बिन्दु अधिक हो तो हवा तेज चले यदि जल के बिन्दु अधिक हो तो पानी बरसेगा यदि पृथ्वी के बिन्दु अधिक हो तो धूल उड़ेगी।

## खाना ११ के प्रश्नोत्तरों का विवरण

प्रश्न—क्या मेरी अमुक कामना पूरी होगी या नहीं ?

उत्तर—इस नियत से भगवान का स्मरण करके पाँसा डालकर प्रस्तार बनायें यदि खाना १ में शक्ल शुभ दाखिल हो और तकरार

खाना ११ में करे तो आपकी कामना पूरी होगी फिर खाना १ व ११ की शक्लों को गुणा करै यदि हासिल शक्ल शुभ दाखिल हो तो भी कामना पूरी होगी ? यदि अशुभ शक्ल हो तो न पूरी होगी। यदि इस शक्ल की तकरार किसी शुभ घर में करे तो शीघ्र कामना पूरी होय यदि अशुभ घर में तकरार करे तो न पूरी होगी यदि मुनकलिब शक्ल होवे और शुभ घर में तकरार करे तो कुछ कामना पूरी होगी अशुभ से नहीं।

**प्रश्न**—यदि कोई पूछे कि अमुक मित्र से मित्रता स्थायी रूप में रहेगी या बीच में ही छूट जायगी ?

**उत्तर**—इस नियत से अपने इष्ट देव का स्मरण करके पाँसा डाल कर जायचा रमल बनावें फिर देखो खाना १, ४, ७, १० अर्थात् केन्द्र की शक्लों में भी दाखिल शक्लें हो तो मित्रता कायम रहेगी यदि अशुभ शक्लैं हो तो यह मित्रता थोड़े दिनों की है यदि शुभ खारिज शक्लैं हों तो दोनों स्वयं प्रसन्नता पूर्वक साथ छोड़ देवेंगे यदि अशुभ खारिज शक्लैं हों अथवा ≟ या ⫶ शक्लैं आवे तो दोनों में खूब लड़ाई झगड़ा के बाद साथ छूट जावेगा यदि उपरोक्त घरों में कुछ में शुभ शक्लें और कुछ में अशुभ हों तो थोड़े दिन साथ रहेगा। अथवा खाना ११ की शक्ल देखो यदि उसमें शुभ दाखिल शक्ल हो जैसे ⁝ या ⩨ या ÷ और इसकी तकरार खाना १, ३ व ६ व ५ में हो तो उन दोनों में मित्रता स्थायी रूप में चिरकाल तक रहेगी यदि ≛ या ≐ या ÷ या ⁞ इनमें से कोई शक्ल हो और तकरार केन्द्र घरों में हो तब भी मित्रता स्थायी रूप में रहेगी मगर प्रायः वाद बिवाद कलह झगड़ा भी होता रहेगा लेकिन शीघ्र शान्ति भी हो जावे। यदि खाना ११ में शक्ल ⩧ होवे तो सदैव झगड़ा लगा रहे यदि ≟ या ⫶ हो तो मार पीट की नौबत हो जावे यदि ≡ या ≐ हो तो उन दोनों में मित्रता स्वार्थ परायणता की होवे एक दूसरै

में छल कपट बना रहेगा यदि इन शक्लों की तकरार २, ४, ६, ७ या १० या १३ या १५ में होवे तो शीघ्र छूट जावे।

प्रश्न—अमुक व्यक्ति मुझसे मित्रता रखता है या नहीं ?

उत्तर—यदि कोई आकर इस प्रकार का प्रश्न करे तो ईश्वर का ध्यान धरकर पाँसा डालकर जायचा बनावें-फिर देखै यदि खाना एक की शक्ल खाना ७ में उलट जावे अर्थात् विलोम हो जावे जैसे ≐ का विलोम ≡ और ⫧ का विलोम ≐ इत्यादि इत्यादि तो मित्रता रखता है यदि उस शक्ल की तकरार किसी अन्य घर में हो तो मित्र चिरस्थायी न रहे। रूमी देश के विद्वानों का मत अनुभूत यह है शक्ल खाना १ को सात से गुणा करैं यदि हासिल शक्ल शुभ हो और शुभ घर में तकरार करैं तो मित्रता बनी रहे यदि अशुभ हो तो मतलब का मित्र है।

प्रश्न—यदि कोई पूँछै अमुक मित्र से प्रथम हमारी तरफ से झगड़ा होगा या उनकी तरफ से ?

उत्तर—प्रस्तार बनावें यदि शक्ल खाना १ दाखिल और खाना ७ खारिज किसी प्रकार से हो तो प्रथम झगड़ा प्रश्नकर्ता की ओर से होवे यदि इसके विपरीत हो तो उसकी तरफ से प्रथम झगड़े की नौबत आवेगी यदि दोनों में एक ही शक्ल हो तो दोनों की ओर से झगड़ा हो जावेगा यदि मुनकलिब या साबित शक्लै हो तो कोई अन्य व्यक्ति षड्यन्त्र रचकर फूट डला देवैगा।

दूसरी विधि—खाना १ व ११ को और खाना १ व ५ को आपस में गुणा करैं फिर उन दोनों गुणों की हासिल शक्लों को गुणा करके एक शक्ल बनावें यदि हासिल शक्ल की तकरार ६ या ७ या ८ या १२ में हो तो फूट दोनों तरफ से पड़ जावेगी यदि हासिल शक्ल खाना ३ या ५ या ९ या ११ में हो तो दोनों में मित्रता बनी रहेगी।

तीसरी विधि—यदि खाना ११ की शक्ल किसी प्रकार से शुभ हो और तकरार खाना ३ या ५ व ९ में हो तो मित्रता एकतरफा की

होगी यदि ४ या ८ या १० या १२ में तकरार होवे तो मित्रता मतलब की रहेगी टिकाऊ न रहेगी।

**चौथे विधि**—यदि खाना ११ की शक्ल शुभ दाखिल हो और तकरार इसकी खाना १ या ५ में हो तो मित्रता दोनों में अटल रहेगी यदि तकरार खाना ६ या १२ में होगी तो खुली मित्रता रहेगी भीतर कपट दोनों में रहेगा यदि खाना ११ में शक्ल अशुभ होवे तो दोनों को कष्ट इस मित्रता से उठाना पड़ेगा यदि तकरार खाना ५ में हो तो तकरार दोनों में हो जावे यदि खाना १२ में तकरार हो तो इतना झगड़ा बढ़ जावेगा कि मार-पीट तक की नौबत आजावेगी यदि खाना १ में शक्ल अग्नि की हो और खाना ११ में जल की हो अथवा खाना १ में वायु की हो और खाना ११ में पृथ्वी तत्व की शक्ल हो मतलब यह है यदि तत्व शत्रुता के हो तो शत्रुता होवे यदि मित्रता के हो तो मित्रता बनी रहे। सूचित रहे अग्नि तथा वायु की और जल तथा पृथ्वी की मित्रता है और अग्नि तथा जल और वायु तथा पृथ्वी तत्व की शत्रुता शास्त्रकारों ने मानी है।

**प्रश्न**—यदि कोई पूछै अमुक व्यक्ति से झगड़ा तो न होगा।

**उत्तर**—इसी नियत से जायचा बनावें और खाना ५, ७, १५ व १६ को देखें यदि इनमें शक्लें शुभ दाखिल हों या साबित शक्लें हों तो झगड़ा न होगा मेल रहेगा। यदि खारिज अथवा मुनकलिब शक्ले हों तो फूट पड़ जायेगी शुभ शक्लों से सरलता पूर्वक अशुभ शक्लों से कठिनाई पूर्वक हो।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछै अमुक व्यक्ति के पास जाता हूँ काम बनेगा या नहीं ?

**उत्तर**—भगवान का स्मरण करके पासा डालकर जायचा रमल बनावें खाना १३ प्रश्नकर्ता का है खाना १४ उस व्यक्ति का है जिसके पास जाओगे यदि दोनों में शुभ शक्लें हों तो आशा पूर्ण होवे यदि

खाना ८ व १० भी शुभ शक्लों से युक्त हो तो प्रसन्नता पूर्वक फौरन काम बनेगा, यदि इसके विपरीत शक्ल हो तो काम न बनेगा।

प्रश्न—यदि कोई पूँछे अमुक व्यक्ति से मेरी आशा पूरी होगी या नहीं?

उत्तर—इसी नियत से अपने इष्टदेव का ध्यान धरकर जायचा बनावे यदि खाना १ में शक्ल शुभ दाखिल हो और तकरार उसकी खाना ११ में हो तो उस मालिक अथवा हाकिम अथवा उस व्यक्ति से आपकी आशा पूरी होगी। यदि खाना १ व ११ में शुभ दाखिल न हो बल्कि किसी प्रकार से शुभ शक्ल दोनों घरों में हो तब भी कामना की पूर्ति हो यदि इनकी तकरार शुभ घरों में हो तो शीघ्र यदि अशुभ घरों में हो तो निराशा हो, सम्भव है कुछ कामना बहुत देर में पूरी होवे।

अन्य विधि—यदि शक्ल ≐ किसी शुभ घर में आवे तो सरलता पूर्वक आशा पूर्ण हो इसके विपरीत से नहीं—अथवा यदि खाना १ में शुभ शक्ल हो और तकरार केन्द्र में (खाना १, ४ या ७ या १०) हो तो सरलता पूर्वक कामना पूरी होगी यदि तकरार २ या ५ या ८ या ११ में हो तो कुछ आशा पूरी हो यदि खाना ३ या ७ या ११ या १५ में तकरार हो तो निराशा हो यदि खाना १५ में शक्ल ≑ हो तब भी निराशा हो लेकिन कुछ समय बाद पुनः प्रार्थना करने पर कुछ आशा पूरी हो जावे अथवा खाना १० व ११ की शक्लें शुभ दाखिल हों और तकरार खाना ३, ५ या ९ में हो या खाना १ में तकरार हो तो सरलता पूर्वक कार्य्य पूरा होवे। यदि इसके विपरीत हो तो निराशा हो यदि खाना १६ की शक्ल शुभ दाखिल हो और तकरार खाना ३ या ५ या ९ या ११ या १५ में हो तब भी आशा पूरी हो जावे।

अनुभूति विधि—खाना १ व ११ को गुणा करें और खाना ५ व ११ को गुणा करें फिर इन दोनों की शक्लों को आपस में गुणा करें अस्तु हासिल शक्ल शुभ दाखिल हो तो आशा पूरी होवे यदि शुभ

खारिज हो तो कुछ काम बने यदि अशुभ शक्ल हो तो काम न बनेगा। अथवा यदि खाना ११ में शक्ल ≐ या ÷ होवे तो शीघ्र आशा पूरी हो यदि ≡ या ÷ या ≡ या ÷ या ≐ या ⋮ या ≡ हो तो निराशा होवे यदि शक्ल ÷ या ⋮ हो तो प्रथम निराशा के चिन्ह होकर पुनः आशा पूरी हो जावे। यदि शक्ल ≡ या ≐ या ≡ हो तो किसी मित्र की कृपा से आशा पूरी हो वह मित्र सहायता करें यदि ≡ या ⋮ हो तो निराशा रहै।

**दूसरी विधि**—खाना १ की शक्ल की खाना ११ की शक्ल से गुणा करैं हासिल शक्ल को खाना १५ की शक्ल से गुणा करैं यदि हासिल शक्ल शुभ दाखिल हो तो शीघ्र आशा पूरी हो यदि साबित हो तो देर से पूरी हो यदि खारिज या मुनकलिब हो तो निराशा हो अशुभ से भी निराशा हो।

**प्रश्न**—क्या मेरी तरक्की इस वर्ष होगी ?

**उत्तर**—जायचा रमल बनावे खाना १ व ११ को गुणा करें यदि हासिल शक्ल शुभ दाखिल होगी तो तरक्की होगी शुभ खारिज से देर में होगी अशुभ हो तो तरक्की अभी नहीं होगी।

## खाना १२ के प्रश्नों का विवरण

**प्रश्न**--यदि कोई पूँछे कि मेरे कितने शत्रु हैं ?

**उत्तर**--परमात्मा का स्मरण करके जायचा रमल बनावें और खाना १२ को देखो कि उसमें कौन सी शक्ल है यदि ⋮ हो तो चार ÷ या ≐ या ÷ या ⋮ हो तो ५ यदि ÷ हो तो २ शक्ल ≐ से ३ शक्ल ≡ से बहुह शत्रु पैदा होवैं। ≡ हो तो ३ यदि ≡ हो तो १ प्रबल शत्रु है यदि ≐ शक्ल हो तो २ शत्रु होवे अन्य शक्लों से ऊपरी मित्रता होवे भीतरी द्वेष रखने वाले बहुत से शत्रु होवें।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछैं कि मेरा शत्रु मेरे प्रति हानि पहुँचायेगा या नहीं और शत्रुता मिटेगी या नहीं ?

उत्तर—इस नियत से प्रस्तार बनाकर जायचा बनावें और खाना १२ को देखें यदि उसमें अशुभ खारिज शक्ल हो और खाना ६ में किसी प्रकार की भी अशुभ शक्ल हो तो शत्रु स्वयं नष्ट हो जावे हानि न पहुँचा सकेगा। यदि यह शुभ दाखिल शक्ल खाना १२ में हो और खाना ६ शुभ किसी प्रकार से हो तो शत्रु बलवान् होकर हानि पहुँचावे यदि शक्ल ÷ या ⋮ खाना १२ में हो तथा खाना ६ में भी हो तो शत्रु स्वयं नष्ट हो जावे।

अन्य विधि—यदि खाना १ और खाना १० में अशुभ शक्ल हो अथवा खाना १ की शक्ल खाना ६ या ८ या १२ में तकरार कर या मीजान (खाना १५) में शक्ल ÷ हो और तकरार खाना १ व १० में करे तो प्रश्नकर्ता को कष्ट पहुँचायेगा।

प्रश्न—यदि कोई पूँछे मेरा शत्रु बलवान है या निर्बल?

उत्तर—इस नियत से भगवान का भरोसा कर जायचा बनावें और देखें खाना १२ यदि उसमें अशुभ शक्ल हो और केन्द्र में तकरार करै तो शत्रु बलवान् है। यदि तकरार खाना २ या ५ या ८ या १२ में हो तो समत्व रूप में होगा, यदि अन्य घर में हो तो निर्बल होगा फिर खाना १३, १४, १५, १६ को देखें यदि इनमें शुभ दाखिल शक्ल हो तो शत्रु सदैव शत्रुता रक्खे मगर हानि कभी न पहुँचा सकेगा। यदि शुभ खारिज हो तो शत्रु मित्र बन जावेगा परन्तु प्रश्नकर्ता इस मेल पर बिश्वास न करे यदि अशुभ दाखिल हो तो शत्रुता बनी रहेगी यदि अशुभ खारिज हो तो शत्रुता न रहेगी—यदि शुभ सावित हो तो फल दाखिल शक्ल की तरह जानो और मुनकलिब का खारिज की तरह वाला हुक्म समझें।

प्रश्न—यदि कोई प्रश्न करै शत्रु को किसी ने बहकाया है या नहीं?

उत्तर—इस नियत से जायचा बनावें और खाना १० को देखें यदि उसमें खारिज शक्ल किसी प्रकार से हो और उसकी तकरार

६ या ११ या १२ में हो तो शत्रु को किसी ने बहकाया है यदि साबित या दाखिल हो तो किसी ने बहकाया नहीं है।

**प्रश्न**—यदि कोई पूछै अमुक व्यक्ति गिरफ्तार होगा या नहीं सजा होगी या छूट जायगा ?

**उत्तर**—इस नियत से भगवान का स्मरण कर जायचा रमल बनावें फिर खाना १ को देखैं यदि उसमें शक्ल ÷ या ≡ या ⁞ ⩨ हो तो वह फँस जावेगा और सजा पा जावेगा यदि खाना १ में शक्ल ⩨ हो और खाना १२ में तकरार करै और खाना २ व ५ की शक्ल भी किसी प्रकार से अशुभ हो तो भी वह सजा पा जावेगा।

**अन्य विधि**—यदि खाना १ की शक्ल अशुभ हो या ÷ या ÷ या ≡ अथवा ⩨ खाना १ में होवे तो सजा पावेगा।

**निजी अनुभव**—यदि खाना १२ में शुभ दाखिल अथवा शुभ साबित शक्ल हो अथवा शक्ल ÷ हो तो भी कुछ सजा पा जावे छूटने की आशा नहीं।

**प्रश्न**—यदि कोई पूछै अमुक व्यक्ति जो कैद हुआ है छूटेगा या नहीं ?

**उत्तर**—इस नियत से जायचा बनावें यदि खाना १२ में शक्ल शुभ खारिज हो और खाना ६ व १५ व १६ में शक्लैं किसी प्रकार से खारिज हो तो बन्धन से शीघ्र ही छूटेगा यदि इसके बिपरीत शक्लैं हों तो फँसा रहेगा यदि खाना ५ व १२ में ÷ या ≡ हो और तकरार भी अन्य घरों में हो अथवा खाना १ या ६ या १४ या ८ में शक्ल ≡ या ÷ हो तो कैदी जेल खाना में ही मृत्यु को पावे। यदि मुनकलिब शक्ल खाना १२ में हो तो कैदी छूट कर फिर कैद पावे यदि खाना ३ या ५ या ६ या ११ में शक्लें शुभ हों तो छूट जावे।

मीर रोशनअली रम्माल देहली निवासी अपने अनुभव से लिखते हैं—खाना ४ व ८ की शक्लों को आपस में गुणा करै इसी प्रकार

खाना ६ व १२ को गुणा करैं फिर इन दोनों गुणनफल को पुनः आपस में गुणा करके एक शक्ल बनावें। इस हासिल शक्ल को खाना ६ की शक्ल से फिर गुणा करैं। यदि यह हासिल शक्ल शुभ खारिज हो तो कैदी छूट जावे। यदि शुभ दाखिल हो तो बहुत दिनों बाद छूटेगा। यदि अशुभ खारिज हो तो बड़े परिश्रम से छूटे। यदि अशुभ दाखिल हो तो इतनी लम्बी कैद हो कि कैद ही में मृत्यु पावे। यदि साबित या मुनकलिब अशुभ हों और तकरार खाना ४ व ६ में हो तो कैद में कष्ट विशेष भोगे, यदि हासिल शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\ -\\ -\\ \cdot\end{smallmatrix}$ हो और खाना १० में तकरार करै तो कैदी एक जेल से दूसरी जेल में भेजा जावे, यदि शक्ल $\begin{smallmatrix}-\\ \cdot\\ -\\ -\end{smallmatrix}$ खाना ३ या ८ या १२ में होवे तो कैदी की मृत्यु होवे।

**प्रश्न**—यह पशु खरीदा है शुभदायक होगा कि नहीं ?

**उत्तर**—इसी नियत से जायचा बनावें और खाना १२ देखै, यदि इसमें शक्ल शुभ दाखिल हो तो लाभदायक पशु होगा, यदि शुभ खारिज हो तो बेचने से लाभ होगा अन्य शक्लों से हानि रहेगी।

**अन्य विधि**—खाना १ व १२ को देखो, यदि इनमें किसी प्रकार से शुभ शक्लें हों और तकरार खाना ५ या १० में हो तो इस पशु से लाभ होगा और बहुत दिन तक घर में रहेगा। यदि खाना १ शुभ शक्ल किसी प्रकार की हो और तकरार खाना ३ या ६ या ६ या १२ में कर तो हानि होगी। यदि शक्ल $\begin{smallmatrix}-\\ -\\ -\\ \cdot\end{smallmatrix}$ खाना १ या १२ में होवे तो यह पशु या तो ऐबदार हो अथवा रोगी रहे ऐसे पशु से हानि होगी।

**प्रश्न**—यदि कोई पूछै अमुक पशु खरीदना चाहते हैं लाभदायक होगा कि नहीं ?

**उत्तर**—इस नियत से भगवान का स्मरण करके पासा डाल कर प्रस्तार बनावें, फिर खाना १ व ६ को गुणा कर और खाना १ व

१२ को गुणा करैं, पुनः इन दोनों शक्लों को फिर गुणा करके एक शक्ल बनावें। यदि हासिल शक्ल ≡ या ÷ या ⋮ इनमें से कोई शक्ल हो तो लाभ होगा। यदि ≡ ≡ या ⋮ हो तो मध्यम लाभ रहेगा, यदि ≐ या ≐ हो तो शीघ्र बिक जावेगा। यदि ≡ या ÷ या ÷ या ⋮ हो तो हानि होगी या स्वयं पशु मर जावेगा, यदि ÷ या ⋮ हो तब भी हानि होवे यदि ≡ हो तो मर जावे अथवा खाना २ व ६ की शक्लों को आपस में गुणा करै, यदि हासिल शक्ल शुभ दाखिल हो तो लाभ होवे अन्य शक्लों से हानि होवें।

**प्रश्न**—यदि कोई पूछैं यह जानवर खरीदा है इसमें कोई ऐब तो नहीं है?

**उत्तर**—इस नियत से पाँसा डालकर प्रस्तोर बनावें फिर खाना ६ व १२ की शक्लों को आपस में गुणा करैं यदि हासिल शक्ल ≡ ≡ ÷ अथवा ≡ शक्ल हो तो यह जानवर ऐबदार होगा यदि ÷ या ≡ हो तो मृत्यु होगी यदि ÷ या ⋮ हो तो जानवर ऐबदार होगा।

## अन्य विविध प्रकारेण प्रश्नोत्तर

**प्रश्न**—यदि कोई पूछै मैंने अमुक व्यक्ति के पास एक वी० पी० पारसल भेजा है वह बी. पी. लेवेगा या नहीं? अथवा मैं अपनी अमुक वस्तु बेचना चाहता हूँ बिक जावेगी या नहीं?

**उत्तर**—इस नियत से जायचा रमल बनावे फिर खाना १ की शक्ल को खाना ११ की शक्ल से गुणा करे हासिल शक्ल को खाना २ की शक्ल से गुणा करैं यदि हासिल शक्ल दाखिल अथवा साबित हो तो वह पारसल न लेवेगा वी. पी. इनकारी में वापस होगा न वह चीज ही बिकेगी यदि हासिल शक्ल खारिज या मुनकलिब हो तो पारसल तकसीम हो जावे और वह वस्तु भी बिक जावेगी।

## चोरी की बाबत प्रश्नोत्तर

उत्तर—चोरी की बाबत में जब कोई आकर पूँछे प्रथम तो प्रश्नकर्ता को समझाया जावे कि अपने पड़ोस के थाना में सूचना देकर जाँच करावे यद्यपि रमलज्ञ के ज्ञानार्थ हम लिखते हैं।

( १ ) प्रथम यह जानना चाहिये कि यथार्थ में चोरी हुई है या नहीं ? (२) चोर प्रकट होगा कि नहीं ? (३) चोर स्त्री है या पुरुष ? ( ४ ) चोर का रंग या हुलिया कैसा है ? ( ५ ) चोर इसी ग्राम का है या बाहर का है ? (६) प्रश्नकर्ता के घर से कितने फासिला पर है ? (७) चोर के घर का दरवाजा किस तरफ है ? चोर का घर प्रश्नकर्ता के घर से किधर है ? (८) चोरी का माल कहाँ रक्खा है ? (९) चोर पकड़ा जावेगा कि नहीं ? (१०) जिन-जिन आदमियों पर चोरी का शुभा है उनमें चोर है कि नहीं ?

## तथा कौन चोर है

उपरोक्त प्रश्नों का ध्यान करके अपने इष्टदेव का आवाहन करके यदि अपने इष्ट-देवता का कोई चित्र सामने रक्खा हो तो और उत्तम होगा मतलब यह है कि अपनी आत्मा शक्ति का भरोसा छोड़कर केवल अपने इष्ट देवता की सहारा से पाँसा-द्वारा पाँसा डालकर जायचा बनावे। यदि जायचा में मीजान ( खाना १५ ) में शक्ल ≣ आवे तो यही कहना होगा कि चोरी नहीं हुई है प्रश्नकर्ता झूठ कहता है अथवा यदि खाना २ व ६ में शक्लैं दाखिल या साबित हों तो भी चोरी नहीं हुई है। यदि खाना २, ७ या ८ में से किसी में शक्ल ⩧ या ⫶ या ≡̣ या ∸ या ⁝ या ≑ में से कोई शक्ल हो तो बेशक माल चोरी गया है मगर यह बात उस समय कहना चाहिये जब कि जायचा के खाना २ व ६ में दाखिल अथवा साबित शक्लें न हों यदि खाना २ व ६ में दाखिल या साबित शक्लें हों अथवा खाना ३ व ८ में भी दाखिल व साबित शक्लैं हो और खाना १ व ७ में

शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\-\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो तो यही कहो प्रश्न कर्ता ने स्वयं किसी को दे दिया है अथवा खुद भूल गया है—यदि खाना २ व ६ मे शक्लें दाखिल ब साबित हों और खाना ३ व ८ में भी शक्लैं दाखिल या साबित हों और खाना ७ $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\-\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो तो कहो माल प्रश्नकर्ता के घर ही में मौजूद है स्वयं किसी जगह रख कर भूल गया है—यदि खाना २ व ६ में शुभ खारिज अथवा मुनकलिब शक्ल हो और खाना १ व ७ में शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\-\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो अथवा खाना ६, ७ व ८ शक्लें दाखिल व साबित हों तो प्रश्नकर्ता के स्वयं रखने अथवा स्वयं खर्च करने का हुक्म दो और यही हुक्म उस समय भी होता है जब कि प्रस्तार में खाना २ व ३ में शक्लैं दाखिल व साबित हों। यदि खाना ७ में शक्ल दाखिल हो और खाना ८ में खारिज शक्ल हो तो चोर पकड़ा जावेगा फिर रमल के बिन्दु गिनों २ का भाग दो यदि १ बचे तो चोर न मिले यदि शून्य बचे तो चोर का पता लग जावेगा–फिर रमल के सारे विन्दुओं को गिनकर ३ से भाग देवें यदि १ शेष रहे तो पुरुष यदि २ बाकी बचे तो स्त्री चोर है यदि ३ बचै अथवा शून्य बचे तो किसी लड़के ने चोरी की है–इसके अतिरिक्त यदि १ बचे तो चोर पड़ोसी है यदि २ बचे तो घर ही का आदमी चोर है यदि ३ बाकी बचें तो किसी गैर आदमी ने चोरी की है। यदि ३ पर भाग देने से १ बाकी बचे तो साँवला रङ्ग होगा यदि २ बाकी रहे तो गोरा होगा पक्के रङ्ग का यदि ३ बचे तो बहुत गोरा हो। फिर खाना १ व ४ की शक्ल को आपस में गुणा कर और खाना ७ व १० को गुणा करो इन दोनों गुणनफल की शक्लों को फिर गुणा करो यदि हासिल शक्ल दाखिल या साबित हो तो चोर गाँव ही का होगा यदि खारिज शक्ल हो तो गाँव से बाहर के लोग चोरी करने आये—यदि मुनकलिब शक्ल हो तो अपने गाँव अथवा कसबा आदि का लेकिन बाहर जाने का इरादा कर रहा हो यदि हासिल शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो तो चोर नौकर या

घर की बाँदी आदि है, फिर खाना ६, ७ व ९ की शक्लों के बिन्दु गिनो जितने बिन्दु हो उनको खाना ५ में जो बिन्दु हों उनसे भाग दो जो भागफल हो उतना ही फासिला मकान प्रश्नकर्ता व चोर के बीच बयान करो अर्थात् उतने ही घरों का फासिला प्रश्नकर्ता के घर से चोर के घर तक का होगा। यदि चोर बाहर गाँव का प्रथम विचार से निकला है तो उतने ही मील पर चोर का मकान कहो फिर देखो खाना १० में कौन सी शक्ल हैं। यदि अग्नि की शक्ल हो तो पूर्व तरफ यदि वायु की शक्ल हो तो पच्छिम तरफ यदि जल की शक्ल हो तो उत्तर तरफ यदि पृथ्वीतत्व की शक्ल हो तो दक्खिन तरफ अपने घर से उसका मकान होगा। यदि मालूम करना हो कि चोर के मकान का दरवाजा किस तरफ है तो प्रस्तार की खाना ९ की शक्ल से उपरोक्त रीत्यनुसार अग्नि वायु जल पृथ्वी की भाँति दरवाजा चोर का बयान करो। यदि खाना ९ में शक्ल $\substack{-\\ \cdot\\ \cdot\\ -}$ या $\substack{-\\ -\\ -\\ -}$ हो तो उसके मकान पर दरवाजा में वेल बूटा आदि बने हैं यदि $\substack{-\\ \cdot\\ -\\ -}$ या $\substack{\cdot\\ -\\ \cdot\\ \cdot}$ हो तो दरवाजा मकान ऊँचा होगा यदि शक्ल $\substack{\cdot\\ -\\ -\\ -}$ या $\substack{-\\ -\\ \cdot\\ \cdot}$ हो तो मकान पीला पोता गया हो अथवा मटमैला होगा यदि $\substack{-\\ -\\ -\\ \cdot}$ या $\substack{\cdot\\ -\\ -\\ \cdot}$ हो तो काले रंग से पुता होगा यदि $\substack{\cdot\\ \cdot\\ -\\ \cdot}$ या $\substack{-\\ \cdot\\ \cdot\\ \cdot}$ हो तो दरवाजा विविध प्रकार का रंग युक्त हो यदि $\substack{\cdot\\ \cdot\\ -\\ -}$ या $\substack{-\\ \cdot\\ -\\ \cdot}$ हो तो छोटा दरवाजा यदि $\substack{\cdot\\ \cdot\\ \cdot\\ -}$ या $\substack{\cdot\\ -\\ \cdot\\ -}$ तो साधारण छोटा दरवाजा या टट्टर बँधा हो यदि $\substack{-\\ -\\ \cdot\\ -}$ या $\substack{\cdot\\ \cdot\\ \cdot\\ \cdot}$ हो तो दरवाजा खुला हुआ है अथवा टूटा-फूटा हो चोर का हुलिया खाना ७ की शक्ल से कहना चाहिये। खाना ७ में जो शक्ल हो उसी शक्ल का हुलिया जो हम पहले लिख चुके हैं अपनी बुद्धि के अनुसार रमलज्ञ को बताना चाहिये। फिर जायचा के खाना २ व ८ की शक्लों को गुणा कर दो तथा खाना १० व १२ की शक्लों को गुणा करें इन दोनों को फिर गुणा करके एक शक्ल बनावें--अब देखें कौन सी शक्ल आई है। यदि हासिल शक्ल $\substack{\cdot\\ -\\ \cdot\\ \cdot}$ हो तो चोरी का माल दक्खिन की तरफ जमीन अथवा सन्दूक में रक्खा है यदि शक्ल

$\begin{smallmatrix}-\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो तो भी दक्खिन तरफ किसी कूड़ा करकट अथवा घूरा गन्दी जगह में रक्खा है या कोई भट्टा आदि दक्खिन तरफ हो वहाँ गाड़ा है यदि $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\-\\-\end{smallmatrix}$ हो तो पच्छिम की तरफ किसी वृक्ष के खोह में अथवा ऊँची जगह अथवा ताक में रक्खा है यदि शक्ल $\begin{smallmatrix}-\\-\\-\\-\end{smallmatrix}$ हो तो दक्खिन तरफ जमीन में गाड़ा है या दक्खिन पच्छिम के कोने में किसी ऊँची जगह पर रक्खा है यदि $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ हो तो उत्तर तरफ पानी वाली जगह पर गाड़ा है यदि $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो तो दक्खिन तरफ कहीं निकट ही साल रक्खा है। उसके पड़ोस में ऐसे लोग रहते हो तो लेन देन का व्यापार करते हों यदि $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ हो तो चोरी का माल पच्छिम तरफ श्मशान या देव स्थान में सन्दूक में रक्खा है यदि शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ हो तो घोड़ साल या गऊशाला वाले मुकाम पर पूर्व तरफ रक्खा है यदि $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो तो पच्छिम तरफ किसी बाग में रक्खा है यदि $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो तो ऊपर रास्ता के या हरियाली जगह पर उत्तर तरफ गाड़ा है यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो तो पच्छिम तरफ रास्ता में गाड़ा है यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो तो वृक्षों के निकट उत्तर तरफ रक्खा हो यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\-\end{smallmatrix}$ हो तो पूर्व तरफ किसी देवालय में रक्खा है यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ हो तो अग्नि स्थान पर अथवा किसी सुन्सान में रक्खा है यदि $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\-\\-\end{smallmatrix}$ हो तो चूल्हा के समीप गाड़ा है।

अब यह जानना चाहिये कि चोर पकड़ा जायेगा या नहीं ?

यदि खाना १२ में अशुभ दाखिल शक्ल हो या शुभ दाखिल हो अथवा शुभ मुनकलिब हो तो पकड़ा जावेगा यदि इस प्रकार की शक्लें न हो तो न पकड़ा जावे।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछै जिस आदमी पर मेरा शक है वह चोर है कि नहीं ?

**उत्तर**—इस नियत से भगवान पर पूर्ण रूप से भरोसा करके पाँसा डाल कर जायचा रमल बनावें फिर जायचा की खाना ८ और ९ की शक्ल को गुणा कर यदि हासिल शक्ल अशुभ दाखिल हों तो वही वही चोर है यदि अन्य शक्लें हो तो चोर नहीं है।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछै कि इतने प्रस्तुत आदमियों में चोर है कि नहीं ?

**उत्तर**—जायचा की शक्ल खाना १ व १० को गुणा करके एक शक्ल बनावें यदि हासिल शक्ल का हुलिया इन आदमियों में कोई हो और दाखिल हो या शक्ल ≡ हो तो चोर उसी में है। इसके विपरीत शक्ल हो तो चोर इस जमात में न हो यदि ≐ व ÷ जायचा के खाना १ व २ व ३ या ४ में हो और खाना ५ से ८ तक किसी में हो तो चोर इसी जमात में है यदि न हो तो चोर नहीं है।

**निजी अनुभव**—यदि कोई आदमी आकर चन्द आदमियों का नाम लिख कर देवें और पूँछे कि इस जमात में चोर है कि नहीं यदि है तो कौन चोर है। इस नियत से जायचा रमल बनावें खाना १ व १० के गुणा से एक शक्ल बनावें यदि हासिल शक्ल शुभ दाखिल या अशुभ दाखिल हो अथवा हासिल शक्ल ≡ आवे तो चोर इन्हीं आदमियों में है। अब प्रत्येक व्यक्ति का नाम लिखकर उसी के नाम का जायचा रमल इष्टदेव का ध्यान करके बनावे। यदि खाना १५ म शक्ल ≡ आ जावे तो यह जरूर चोर है यदि अन्य शक्ल हो तो चोर नहीं है। इसी प्रकार प्रत्येक नाम पर जायचा बनाते जावे। जिस जायचा के खाना १५ (मीजान) में शक्ल ≡ आवे वही चोर है।

**प्रश्न**—यदि कोई ँछै कितने आदमियों ने मिलकर चोरी की है ?

**उत्तर**—जायचा बनाकर खाना ७ को देखैं कि इस शक्ल की तकरार कितनी जगह पर है। जितनी जगह पर तकरार हो इतने ही व्यक्तियों ने मिलकर चोरी की है अथवा खाना ७ में यदि ≐ या ≡ हो तो १ यदि ≑ ≐ ÷ ≡ ≒ ≟ हो तो यदि २ यदि ÷ ⫶ ÷ ⁞ हो तो ३ यदि ⁞ हो तो ४ यदि ≐ हो तो सात व्यक्तियों ने मिलकर चोरी की है।

**प्रश्न**—यदि कोई पूँछे मेरी मुट्ठी में क्या है ?

**उत्तर**—भगवान इष्टदेव का आवाहन ध्यान करके पासा डालकर

जायचा रमल बनावे। प्रथम इस बात का निर्णय रमलज्ञ को करना चाहिये कि मुट्ठी में वस्तु है कि नहीं यदि जायचा में शक्ल $\begin{smallmatrix}-\\ \cdot\\ -\\ -\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}\cdot\\ -\\ \cdot\\ \cdot\end{smallmatrix}$ होवे तो मुट्ठी में अवश्य कुछ वस्तु है यदि इन दोनों में एक भी शक्ल न होवे तो खाली मुट्ठी कहना चाहिए यदि यह दोनों शक्ल $\begin{smallmatrix}-\\ \cdot\\ -\\ -\end{smallmatrix}$ व $\begin{smallmatrix}\cdot\\ -\\ \cdot\\ \cdot\end{smallmatrix}$ प्रस्तार में कई जगह हो तो मुट्ठी में कई एक वस्तुयें कहना चाहिये। अथवा चौथे व छठे घर में शक्ल दाखिल या साबित होवे तो भी मुट्ठी में वस्तु है कहना चाहिये।

किस मुट्ठी में वस्तु है ? इस बात के जानने के लिये यदि प्रस्तार की पाँचवी छठीं नवीं इनमें दाखिल या साबित हो तो दाहिनी मुट्ठी में वस्तु है। यदि खारिज अथवा मुनकलिक शक्ल हो तो बायें मुट्ठी में वस्तु बताना चाहिये। यदि अन्यान्य विरोधी शक्लें हों तो बलवान शक्ल से फल कहना चाहिये अथवा खाना ५ व ६ की शक्ल को गुणा करके देखें यदि हासिल शक्ल पूर्वोक्त रीत्यानुसार दाखिल या साबित हो तो दाहिनी मुट्ठी में यदि खारिज या मुनकलिब हो तो बाई मुट्ठी में वस्तु कहना चाहिये।

फिर जायचा की पहली शक्ल से कठिनता कोमलता का हाल बतायें दूसरी से वर्णता तीसरी से स्वरूप चौथी से दीर्घपना गोलाई व लम्बाई कहें पाँचवीं से मोल छठी से तोल भारीपन आदि कहे सातवीं से पाषाणयोग तथा मिलावट कहनी और सातवी शक्ल जहाँ पुनरुक्त होवे उससे सख्या कहना चाहिये आठवीं से वस्त्र का शत्रुपन जाने नवीं से खंडित तथा पूर्णता जाने दशवीं शक्ल से स्वाद विचारे ग्यारहवीं से निर्माण आदि बारहवीं के घर से धातु मूलादि का विचार करें और जो वृत्तान्त जिस शक्ल से करै उससे सातवीं शक्ल से उसकी सम्भावना के बल से उस पदार्थ को करें।

यदि उन दोनों शक्लों करके पदार्थ का विरोध भाव होने से असम्भव नहीं होवे तब उन दोनों शक्ल की गुणा से एक शक्ल बनावे और उससे फल कहें। अब शक्लों के योग से कुछ विशेष हाल पूर्वाचार्य

की सम्मति से कहते हैं—यदि दूसरे घर की अग्नि शक्ल आवे तो कान्ति युक्त वस्तु कहना यदि प्रथम घर की शक्ल जलतत्व होय तो रूई का भरा गेंद आदि हल्की कोमल वस्तु कहैं यदि वायु तत्व की शक्ल प्रथम घर में होय तो मुट्ठी में दृढ़ ( कड़ी ) वस्तु बताना यदि तीसरे घर में बयाज शक्ल होवे तो वस्तु पोली कहैं यदि खाना ३ या नवें घर में शक्ल ⁝ होवें तो छिद्र वाली वस्तु कहना अथवा अनेक प्रकार के चित्रों से युक्त या सूक्ष्म चिन्हों से युक्त कहना यदि ÷ या ÷ शक्ल होवे तो तिकोनी छिद्र वाली वस्तु कहना यदि तीसरे व पाँचवें घर में शक्ल ( ≑ ) शवल होय तो बल्कल वस्त्र से लपेटी वस्तु कहैं यदि नवें घर की वायु की शक्ल होवे तो वस्तु रोमावली कहैं यदि खाना १४ में शक्ल ≑ होय तो अग्नि से जली हुई वस्तु कहना। अब हम उन वस्तुओं के लक्षण कहते हैं—

≐ ⩧ ⁝ ≡ ≡ ÷ यह शक्ल मृदु अर्थात् कोमल कहलाता है और शक्ल ÷ ⁝ ≡ ≡ ≐ ⩧ इन शक्लों के होने से कड़ी वस्तु कहैं और शक्ल ⩧ ≑ ≐ ⁝ यह चार शक्ल दोनों में सम्मिलित है अर्थात् कोमल कठोर दोनों हैं शक्ल ≐ पीली या लाल या केसरिया रंग है और शक्ल ⁝ पीली और श्याम है शक्ल ÷ श्वेत श्याम युक्त ≐ श्वेत कृष्ण है ⩧ का रंग काला है ≑ श्याय वर्ण है ≡ श्वेत वर्ण है ≡ का गेहुँवाँ रंग है हुमरा ≡ का लाल वर्ण है ≐ का पीला रंग है ≡ का हरा रंग है। ⩧ का श्याम रंग है शक्ल ÷ का पीला रंग है और श्वेत श्याम इन दोनों रंगों से युक्त है ÷ शक्ल पीला हरा श्याम रंग का है और शक्ल ⁝ का हरा श्वेत श्याम युक्त है।

## अब शक्लों की आकृति लिखते हैं—

शक्ल ≐ लम्बाई युक्त ÷ गोल ≐ लम्बा ≡ चौखुंटा लम्बाई युक्त ÷ गोल ≑ गोल ⩧ कोण रहित और हुमरा ( ≐ ) का रूप गोल ≡ का दीर्घ विस्तार ≐ का रूप दीर्घ तथा ÷ का विस्तीर्ण

दीर्घ और $\underline{\vdots}$ का लम्बा ÷ का विस्तीर्ण दीर्घ और शक्ल $\overline{\vdots}$ का रूप गोल तथा $\overline{\underline{\cdot}}$ का भी गोल और शक्ल ⁞ का विस्तीर्ण दीर्घ रूप शास्त्र कारों ने कहा है।

$\dot{\equiv}$ $\dot{\div}$ $\underline{\vdots}$ यह शक्लें हों तो नगर या बन की वस्तु समझें यदि ⁞ हो तो खेत में तथा मार्ग में रहने वाली वस्तु समझें ÷ ≡ $\underset{\cdot}{\equiv}$ हो तो सोना चाँदी दुकान में रहने वाली वस्तु यदि $\overline{\underline{\cdot}}$ शक्ल हो तो विचित्र दुकानों में रहने वाली वस्तु कहैं यदि शक्ल $\underline{\div}$ हो तो ग्राम की वस्तु जानिये।

इति शुभम् रमल-शास्त्र समाप्त

## आवश्यक सूचना

सबसे उत्तम रीति प्रश्नोत्तर निकालने की तो अष्टधातु के बनाये हुये पाँसों द्वारा ही है। यह पाँसे शुभ मुहूर्त में ढाले हुये निम्नलिखित पता से ही मँगावें।

रमल मिलने का पता—

**रमलाचार्य आश्रम, पो० कमलापुर, जि० सीतापुर।**

---

मुद्रक—सूरज प्रसाद गुप्त, ज्वाला प्रिंटिंग वर्क्स, त्रिलोचनघाट, वाराणसी।